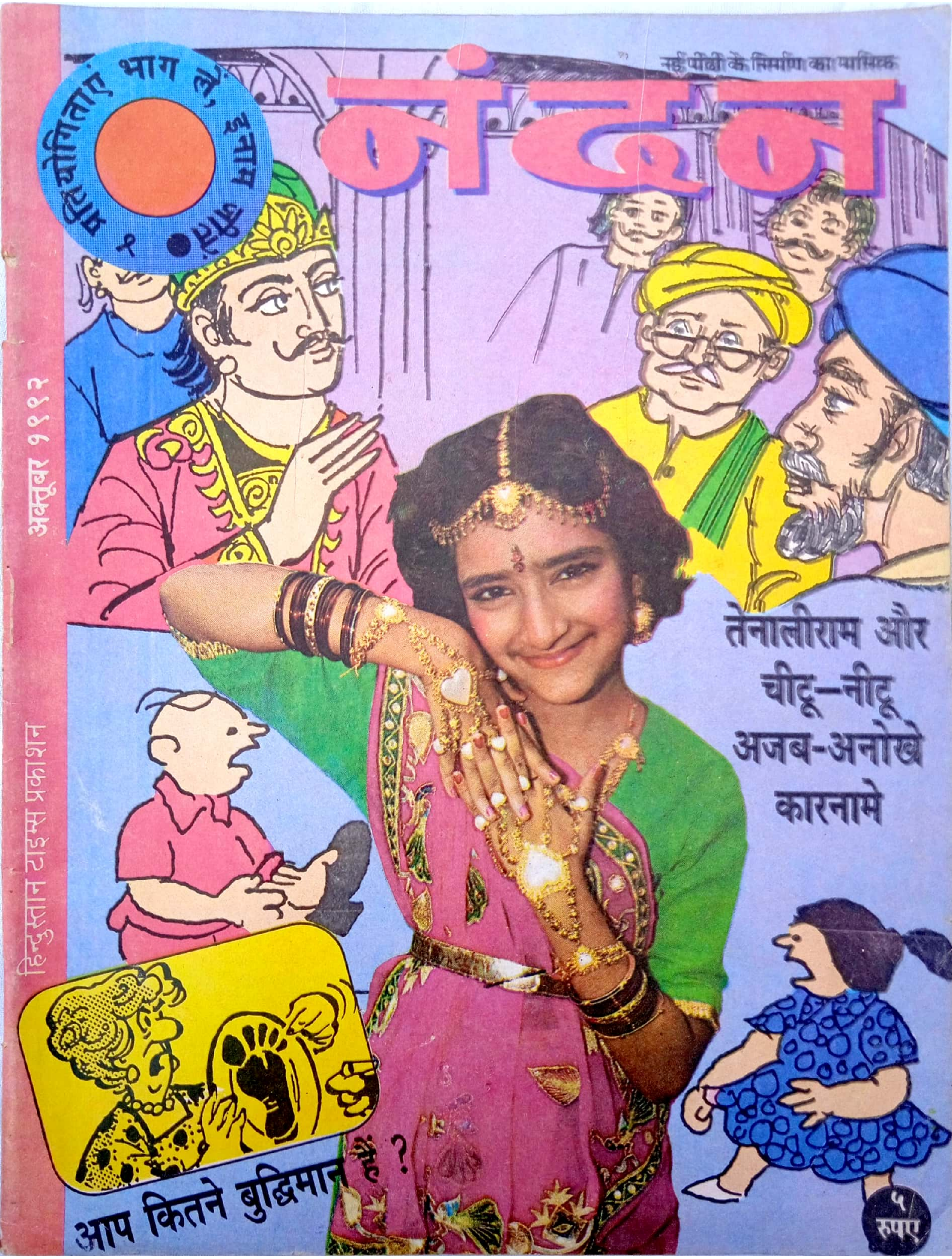

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

रकम के दावे की कार्यविधि संबंधी परेशानी और विलम्ब से बचने के लिए बैंकों में नामांकन सुविधा

क्या आप जानते हैं कि सुरक्षित जमा लॉकरों तथा बैंकों में सुरक्षित अभिरक्षा में रखी वस्तुओं के लिए भी नामांकन सुविधा उपलब्ध है?

नामांकन सुविधा निम्नलिखित व्यक्तियों के लिए उपलब्ध है :

- ☐ स्वयं अपने नाम में अथवा दो या दो से अधिक व्यक्तियों के संयुक्त नामों में जमा खाता रखने वाले बैंक खाताधारी
- ☐ बैंक के ऐसे ग्राहक जिन्होंने बैंक में अकेले अपने नाम में सुरक्षित अभिरक्षा में वस्तुएं जमा कर रखी हैं
- ☐ बैंक के ऐसे ग्राहक जिन्होंने स्वयं अपने नाम में अथवा दो या दो से अधिक व्यक्तियों के संयुक्त नामों में सुरक्षित लॉकर किराये पर ले रखा है
- ☐ किसी नाबालिग के अकेले नाम वाले जमा खाते अथवा सुरक्षित अभिरक्षा या सुरक्षित लॉकरों में रखी वस्तुओं के लिए नाबालिग की ओर से विधिक रूप से परिचालन के लिए पात्र व्यक्ति.

इस सुविधा का लाभ लेने के लिए कृपया अपनी बैंक शाखा से सम्पर्क करें.

भारतीय बैंक संघ
अपने सदस्य बैंकों की ओर से

SMA/IBA/92/HIN

Scanned with CamScanner

बच्चों को इंटैलीजैंट बनाने वाला अद्भुत नॉलिज बैंक

*बच्चों के मस्तिष्क में घुमड़ने वाले हजारों अनबूझे '**क्यों और कैसे**' किस्म के प्रश्नों के उत्तर बताने वाला एक अनूठा प्रकाशन*

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक

(छः खण्डों मे)

गिफ्ट बॉक्स पैकिंग में

विशेषताए

- 50 लाख से भी अधिक पाठकों की पसंद
- विद्यालयों में पुरस्कार के रूप में वितरित
- प्रत्येक खण्ड अपने आप में संपूर्ण
- सभी लाइब्रेरियों की पसंद
- प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं द्वारा प्रशंसित

....विषय-वस्तु, साज-सज्जा और छपाई की दृष्टि से निश्चय ही ये पुस्तकें बालकों के ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होंगी....
डॉ. सैयद असद अली, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

....मैं इन पुस्तकों को बाल-साहित्य के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व योगदान मानता हूं।
प्रो. बी. गांगुली, अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित विभाग, एन.सी.इ.आर.टी. नई दिल्ली।

आधारभूत विषय

• पृथ्वी एवं ब्रह्मांड • आधुनिक विज्ञान, वनस्पति एवं पशु-पक्षी जगत •आविष्कार एवं खोजें •खेल एवं खिलाड़ी •आश्चर्य एवं रहस्य • सामान्य ज्ञान •मानव शरीर • भौतिक-रसायन एवं जीव विज्ञान आदि।

बच्चे के मस्तिष्क के लिए एक टॉनिक

जैसे ही बच्चा सोचना-समझना शुरू करता है उसमें अपने आसपास की दुनिया के बारे में जानने की जिज्ञासा बढ़ती जाती है। उसके मस्तिष्क में हजारों '**क्यों और कैसे**' किस्म के प्रश्न घुमड़ने लगते हैं। यदि उसे उचित समय पर इन प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं तो उसका मानसिक विकास तेजी से होता है। इसके विपरीत उचित समय पर प्रश्नों के उत्तर न मिलने पर वह विषयों को समझने के बजाय उन्हें रटने लगता है। इससे उसका मानसिक विकास रुक जाता है और जीवन में भी पिछड़ जाता है।

प्रश्नों में से कुछ की झलक

• महिलाओं की दाढ़ी क्यों नहीं होती? • शनि के छल्ले क्या हैं? • क्या अन्य ग्रहों से लोग पृथ्वी पर आते हैं? • क्या संसार में नरभक्षी लोग भी रहते हैं? • आकाश नीला क्यों दिखाई देता है? • हाइड्रोजन बम क्या है? • हमारे मुहांसे क्यों हो जाते हैं? • टेस्ट ट्यूब बेबी क्या है? • मिस्र के पिरामिड क्यों बनाये गये? • हमें सपने क्यों दिखाई देते हैं? • मौत की घाटी क्या है?

6 खण्डों की इस श्रृंखला में हैं...
- 1300 से भी अधिक बड़े आकार के पृष्ठ
- 1100 से अधिक चित्र
- 5,00,000 से भी अधिक शब्दों की पाठ्य-सामग्री
- 1050 जिज्ञासा भरे प्रश्नों के सुबोध उत्तर

अंग्रेजी तथा 8 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित

मूल्य : पेपर बैक 32/-, सजिल्द लायब्रेरी संस्करण : 48/-
डाक खर्च : 6/- प्रत्येक, पूरा सैट रु 192/- **(डाक खर्च माफ)**

अपने निकट के या रेलवे तथा बस-अड्डों पर स्थित बुक-स्टॉलों से प्राप्त करें। न मिलने पर वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पताः

पुस्तक महल } खारी बावली, दिल्ली-110006 फोन : 239314, 2911979
10 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002 फोन : 3268292-93, 3279900

शाखाएं:•खेमकाहाउस,प्रथममंजिल,अशोकराजपथ,मुरादपुर,पटना-4 फोन:653644•22/2,मिशनरोड,बंगलौर-27 फोन:234025

Scanned with CamScanner

आओ बात करें

हनुमान सीता की खोज में लंका पहुंचे । वहां अशोक वाटिका में सीता से मिले । उन्हें राम की मुद्रिका दी । ढाढस बंधाया । विदा लेकर चलने लगे, तो वाटिका की दीवार पर बैठ गए । सोचने लगे—'जैसा आया, वैसा ही चुपके से लौट जाऊं, यह ठीक नहीं । कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे रावण और दूसरे राक्षसों के मन में भय पैदा हो ।'

हनुमान ने अपना शरीर बड़ा कर लिया । वाटिका में विध्वंस करने लगे । वृक्ष उखाड़ डाले । वहां तैनात राक्षसियां रावण के पास पहुंचीं ।

वाटिका का बुरा हाल हुआ, यह जानकर रावण दुखी हो गया । फिर उसने कई योद्धाओं को भेजा । कहा—"उस जानवर को मार डालो या पकड़कर ले आओ ।"

वीर राक्षसों ने देखा—एक वानर द्वार पर बैठा है । हनुमान ने लोहे का एक स्तम्भ उखाड़ लिया । उन पर प्रहार करने लगे । वे सब धूल चाटने लगे । रावण ने जांबुमाली को भेजा । हनुमान ने एक वृक्ष उखाड़कर उसके रथ पर दे मारा । तरुण अक्ष और दूसरे योद्धा भी हनुमान का कुछ न बिगाड़ सके । अब तो इंद्रजित को रावण ने बुलवाया । कहने लगा—"तुम्हारे सामने कोई टिक नहीं सकता । सैन्य बल से इस वानर को जीतना कठिन लगता है । तुम जैसे हो, उसे भी पराजित करो ।"

धनुष की टंकार करता हुआ वह हनुमान के पास पहुंचा । उसने हनुमान पर तेज बाणों की वर्षा शुरू कर दी । हनुमान ने अपने शरीर को पहाड़ जैसा कर लिया । वह आकाश में इधर-उधर हटकर इंद्रजित के बाणों को बेकार करने लगे । इंद्रजित ने ब्रह्मास्त्र छोड़ा और हनुमान को बांध लिया ।

राक्षस खुशी से फूले नहीं समा रहे थे । वे मोटे-मोटे रस्से लाकर हनुमान को बांधने लगे । इंद्रजित का जय-जयकार करने लगे । लेकिन अपवित्र वस्तुओं के छूने से ब्रह्मास्त्र की शक्ति क्षीण हो जाती थी । सो हनुमान के बंधन ढीले पड़ गए । किन्तु राक्षस उन्हें खींचते हुए रावण के पास ले गए ।

रावण ने अपने मंत्रियों से पूछा—"कौन है यह, कहां से आया है और किसने इसे भेजा है ?"

हनुमान ने अपने बारे में बताया—"मैं राजा सुग्रीव का दूत हूं । आपने धर्म विरुद्ध कार्य किया है । आप श्रीराम से क्षमा मांग लें ।"

रावण ने आदेश दिया—"इसे मारकर खत्म कर डालो ।" किंतु विभीषण ने सलाह दी कि दूत के प्राण लेना राज धर्म नहीं है । इस पर रावण ने कहा—"इसकी पूंछ जला दो ।"

रावण की आज्ञा पाकर राक्षसों ने पूंछ पर खूब तेल गिराया फिर आग लगा दी । आग जोरों से भड़क उठी । अचानक हनुमान ने अपने शरीर को छोटा कर लिया । बंधन से निकल आए । इसके बाद फिर पहले जैसा शरीर बढ़ा लिया । वह एक महल से दूसरे महल पर छलांग लगाने लगे । बस, सारे नगर में आग लग गई । लंका धू-धू करके जलने लगी ।

कुछ देर बाद, हनुमान ने अपनी पूंछ को समुद्र में डुबोया और आग बुझा ली । यकायक उनके मन में विचार आया—"मैंने यह कैसी मूर्खता की । यह आग अशोक वाटिका में भी फैली होगी । कहीं देवी सीता भी भस्म न हो गई हों ।"

तभी उन्हें आकाश से आवाज सुनाई दी—"सारी लंका जल रही है किंतु जहां सीता कैद हैं, वहां आग नहीं पहुंची ।"

लंका दहन का यह प्रसंग कैसा अनोखा है ! वैसे तो पूरी रामायण ही ऐसी है कि पढ़ते रहें, आनंद की गंगोत्री में गोते लगाते रहें । हर साल न जाने कितनी जगहों पर रामलीला होती है । करोड़ों लोग बार-बार उसे देखते हैं । सत्य की असत्य पर, धर्म की अधर्म पर विजय सदा ही होती आई है, होती रहेगी ।

अगला अंक उपहार विशेषांक होगा । विविध सामग्री और अधिक पृष्ठ । अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लें ।

तुम्हारे भइया

जयप्रकाश भारती

Scanned with CamScanner

नंदन

अक्तूबर '९२

वर्ष : २८ अंक : १२

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविराज ओमप्रकाश	बाबा फिर आए	८
विकाससिंह 'डब्बू'	नया मकान	१२
जयप्रभा	मेरा बाग	१४
उषा महाजन	लद गए फूल	१७
अमरनाथ शुक्ल	हार गए इंद्र	१९
मधुमालती जैन	दस के बीस	२४
चंद्रभूषण	जामुन से हवेली	२६
तकषी शिवशंकर पिल्लै	मछुआरे	२९
रवि दिवाकर	ढम ढमा ढम	४१
रमेश आजाद	बनेगा राजा	४२
सुरेश के. अंजुम	भर-भर बूंद	४४
मालती सिंह	पानी लाओ	४६
के. राधाकृष्णन अयिरूर	नहीं चाहिए धन	४७
डा. सत्येंद्र वर्मा	रथ आया	५२
अवतारसिंह जसवाल	कड़वा बना मीठा	५४
श्रीनिवास वत्स	आओ दवा दो	५७
गिरिधर योगेश्वर	पीठ पर पोता	६०
बांसुरी कौशल	फूल नदी में	६६

कविताएं

शांति अग्रवाल, रमेश कौशिक, कृष्ण शलभ, लता पंत २८

इस अंक में विशेष

हमसे दुनिया रंगबिरंगी हम धरती की शान		२२-२३
भगवान श्रीराम	चित्रमय झांकी	३३-३६
दरबार में कपड़ा	चित्र-कथा	३७-४०

स्तम्भ

एलबम ११; आप कितने बुद्धिमान हैं १६; चटपट ४८; तेनालीराम ४९; ज्ञान पहेली ५५; चीटू-नीटू ६१; पुरस्कृत कथाएं ६५; पत्र मिला ६८; पत्र-मित्र ७०

आवरण : श्यामसुंदर जोशी

एलबम : आर.के. गोयल

सहायक सम्पादक : **देवेन्द्रकुमार**

मुख्य उप-सम्पादक : **रत्नप्रकाश शील**

वरिष्ठ उप-सम्पादक : **क्षमा शर्मा**; उप-सम्पादक : **डा. चंद्रप्रकाश**; **डा. नरेन्द्रकुमार**; चित्रकार : **प्रशांत सेन**

Scanned with CamScanner

बाबा फिर आए

— कविराज ओमप्रकाश

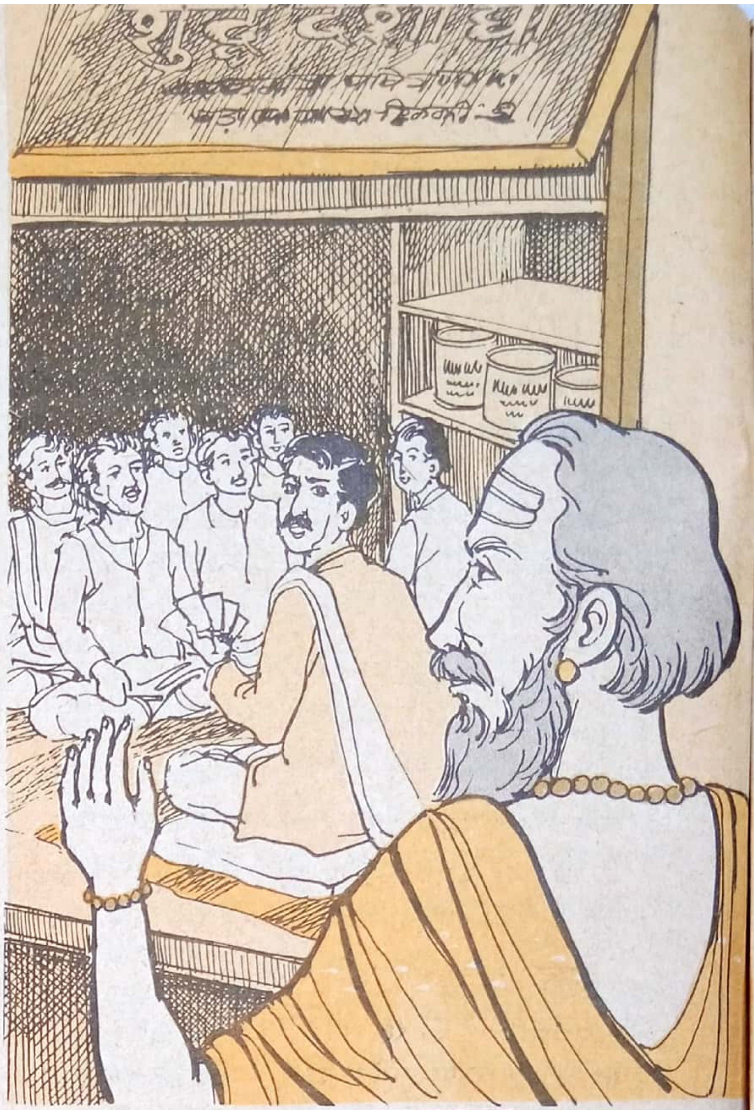

नाम था हरदयाल। शहर के बड़े बाजार में घी की दुकान थी। धंधा तो देसी घी के नाम पर होता था, पर था सब-कुछ नकली। मिलावट वाला घी बेचने से हरदयाल को खासी-अच्छी आमदनी हो रही थी।

हरदयाल के परिवार में पत्नी निर्मला और दो बच्चे थे। आठ साल का वरुण और छह साल की बेला। दोनों बच्चे फूल जैसे थे। इस बात से बिलकुल बेखबर कि उनके पिता क्या करते हैं। घर में किसी बात की कमी न थी। दो नौकर भी थे, पर निर्मला का स्वभाव हरदयाल से भिन्न था। वह कई बार कह भी देती थी— 'व्यापार ईमानदारी से भी तो हो सकता है। भला हमें कितना धन चाहिए, जो रात-दिन पैसे की धुन में रहते हो। इस लोक के साथ कभी-कभी परलोक की भी याद कर लेनी चाहिए।'

हरदयाल सुनता और मुंह बिचका देता। जैसे कहता— 'तुम्हें कुछ पता नहीं है कि दुनिया कैसे चलती है।'

दुकान पर भी दो नौकर काम करते थे। हरदयाल का काम तो बस रुपए गिनना था। सारा दिन आराम से गद्दी पर बैठा रहता। इधर कुछ समय से उसे ताश खेलने का चस्का पड़ गया था। दिन ढलते ही मित्र आ जाते। फिर ताश का खेल जमता। कभी-कभी तो घर लौटने में हरदयाल को बहुत देर हो जाती। घर पर निर्मला प्रतीक्षा करती रहती। बच्चे भी उदास हो जाते।

हरदयाल को लगता था, यही जीवन है। इसका भरपूर आनंद उठाना चाहिए। उसे रुपयों के अलावा और कुछ नजर नहीं आता था। इसी तरह दिन बीत रहे थे। एक शाम की बात, वह रोज की तरह अपने मित्रों के साथ ताश खेल रहा था। तभी एक साधु वहां आए।

साधु महाराज कुछ देर दुकान के बाहर खड़े-खड़े हरदयाल की ओर देखते रहे, पर वह अपने में मस्त-मगन बैठा रहा। सब मित्र रह-रहकर हंस पड़ते। एकाएक हरदयाल की नजर बाहर की तरफ गई, तो उसने साधु महाराज को देखा। मुंह बिचकाकर बोला— "मैं तो भिखारियों से तंग आ चुका हूं। अरे, हट्टे-कट्टे हो। मेहनत-मजूरी करके पेट क्यों नहीं भरते?"

हरदयाल की बात सुन साधु बाबा हंस पड़े। उन्होंने कहा— "मैं भिक्षुक हूं और हाथ भी फैलाता हूं। लेकिन अपने भगवान के सामने। भला, तू मुझे क्या दे सकता है? मैं तो तुझे एक काम की बात बताने आया था। कहकर चला जाऊंगा, फिर तू जाने तेरा काम।"

यह सुनकर तो हरदयाल को गुस्सा चढ़ आया। चिल्लाकर बोला— "तुम्हारी चालाकी यहां चलने वाली नहीं। कह दिया न, कुछ नहीं दूंगा। और हां, मुझे काम की बात भी नहीं सुननी है। यहां से चलते बनो।"

इस पर भी साधु बाबा गए नहीं। उन्होंने कहा— "हरदयाल, तू कुराह चल रहा है। यह तेरे लिए ठीक नहीं। अब भी समय है, संभल जा, नहीं तो पछताना पड़ेगा।" इतना कहकर साधु बाबा वहां से चले गए।

न जाने उनकी वाणी में क्या था, हरदयाल का मन बेचैन हो उठा। उसने खेल बंद किया और नौकरों से दुकान बंद करने को कहकर घर की तरफ चल दिया।

रास्ते भर साधु बाबा का स्वर उसके कानों में गूंजता रहा। घर पहुंचा, तो निर्मला बाहर खड़ी मिली। वह रो रही थी। "क्या बात है?"— हरदयाल ने हड़बड़ाकर पूछा।

—"वरुण का पता नहीं है। न जाने कहां चला गया? मैंने एक नौकर उसे ढूंढ़ने भेजा है। दूसरा आपके पास गया था। क्या पहुंचा नहीं?"

—"अरे, तो इसमें घबराने की क्या बात है? कहीं दोस्तों के साथ खेल रहा होगा। आ जाएगा।"

कहकर हरदयाल घर में चला गया। पर अंदर ही अंदर वह बेचैन हो रहा था। कुछ देर में दोनों नौकर लौट आए। वरुण कहीं न मिला। अब हरदयाल स्वयं ढूंढ़ने निकला। लेकिन उसकी समझ में न आया कि कहां जाए, किससे पूछे।

उसके घर से निकलते ही बादल गरजे, तेज बारिश होने लगी। रात के दस बज गए थे। सड़कें सुनसान थीं। वह इधर-उधर देखता हुआ चला जा रहा था। सोच रहा था— 'पुलिस में वरुण के खोने की रिपोर्ट लिखा देनी चाहिए।'

तभी बिजली कड़की। तेज रोशनी में उसे थोड़ी दूर पर वही साधु बाबा दिखाई दिए। हरदयाल को लगा— जैसे साधु बाबा ने उसे हाथ के इशारे से बुलाया हो। वह तेजी से उधर दौड़ा। पर वहां तो कोई नहीं था। बिजली फिर कड़की और अब दिखाई दिया— सड़क पर कीचड़ से लथपथ वरुण बेहोश पड़ा है।

हरदयाल ने दौड़कर वरुण को उठा लिया। उसकी आंखों से आंसू बह चले। उसने तुरंत सवारी बुलवाई और वरुण को अस्पताल ले गया। कुछ देर में निर्मला भी वहां आ पहुंची। रो-रोकर उसका बुरा हाल था। वह एक ही बात कह रही थी— 'क्या हो गया मेरे लाल को?' लेकिन इस प्रश्न का उत्तर देने वाला वरुण गहरी बेहोशी में था।

रोते हुए हरदयाल ने डाक्टर से कहा— "चाहे जितना पैसा लग जाए, पर आप मेरे बेटे को होश में ला दीजिए।" डाक्टर ने घूरकर हरदयाल की ओर देखा। फिर वहां से चला गया।

कई दिन बीत गए। वरुण को होश न आया। पति-पत्नी दोनों हर पल अस्पताल में थे। उन्होंने शहर के बड़े डाक्टरों को भी बुलाकर दिखाया। पर कोई भी वरुण की बेहोशी दूर न कर सका।

एक सुबह जब हरदयाल अस्पताल में ही था, तो घर से नौकर दौड़ा-दौड़ा आया। बोला— "मालिक, घर में आग लग गई है। जल्दी चलिए।"

यह सुनकर हरदयाल और भी परेशान हो उठा।

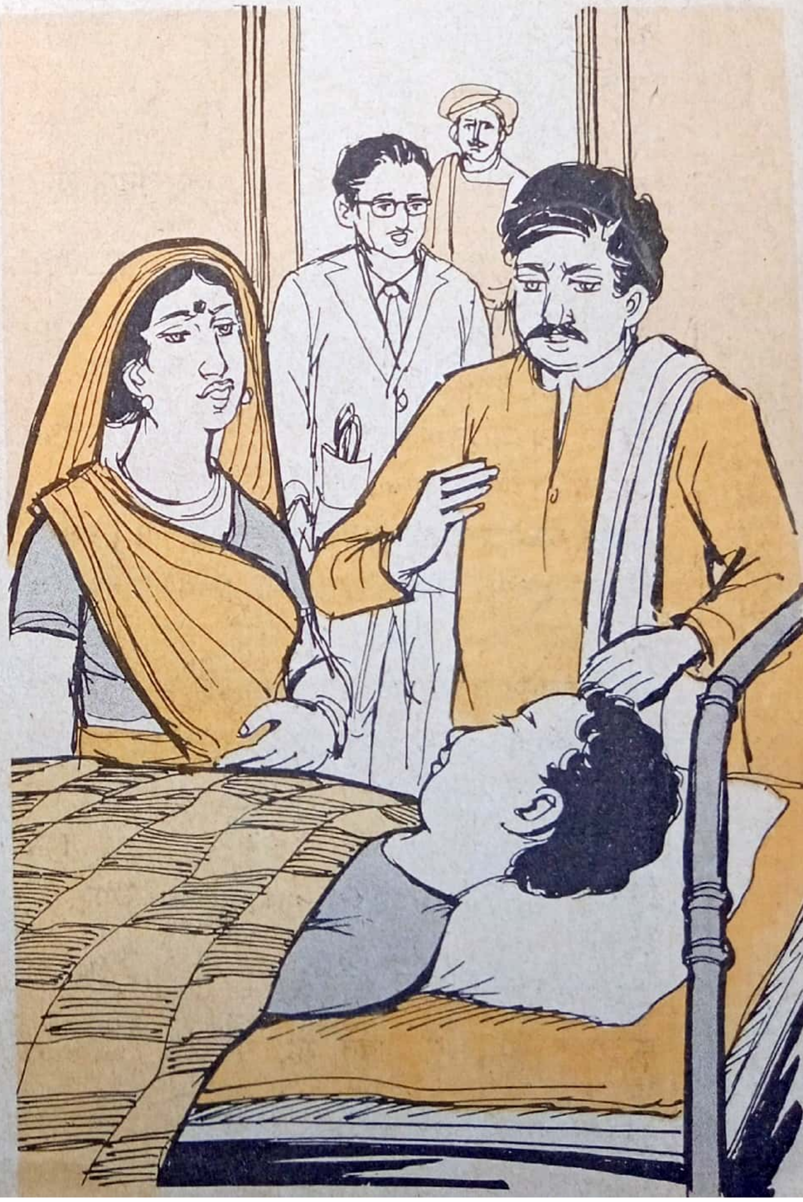

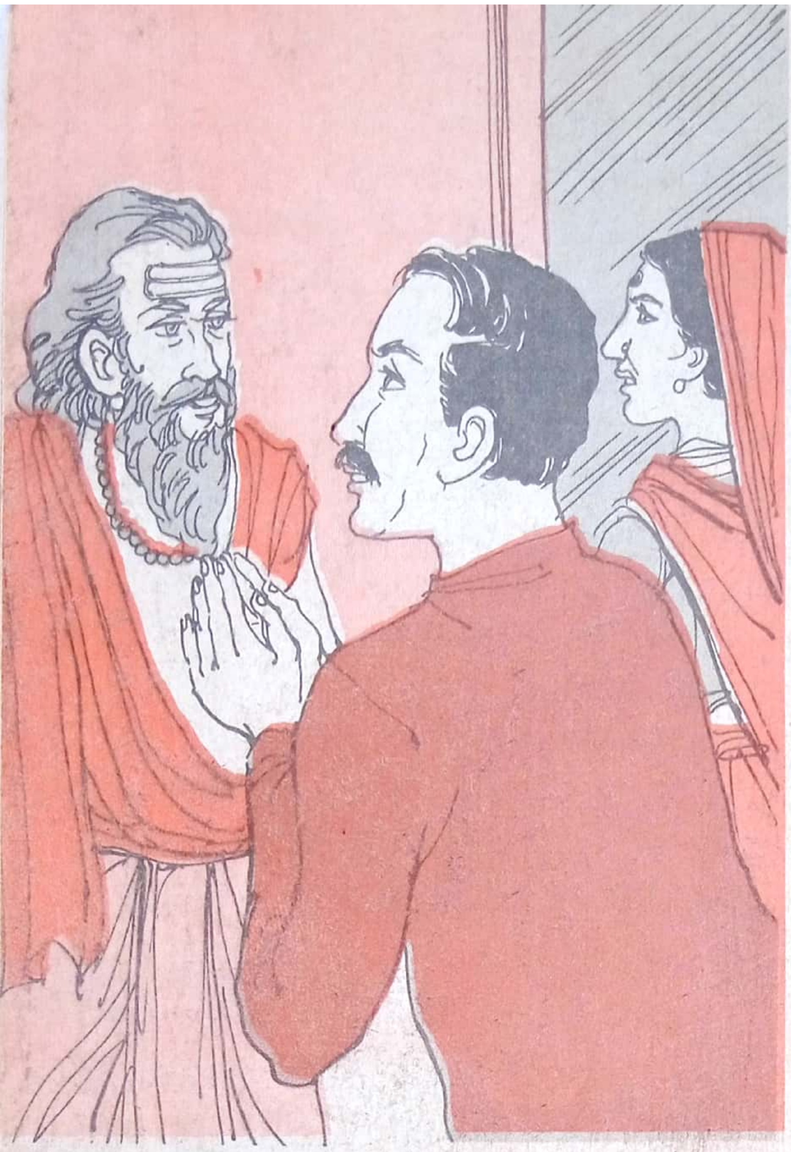

नौकर के साथ घर पहुंचा। शानदार हवेली आग की लपटों में घिर गई थी। देखते-देखते सब कुछ जलकर राख हो गया। हवेली में रखा कोई भी सामान नहीं बचाया जा सका। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि आग कैसे लगी ?

वरुण की बीमारी के कारण हरदयाल दुकान पर भी नहीं जा सका था। कारोबार ठप हो गया था। पता नहीं, उसके किस दुश्मन ने खबर उड़ा दी— 'हरदयाल असली के नाम पर नकली घी का व्यापार करता था।'

दो महीने बीतते-बीतते हरदयाल की आर्थिक स्थिति बहुत बिगड़ गई। दूसरी तरफ वरुण की हालत में जरा भी सुधार दिखाई नहीं दिया।

एक शाम पति-पत्नी वरुण के पलंग के पास उदास बैठे यही चर्चा कर रहे थे। निर्मला रोए जा रही थी। हरदयाल बेहद परेशान था।

एकाएक उसने देखा — एक साधु कमरे में आए। उन्होंने कहा— "हरदयाल, मुझे पहचाना ?"

हरदयाल उन्हें तुरंत पहचान गया। उसकी आंखों के सामने उस दिन का दृश्य तैर गया। उसने तुरंत झुककर साधु के पैर पकड़ लिए। रोते हुए बोला— "हम तो बरबाद हो गए बाबा।"

साधु ने उसके सिर पर हाथ रख दिया। फिर बढ़कर बेहोश वरुण के पास जा खड़े हुए। अपनी झोली में से दो सफेद फूल निकाले और वरुण की बंद आंखों पर रख दिए। बोले— "यह तेरा अहंकार था जो वरुण को कष्ट दे रहा था। अब चिंता न कर, यह जल्दी ठीक हो जाएगा। मैं फिर आऊंगा।" कहकर साधु चलने लगे, तो पति-पत्नी उनके पैरों से लिपट गए— "हम आपको नहीं जाने देंगे बाबा। अपराध क्षमा कर दीजिए।"

"मैं फिर आऊंगा।"— यह स्वर सुनाई पड़ा। हरदयाल और उसकी पत्नी ने देखा, बाबा वहां नहीं थे। फिर उन्होंने घूमकर पलंग पर नजर डाली, तो चौंक पड़े— वरुण की बंद आंखें खुल गई थीं। वह उनकी ओर देख रहा था।

"मेरा बेटा, मेरा लाल !"— कहती हुई निर्मला बच्चे से लिपट गई। बात की बात में डाक्टर वहां आ गए। सब हैरान थे कि यह चमत्कार कैसे हुआ।

उस दिन के बाद से वरुण की हालत में सुधार होने लगा। एक सप्ताह बाद ही वह स्वस्थ होकर घर लौट आया। उसे देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि यह बच्चा इतने दिनों तक बेहोश रहा था।

उसके बाद से हरदयाल का जीवन ही बदल गया। पर साधु फिर कभी दिखाई न दिए। जब वह निर्मला से इस बात का जिक्र करता, तो कहती— "उन्होंने कहा था न, वह आएंगे। तुम प्रतीक्षा करो, मुझे पूरा विश्वास है, हमें उनके दर्शन अवश्य होंगे।"

यह सुनकर हरदयाल आंखें बंदकर सिर झुका लेता। उसकी आंखों में साधु बाबा का चेहरा घूम जाता। कानों में उनके शब्द गूंजने लगते। मन श्रद्धा से भर उठता।

नंदन एलबम : १०५

भगवान विष्णु-

विराट रूप

Scanned with CamScanner

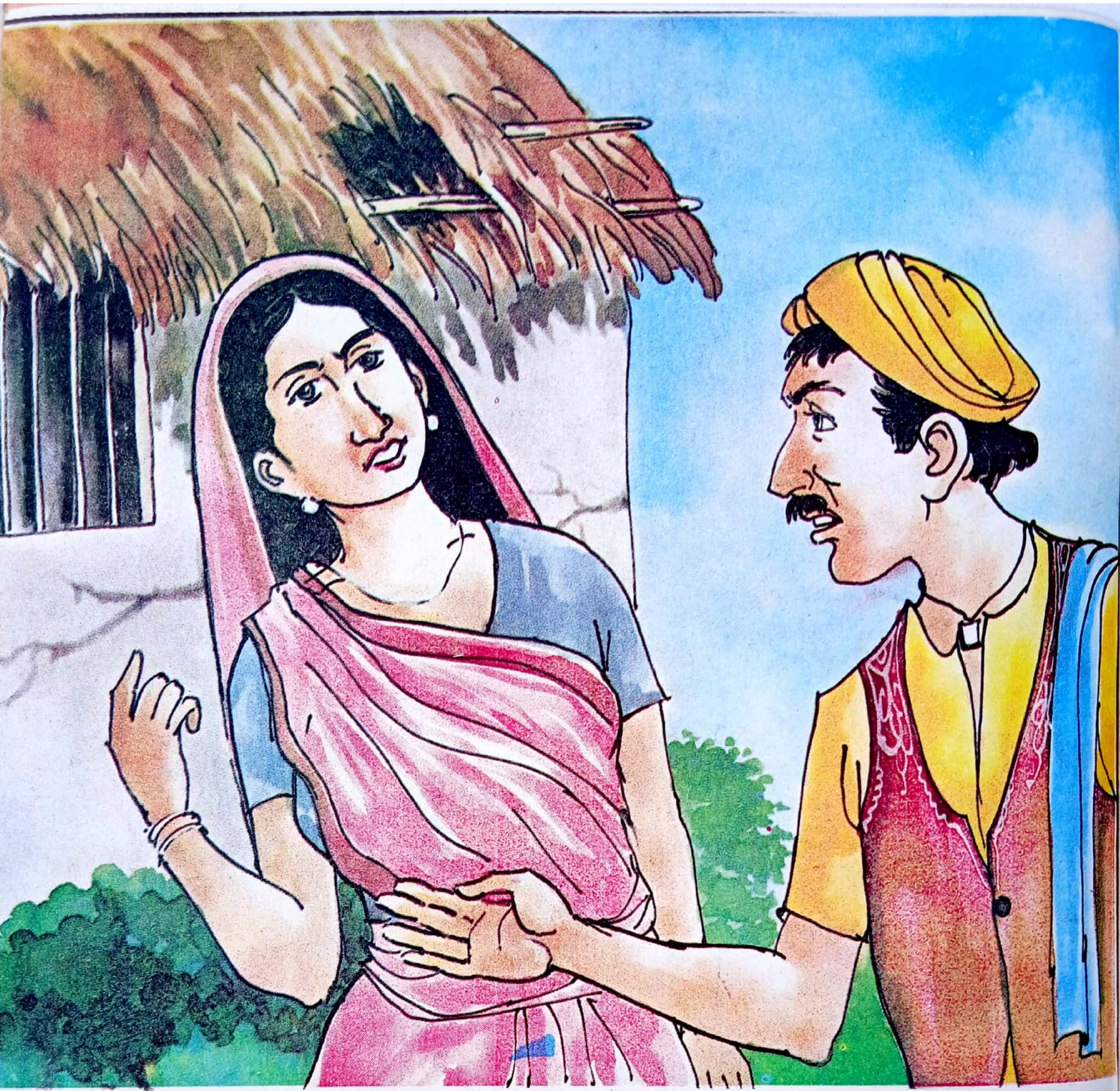

नया मकान

— विकाससिंह 'डब्बू'

वैशाली नगर में एक नाई था। वह बहुत चतुर और बुद्धिमान था। वह राजा के बाल छांटता, दाढ़ी बनाता। राजा उसे पसंद भी बहुत करते थे। लेकिन नाई राजा से कभी कुछ मांगकर अपने को छोटा नहीं बनाना चाहता था। इसलिए उसकी हालत ज्यादा अच्छी नहीं थी।

नाई का घर बहुत पुराना हो गया था। इधर-उधर से टूटकर गिरने लगा था। मरम्मत कराने के लिए पैसा उसके पास नहीं। वर्षा के समय तो घर की हालत और भी बिगड़ जाती थी। तब अक्सर नाई की पत्नी खीजकर कहती— "इस घर में आदमी तो क्या, जानवर भी नहीं रह सकता। कब से कह रही हूं, राजा से कहो। पर मेरी कोई सुने तब न ! राजा तुमसे कितना स्नेह करते हैं। तुम उनसे दुनिया भर की बातें करते हो, लेकिन इतनी छोटी-सी बात उनसे नहीं कह पा रहे हो ? वे तुम्हें एक नया मकान ही दान में दे देंगे।"

Scanned with CamScanner

उस्तरे में धार देते हुए नाई भी बिदक पड़ता— "राजा से क्यों कहूंगा ? मैं राजा से अपनी सुविधा के लिए कुछ भी कहने से रहा।"

उसकी पत्नी झट नहले पर दहला जड़ती— "तो क्या इस टूटे घर में ही जिंदगी बितानी पड़ेगी ?"

नाई की आवाज तब धीमी हो जाती— "ऐसा क्यों कहती हो भाग्यवान। लेकिन मैं करूं क्या ? राजा से मुझे कुछ मांगते हुए शर्म आती है। हां, कोई न कोई तरकीब निकालनी पड़ेगी।"

नाई मौके की तलाश में था और वह मौका जल्दी ही मिल गया।

एक दिन राजा को प्रसन्न देखकर उसने बात की शुरुआत की— "महाराज, यदि इजाजत हो तो मैं आज आपसे एक अनुरोध करूं ?"

"अवश्य।"— राजा मुसकराते हुए बोले।

नाई ने झट अनुरोध किया— "महाराज, मैं बहुत दिनों से राजमहल में काम कर रहा हूं। लेकिन मुझे कभी आपका स्वागत करने का मौका नहीं मिला। यदि आप कृपा कर मेरे घर पधारने का कष्ट करें, तो मैं धन्य हो जाऊंगा।"

राजा हंस पड़े— "इसमें कौन-सी बड़ी बात है ? मैं कल ही तुम्हारे घर आ जाऊंगा।"

नाई बेहद खुश था।

शाम को घर लौटकर नाई ने आसपास के लोगों से बांस, लकड़ी आदि मांगकर घर के ठीक सामने एक बहुत ऊंचा मचान बनाया। लोगों के पूछने पर, उसने हंसकर इतना ही जवाब दिया— "राजा के स्वागत के लिए मंच बना रहा हूं।"

मुहल्ले के लोग तब और आश्चर्य चकित रह गए, जब नाई ने एक बहुत बड़ी सीढ़ी मंच पर लगा दी।

दूसरे दिन सुबह जब राजा अपने दो अंगरक्षकों के साथ नाई के घर पहुंचे, तो नाई ने राजा को प्रणाम कर, मंच की ओर इशारा किया— "महाराज की जय हो। सीढ़ी से ऊपर चढ़कर इस गरीब के घर को धन्य कीजिए।"

इतना ऊंचा मंच देखकर राजा चक्कर में पड़ गए। अंगरक्षक ने गरजते हुए कहा— "अजीब बात है। महाराज को इतने ऊंचे मंच पर चढ़ने के लिए कह रहे हो ?"

राजा ने हंसकर पूछा— "नाई, तुमने तो मुझे अपने घर पर आने के लिए कहा था।"

हाथ जोड़कर नाई ने कहा— "महाराज, कुछ दिन पहले हुई बरसात का पानी आज तक मेरे घर में जमा है। वहां तो आपके बैठने भर को भी सूखी जगह नहीं है। इसलिए मैंने सोचा, आप इसी मचान पर अपने चरणों की धूल देने का कष्ट करें।"

राजा झट समझ गए सारी बात। थोड़ा हंसकर बोले— "मैंने तुम्हारी बात समझ ली। इधर आओ। तुमसे कुछ बातें करनी है।"

नाई पास आया, तो राजा ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा— "तुम्हारे दिमाग का कोई जवाब नहीं। तुम्हें घर की मरम्मत करवाने की कोई जरूरत नहीं है। हम तुम्हारे लिए एक नया मकान बनवा देंगे।"

बस फिर क्या था ! सप्ताह भर के बाद ही नाई बीवी-बच्चों के साथ नए मकान में था। नाइन खुशी से बोल रही थी— "नए मकान में रहने का सुख ही कुछ और है।"

"और यदि वह मकान बिना मांगे ही मिल जाए, तो बात ही कुछ और होती है।"— कहते हुए नाई मन ही मन मुसकरा दिया। ●

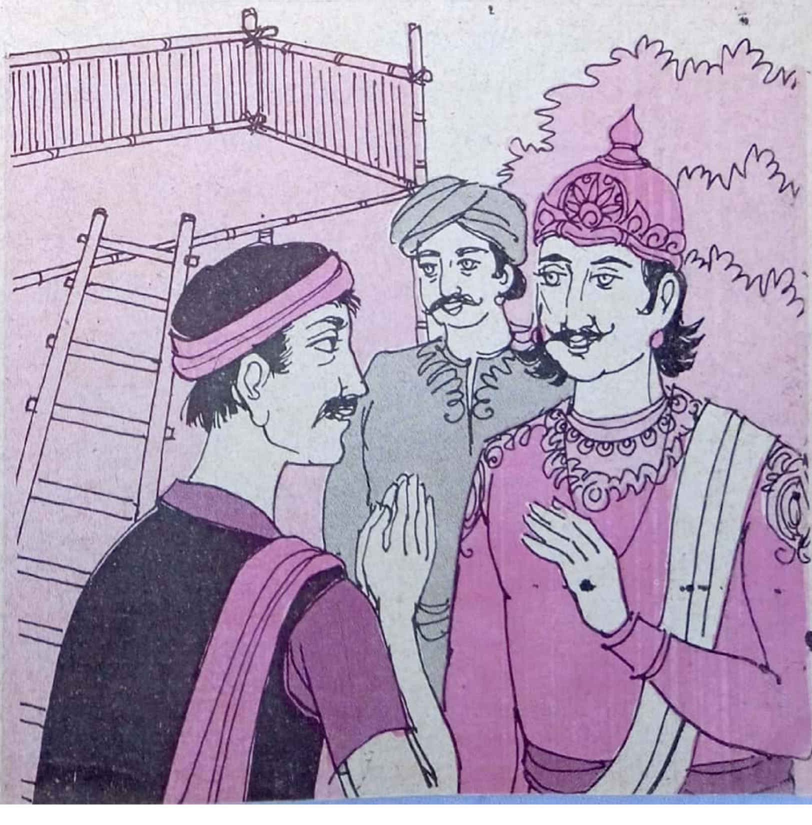

Scanned with CamScanner

मेरा बाग

—जयप्रभा

एक थी लड़की। नाम था शकुन। जहां वह रहती थी, वहां एक सुंदर बाग था— दूर-दूर तक फैला हुआ। कोई भी मौसम हो, उस बाग में हरियाली छाई रहती। इतनी तरह के रंग-बिरंगे फूल खिलते कि गिनती करना कठिन।

बाग की देखभाल के लिए नौकर-चाकर थे। वहां लम्बे-लम्बे पेड़ थे, तो तरह-तरह की झाड़ियां भी थीं। खट्टे-मीठे और रसीले फल भी खूब लगते। छोटे-छोटे तालाब और फव्वारे वहां की रौनक बढ़ाया करते थे। शकुन दिन भर बाग में चहकती, उछलती-कूदती और खेलती। कभी वह किसी खरगोश के पीछे दौड़ती, तो कभी किसी पौधे को सींचने लगती। वह हर दिन उस हरी-भरी दुनिया में खोई रहती।

एक दिन एक साधु महाराज वहां आए। शकुन ने उनकी अच्छी आवभगत की। मीठे-मीठे फल खिलाए, ठंडा-ठंडा जल पिलाया। साधु महाराज बोले— "बिटिया, मैं बहुत बरस बाद यहां आया हूं। जब तुम्हारा जन्म हुआ था, तब भी मैं आया था। मैंने तुम्हारी मां से कहा था कि एक वरदान तुम्हें दूंगा। आज तुम वह वरदान मांग सकती हो।"

शकुन कुछ सोचने लगी। तनिक रुककर साधु बोले—"तुम चाहो तो धन मांग लो, राजमहल मांग लो। तुम्हारी इच्छा हो, राजरानी बन जाओ या जादूगरनी। सोना-चांदी, हीरे-मोती या और भी कुछ मांग सकती हो। पर एक बात का ध्यान रखना—केवल एक इच्छा ही पूरी होगी। पहली बार ही ठीक से सोच लो जिससे दोबारा न मांगना पड़े।"

शकुन सोचती रही, सोचती रही, फिर तुरंत बोल उठी—"मैं चाहती हूं, जीवन भर इसी सुंदर बाग में रहूं।"

"बस, इतनी-सी बात! यह तुम क्या मांग रही हो! आज तो तुम इस बाग में हंसी-खुशी से रहती हो, लेकिन बड़ी होने पर शायद तुम्हें यह जगह ठीक न लगे। और सोच लो..."—साधु महाराज बोले।

"नहीं बाबा, मेरी और कोई इच्छा नहीं। मैं तो इतना ही चाहती हूं।" —शकुन ने कहा।

"ठीक है, ऐसा ही होगा।"—साधु महाराज बोले। फिर शकुन से विदा ली और अपनी राह चले गए।

समय बीतता गया, बीतता गया। शकुन बड़ी होती गई। वह सुंदर, सलोनी और आकर्षक थी। कोई न कोई युवक उधर से गुजरता, शकुन को देखता। जब भी कोई शकुन से ब्याह करने की बात चलाता, वह टका-सा उत्तर दे देती—"मुझे यह बाग बहुत प्यारा

Scanned with CamScanner

है। यहां के पेड़-पौधे और पक्षी मेरे संगी-साथी हैं। मैं यह सब छोड़कर कहीं नहीं जा सकती।''

इसी तरह कई युवक आए और निराश होकर चले गए। सब यही सोचते—'अरे, कैसी अजब लड़की है यह।'

एक दिन दूर देश का एक राजकुमार वहां आया। शकुन ने देखा— पीपल के पेड़ के पास वह खड़ा है। लम्बा कद, छरहरा शरीर। नाक-नक्श भी बढ़िया। इससे पहले उसने राजकुमार को नहीं देखा था। देखते ही, वह उसे बहुत अच्छा लगा। राजकुमार शकुन के निकट आया। बोला—''मैं दूर देश का रहने वाला हूं। क्या तुम मेरे साथ ब्याह करोगी और मेरे साथ चलोगी?''

शकुन भी उससे विवाह करना चाहती थी। पर वह बोली—''ऐसा हो नहीं सकता। मैं चाहती हूं कि विवाह कर लूं, पर मुझे वरदान मिला है कि जीवन भर इसी बगीचे में रहूं।''

राजकुमार ने कहा—''चलो, हम साथ-साथ चलते हैं। मैं तुम्हारा साथ नहीं छोड़ना चाहता।'' वह शकुन को लेकर चल दिया। चलते-चलते वे एक दरवाजे से बाग के बाहर निकल आए। किसी ने उन्हें नहीं रोका-टोका। कुछ भी नहीं हुआ।

शकुन सोचने लगी—'शायद साधु ने मुझे ही बहका दिया होगा।'

शहर में जाकर उन्होंने उसी दिन विवाह कर लिया। फिर राजकुमार अपने देश को रवाना हो गया। शकुन खुश थी, लेकिन बीच-बीच में रह-रहकर उसका मन उदास हो उठता। पेड़-पौधों की याद आते ही उसकी आंखें गीली हो जातीं।

लंबी यात्रा के बाद राजकुमार अपनी राजधानी में पहुंचा। वहां आलीशान महल था—सजा-धजा और बड़ा-सा। पर महल रेगिस्तान में था। दूर-दूर तक रेत ही रेत फैली थी। हरियाली वहां न थी, पेड़-पौधे वहां न थे।

शकुन वह महल देखकर ठगी-सी रह गई। सब कुछ होते हुए भी उसे लगा कि वह वीरान जगह में आ गई है। अचानक वह फूट-फूटकर रोने लगी। राजकुमार ने तरह-तरह से उसका मन बहलाना चाहा। पर वह प्रसन्न नहीं हुई। रात में उसने भोजन भी नहीं किया।

रात बीती, सुबह हुई। राजकुमार ने चारों तरफ देखा। महल के बाहर देख, हैरान हुआ। झट शकुन को नींद से जगाया। उसे खिड़की के पास ले गया। बोला—''तुमने कुछ नहीं खोया। देखो, दूर-दूर तक यहां हरियाली हो गई है। साधु महाराज ने ठीक ही वरदान दिया था। तुम कहीं भी रहो, अपने बाग में रहोगी।''

शकुन अपनी खुशी को रोक नहीं पा रही थी।

Scanned with CamScanner

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : जीनियस; ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : बुद्धिमान; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : औसत बुद्धि; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।

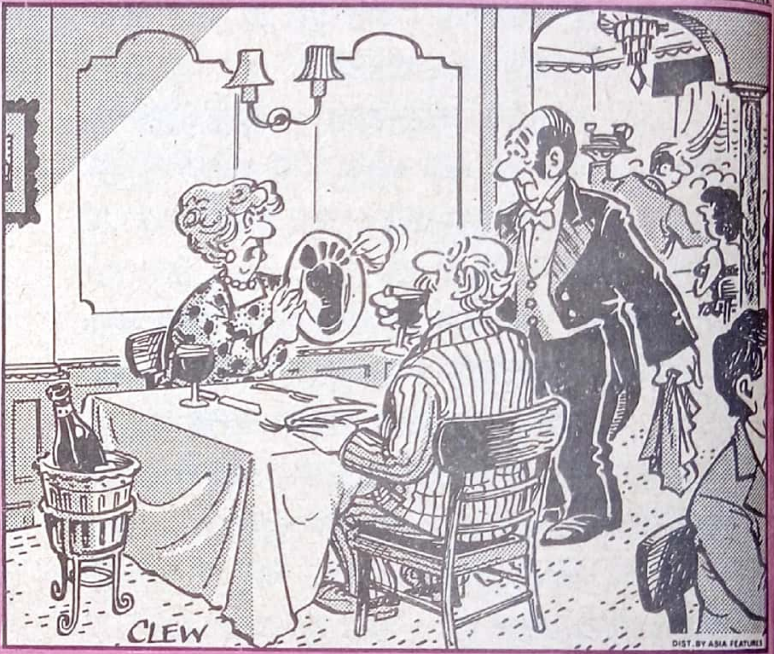

कहानी लिखो : १०७

सामने प्रकाशित चित्र को देखकर रोचक कहानी लिखिए। उसे १० अक्तूबर '९२ तक **नंदन, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी को पुरस्कार मिलेगा। उसे प्रकाशित भी किया जाएगा। परिणाम : दिसम्बर '९२

चित्र-पहेली : १०७

'राम लीला का दृश्य' विषय पर चित्र बनाकर १० अक्तूबर '९२ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए। **चित्र के पीछे अपना नाम-पता तथा उम्र अवश्य लिखें। चित्र चटख रंगों से बनाकर भेजें।** चुना हुआ चित्र पुरस्कृत कर, प्रकाशित किया जाएगा !

परिणाम : जनवरी '९३

लद गए फल

—उषा महाजन

पहाड़ों की तलहटी में बसा एक हरा-भरा गांव था। वहां एक गरीब बुढ़िया किराए की झोंपड़ी में रहती थी। झोंपड़ी का मालिक एक अमीर व्यापारी था। वह कुछ दूर शहर की तरफ अपनी विशाल कोठी में रहता था। हर महीने आकर वह बुढ़िया से अपना किराया वसूल कर ले जाता। यह भी न सोचता कि बेचारी बुढ़िया बहुत गरीब है। पहाड़ पर घूमने आने वाले पर्यटकों को अपनी सिली गर्म टोपियां बेच-बेचकर, किसी तरह वह अपना गुजारा चला रही थी।

बुढ़िया दिल की बड़ी नेक थी। आसपास के सारे पड़ोसियों के साथ मेल-मिलाप से रहती थी। जो कुछ भी थोड़ा-बहुत कमाती, उसे भी पास-पड़ोस के साथ मिल-बांटकर खाती थी। लोग भी उसे बहुत चाहते थे और समय-असमय उसके काम आते थे।

बुढ़िया की झोंपड़ी के बाहर खर-पतवार के बीच एक विचित्र पौधा अपने आप उग आया था। बुढ़िया पौधे को रोज पानी देती और उसके चारों ओर उगे खर-पतवार को साफ करती रहती। धीरे-धीरे पौधा एक वृक्ष बन गया। उसमें सुनहरे रंग के गोल-गोल फल भी आने लगे। पकने पर बुढ़िया ने एक फल को चख कर देखा। उसकी खुशी और आश्चर्य का ठिकाना न रहा। ऐसे मीठे और स्वादिष्ट फल उसने अपने जीवन में कभी नहीं खाए थे। बुढ़िया ने अपने सभी पड़ोसियों को उस पेड़ के फल बांटे।

बात उड़ते-उड़ते उसके मकान मालिक तक भी पहुंची। वह भागा-भागा बुढ़िया के पास आया। बोला—"यह पेड़ मेरी जमीन पर लगा है। इस पर मेरा हक है। मैं इसे ले जाकर अपनी कोठी के बाहर लगाऊंगा।"

बुढ़िया ने उसे बहुत समझाया, उसकी मिन्नत-खुशामद की —"भैया, पेड़ को मत उखाड़ो। एक जगह से उखड़ा हुआ पेड़ कभी दूसरी जगह नहीं लग सकता। अगर तुम चाहो तो इसके सारे फल तोड़कर ले जाओ, पर पेड़ को यहीं रहने दो।" पर हठी व्यापारी ने उसकी एक न मानी और पेड़ को उखाड़कर अपने यहां ले जाने के लिए किसी माली को बुलाने चला गया।

बुढ़िया को एक युक्ति सूझी। उसने पेड़ की एक कलम काटकर अपनी झोंपड़ी के पिछवाड़े लगा दी। पकान मालिक दो मालियों को लेकर लौटा। मालियों ने भी समझाया कि पेड़ को यहां से उखाड़ना व्यर्थ है। वह दूसरी जगह नहीं लग सकता। पर अपनी जिद पर तुले मकान-मालिक ने पेड़ उखड़वाकर अपनी कोठी के बाहर लगवा ही लिया।

वही हुआ जो होना था। पेड़ दो ही दिन में सूखकर ठूंठ हो गया।

उधर बुढ़िया की लगाई कलम से कुछ ही दिनों में नई-नई पत्तियां निकल आईं। गर्मियों का मौसम आते-आते वह भरा-पूरा वृक्ष बन गया। वह नित्य उसमें पानी देती, उसके चारों तरफ उगी खर-पतवार साफ करती और गुड़ाई-निराई करती। उसकी देख-भाल से जल्दी ही पेड़ वैसे ही रसीले फलों से लद गया।

बुढ़िया के पेड़ की चर्चा दोबारा पूरे शहर में फैलने लगी थी। मकान मालिक फिर भागा-भागा आया और हैरान होकर फलों से लदे नए पेड़ को देखने लगा। उसे हैरानी इस बात की भी हो रही थी कि उसके यहां पेड़ क्यों नहीं लगा और यहां उखाड़े जाने के बाद भी कैसे फिर से उग आया! उसने सोचा, हो

Scanned with CamScanner

न हो, बुढ़िया की कुटिया वाली यह जमीन अधिक उपजाऊ है। क्यों न अपना एक घर यहीं बनवा लूं और इन मीठे-रसीले फलों का लाभ उठाऊं।

उसने बुढ़िया से कहा—"माई, शाम होने से पहले यह कुटिया खाली कर दो। यह जमीन मेरी है और यह पेड़ भी मेरा है। मैं यहां अपनी नई कोठी बनवाना चाहता हूं। अब मैं शहर का घर छोड़, यहीं आकर रहूंगा। अब पेड़ के फल तू नहीं, मेरे बेटे और नाती-पोते खाएंगे।"

बुढ़िया ने उसकी बहुत चिरौरी की। बोली—"भैया, इस उम्र में अब मैं कहां जाऊंगी ? तुम चाहो तो इसकी एक कलम ले जाकर अपने घर में लगा लो। कुछ ही महीनों में वह पेड़ बन जाएगा और उसमें फल आ जाएंगे।"

मकान मालिक ने उसकी एक न मानी। कहने लगा—"पता नहीं, कलम वहां की मिट्टी में पनपेगी भी या नहीं। और फिर लगा भी ली, तो कब पेड़ बनेगा और कब उसमें फल निकलेंगे। मैं इतना इंतजार नहीं कर सकता। तुम बस तुरंत कुटिया खाली कर दो।"

बुढ़िया के पड़ोसियों ने उसकी परेशानी को सुना तो तुरंत मदद को आ गए। एक पड़ोसी ने अपने बगीचे की खाली जगह उसकी झोंपड़ी के लिए दे दी। बाकियों ने तुरंत सामान इकट्ठा कर बुढ़िया के लिए नई झोंपड़ी तैयार कर दी। किसी पड़ोसी ने पेड़ से एक कलम भी काट कर उसकी नई झोंपड़ी के बाहर रोप दी।

उधर मकान मालिक ने बुढ़िया की पुरानी झोंपड़ी को तुड़वाकर उसी जमीन पर कोठी बनवाना शुरू कर दिया। दिन भर पत्थर और गारे की उठा-पटक चलती रहती। लकड़ियों के चीरने से बुरादा उड़ता। पेड़ के पत्ते दिन-रात धूल और उड़ती हुई गंदगी से भरे रहते। ऊपर से न कोई उसे पानी देता, न उसके चारों और उगी खर-पतवार साफ करता। उसे खाद देना भी याद नहीं आता।

जल्द ही दो मंजिली कोठी तैयार हो गई। अब तो वृक्ष पर और विपत्ति टूट पड़ी। उसके आगे ऊंची कोठी बन जाने से उसकी हवा और धूप भी मारी गई। हवा, पानी और धूप की कमी से धीरे-धीरे पेड़ की जड़ें खोखली होने लगीं। मकान मालिक नई कोठी की खुशी में इतना खो गया कि पेड़ को देखने-भालने की उसे सुध ही नहीं थी। उसने बड़ी शानोशौकत के साथ उसमे गृह प्रवेश की तैयारियां शुरू कीं। सारे शहर को न्यौता दे डाला।

वह दिन भी आ पहुंचा। घर का बगीचा मेहमानों से भर गया। मेहमानों ने पेड़ को छू-छूकर देखना शुरू किया। पहाड़ी आबोहवा के कारण पेड़ के पत्ते तो हरे थे, लेकिन जड़ें एकदम खोखली हो चुकी थीं। बच्चे उसकी टहनियों से लटक-लटककर झूलने लगे, तो पेड़ अचानक चरमरा कर गिर पड़ा।

मकान मालिक बहुत दुखी हुआ। अब भी उसकी समझ में न आया कि बुढ़िया के रहते जो पेड़ फलों से लदा रहता था, उसकी कोठी बनते ही क्यों सूख गया।

गर्मियों का मौसम आते-आते कलम से तैयार हुआ पौधा वृक्ष में बदल गया। उसकी टहनियां हरे-हरे पत्तों और सफेद फूलों से लद गईं। शीघ्र ही फूल झड़ने लगे और उनके भीतर से नन्हे-नन्हे फल निकल आए। कुछ ही दिनों में बुढ़िया का यह नया पेड़ भी सुनहरी रंग के बड़े-बड़े गोल फलों से भर गया। इस बार उसने पड़ोसियों के साथ-साथ अपने पुराने मकान मालिक को भी फलों की एक टोकरी भेजी।

मकान मालिक शर्मिंदा हुआ। बुढ़िया के पास आया और उसके रसीले फलों वाले हरे-भरे पेड़ का राज पूछने लगा। बुढ़िया ने उसे पेड़ से एक कलम काटकर देते हुए कहा—"भैया, सारा खेल सिर्फ प्यार का है। जिस किसी भी चीज को हम प्यार के रस से सींचते हैं, वह अवश्य फलती-फूलती है। और हमें खुशी से भर देती है। इस कलम को ले जाओ। खुली जमीन में रोप दो और नित्य पानी दो। हां, याद रखना कि हवा, पानी और धूप के साथ-साथ तुम्हारी प्यार भरी नजर भी इसे मिलती रहे।"

मकान-मालिक कलम हाथ में लिए एक नई आशा के साथ घर लौट रहा था। ●

हार गए इंद्र

—अमरनाथ शुक्ल

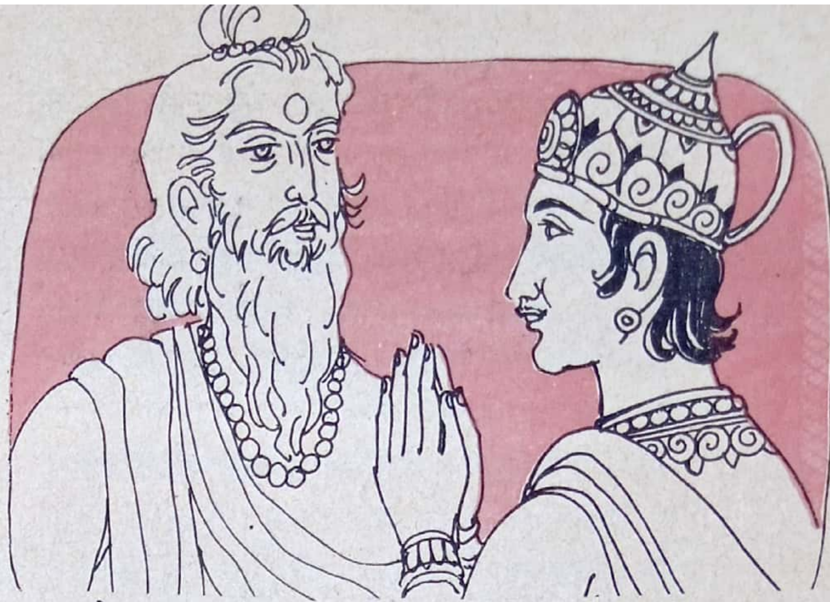

महाराजा करंधम बहुत ही पराक्रमी तथा धर्मात्मा थे। उनके कुलगुरु महर्षि अंगिरा थे। करंधम के पौत्र मरुत्त ने अपना राज्य इतना बढ़ाया कि इस लोक में देवराज इंद्र से बढ़कर उनकी प्रतिष्ठा हो गई। देवराज इंद्र किसी अन्य का वैभव तथा प्रतिष्ठा देख नहीं सकते थे। वह नहीं चाहते थे कि उनके समान या उनसे बढ़कर किसी और राजा का यश तथा राज्य बढ़े।

राजा मरुत्त बिना किसी ईर्ष्या-द्वेष के अपनी प्रजा की उन्नति के लिए काम करते रहते थे। इंद्र उनके बारे में क्या सोचते हैं, इसकी उन्हें चिंता नहीं थी।

एक बार देवराज इंद्र ने असुरों को जीतने की खुशी में एक बहुत बड़ा यज्ञ करना चाहा। इसके लिए उन्होंने विचार किया कि महर्षि अंगिरा के पुत्र वृहस्पति को ऋत्विज (पुरोहित) बनाया जाए। इसमें एक कठिनाई थी कि महर्षि अंगिरा करंधम के कुलगुरु थे। अतः उनके पुत्र वृहस्पति भी करंधम के पौत्र मरुत्त के कुलगुरु होते। इंद्र ने सोचा कि अगर वृहस्पति को मैं अपने यज्ञ का पुरोहित बना लूंगा, तो मरुत्त को कभी कोई पुरोहित ही न मिलेगा। यही सोच कर वह वृहस्पति के पास आए। विनती कर कहा कि— ''गुरुदेव मैं एक यज्ञ करना चाहता हूं। मेरी इच्छा है कि आप मरुत्त के कुलगुरु का पद त्याग कर, मेरे यज्ञ के पुरोहित बनें। मैं देवताओं का राजा हूं। मेरा यश तीनों लोकों में फैला है। मरुत्त तो केवल पृथ्वी का राजा है। उसका पुरोहित बने रहने में आपको वह मान नहीं मिलेगा, जो अजर-अमर देवताओं के कुलगुरु होने से मिलेगा।''

इंद्र की बात सुनकर वृहस्पति को भी लगा कि वह ठीक कह रहे हैं। मरणधर्मा मनुष्य का कुलगुरु होने की अपेक्षा अमर देवों का गुरु होने में ज्यादा मान है। बस, झट-से कह दिया— ''देवराज इंद्र! तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो। देवगुरु होने के नाते तुम्हारे यज्ञ का पुरोहित होना मुझे स्वीकार है।''

देवराज इंद्र के यज्ञ की बात सुनकर, मरुत्त ने इंद्र से भी बड़ा यज्ञ करने का निश्चय किया। यह विचार कर वह अपने कुलगुरु वृहस्पति के पास आए और यज्ञ का पुरोहित होने की उनसे प्रार्थना की।

वृहस्पति ने कहा— ''राजन्! मेरे पिता भले ही आपके कुलगुरु रहे हों, पर मैं अब तुम्हारा कुलगुरु नहीं हूं। अब मैं इंद्र का देवगुरु हूं। देवताओं का यज्ञ कराने के बाद मैं मनुष्यों का यज्ञ नहीं कराऊंगा। तुम किसी और को पुरोहित बनाकर अपना यज्ञ पूरा कराओ।''

महाराजा मरुत्त को गुरु वृहस्पति के इस उत्तर से बड़ी निराशा हुई। वह खिन्न मन से वापस जा रहे थे कि रास्ते में नारदजी मिल गए। मरुत्त को उदास देखकर नारद ने कहा— ''महाराज, आप जैसा चक्रवर्ती सम्राट इस प्रकार उदास क्यों है? क्या कष्ट है? क्या मैं आपका दुःख दूर कर सकता हूं?''

महाराजा मरुत्त ने कहा— ''देवर्षि, मैं अपने कुलगुरु वृहस्पति जी से यज्ञ का पुरोहित बनने के लिए प्रार्थना करने गया था, पर वृहस्पति ने कहा— अब मैंने देवगुरु बनना स्वीकार कर लिया है। अतः मनुष्यों के यज्ञ का पुरोहित नहीं बन सकता।''

नारद ने कहा— ''राजन्, अंगिरा के द्वितीय पुत्र संवर्त अपने भाई वृहस्पति के कटु बर्ताव से दुःखी होकर, सब-कुछ छोड़कर मोहमाया से मुक्त हैं। तुम उन्हें अपने यज्ञ का पुरोहित बनाओ। तेजस्वी संवर्त तुम्हारा कल्याण करेंगे। आजकल वह काशी में विश्वनाथजी के दर्शन के लिए पागलों जैसी वेश-भूषा

Scanned with CamScanner

में घूमते रहते हैं। वहां तुम उन्हें सहज ही पहचान लोगे।''

यह जानकर मरुत्त संवर्त की खोज में काशी पहुंचे। वहां उन्हें संवर्त बरगद के वृक्ष के नीचे घनी छाया में आराम करते दिखे। मरुत्त ने उनके चरण छूकर दंडवत किया तो संवर्त चौंके। पूछा— ''कौन हो, क्या चाहते हो ?''

मरुत्त ने कहा— ''हे अंगिरा नंदन संवर्त मुनि ! मैं महाराज करंधम का पौत्र मरुत्त हूं। मैं इंद्र के यज्ञ से भी बढ़कर एक यज्ञ करना चाहता हूं। मेरी प्रार्थना है कि आप उस यज्ञ के पुरोहित बनें। आप मेरे कुलगुरु हैं।''

महात्मा संवर्त ने सलाह दी कि वह अपना यज्ञ वृहस्पति से ही संपन्न कराएं। कहा— ''वृहस्पति मेरे बड़े भाई हैं। आजकल देवराज इंद्र तक उनकी प्रतिष्ठा है। मेरी स्थिति तो देख रहे हो। मैं तो वृहस्पति के अत्याचारों से दुःखी हो घर-परिवार, सम्पत्ति तथा कुल पौरोहित्य त्यागकर अपनी इसी दशा में मोह-माया से मुक्त होकर सुखी हूं।''

मरुत्त ने कहा— ''वृहस्पति ने अब धन, यश की लालसा में इंद्र को अपना यजमान बनाया है। वह देवगुरु हो गए हैं तथा मनुष्यों का पौरोहित्य नहीं करेंगे। मैं अपना सर्वस्व देकर आपसे से ही यज्ञ कराऊंगा तथा इंद्र और वृहस्पति को दिखा दूंगा कि आपकी कृपा से, मेरा यज्ञ देव यज्ञ से श्रेष्ठ होगा।''

संवर्त ने कहा— ''मुझे अपने लिए धन अथवा यजमान बनाने का मोह नहीं है। पर मैं तुम्हारे यज्ञ का पुरोहित बनूंगा। यह दिखा दूंगा कि उन अमर देवताओं की अपेक्षा कर्मशील मनुष्य अधिक श्रेष्ठ हैं। देवताओं के इस अहंकार पर मानव की श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए आप यज्ञ प्रारंभ करें। मेरे द्वारा यज्ञ कराने पर वृहस्पति तथा इंद्र हम दोनों से कुपित हो जाएंगे और यज्ञ पूर्ण नहीं होने देंगे।

मरुत्त ने कहा— ''गुरुदेव ! आप इसकी चिंता न करें। इंद्र मेरे प्रतिद्वंद्वी हैं, तो वृहस्पति भी आपके प्रतिद्वंद्वी होंगे, पर मैं इन दोनों को अपने पराक्रम से यज्ञ-स्थल से सहस्त्रों योजन दूर रखूंगा।''

मरुत्त के यज्ञ तथा संवर्त के आचार्य होने का समाचार जब देवलोक पहुंचा, तो वृहस्पति दुःखी होकर इंद्र के पास पहुंचे। बोले— ''देवराज ! तुम अपने ऐश्वर्य में भूल गए हो कि मरुत्त तुमसे भी बढ़कर यज्ञ करने जा रहा है। उसका आचार्य मेरा शत्रु भ्राता संवर्त होगा। शीघ्र कोई उपाय करो जिससे न यज्ञ पूर्ण हो, न संवर्त को अपार धन मिले।''

इंद्र को एक कपट सूझा। बोले— ''गुरुदेव ! आप मरुत्त के यज्ञ का पुरोहित होना स्वीकार कर लें, पर यज्ञ इस प्रकार से कराएं कि उसकी पूर्णाहुति ही न हो। मैं इसके लिए अग्नि को दूत बनाकर भेजता हूं।''

वृहस्पति ने कहा— ''जो करना हो शीघ्र करिए।''

इंद्र ने अग्नि को यह प्रस्ताव लेकर मरुत्त के पास भेजा तो मरुत्त ने कहा— ''इंद्र से कहना कि मैं मरणाधर्मा मनुष्य हूं। मेरा यज्ञ अमर देवगुरु वृहस्पति के योग्य नहीं। इसे तो मनुष्यों के बीच में रहने वाले मानव-कल्याण चेता ऋषि संवर्त ही कराएंगे। उन अमर और अकर्मण्य अहंकारी देवताओं की अपेक्षा हम मरणाधर्मा मनुष्य श्रेष्ठ हैं। मैं इसी की प्रतिष्ठा के लिए यज्ञ करूंगा। उसके आचार्य हमारे कुलगुरु संवर्त ही होंगे।''

मरुत्त का ऐसा दृढ़ निश्चय देखकर, अग्नि ने कहा— ''तो फिर देवता आपके यज्ञ का हविष्य ग्रहण नहीं करेंगे।''

मरुत्त ने कहा— ''वह यज्ञ ऐसा भव्य होगा कि देवगण स्वयं हविष्य लेने आएंगे।''

अग्नि चले गए। मरुत्त का यज्ञ प्रारंभ हुआ। इंद्र ने यज्ञ को पूर्ण न होने देने के लिए आक्रमण किया। राजा मरुत्त यज्ञ वेदी से उठकर इंद्र का सामना करने जाते कि संवर्त ने उन्हें रोक लिया। कहा— ''राजन, यज्ञ पूर्ण करो। देवता तुम्हारा कोई अनिष्ट नहीं कर सकते। मैंने मंत्र से देव शस्त्रों को स्तंभित कर दिया है। अब वे आकाश में खड़े-खड़े तुम्हारा यज्ञ देखेंगे। पूर्णाहुति पर यज्ञ का अपना हविष्य भी ग्रहण करेंगे।''

मरुत्त ने देखा कि आकाश में सारे देवता इंद्र समेत

चुपचाप खड़े हैं। इंद्र का हाथ वज्र उठाए ही रह गया।

निर्धूम यज्ञ की अग्नि हविष्य पाकर ऊपर उठने लगी। मंत्र बल से स्तंभित देवगण आकाश में खड़े-खड़े यज्ञ देखते रहे। पूर्णाहुति पर संवर्त ने मंत्र वापस लिया तथा देवगणों ने नीचे उतरकर अपना हविष्य ग्रहण किया। अपने किए पर इंद्र ने पश्चाताप किया। वृहस्पति ने संवर्त से क्षमा मांगी।

इंद्र ने कहा— "हम अपने ही कारण बार-बार असुरों से पराजित होते रहते हैं। महाराजा मरुत्त अपनी कर्मठता से आज हम देवों से उच्च आसन पर विराजमान हैं।"

संवर्त ने यज्ञ का सारा धन दीन-दु:खियों तथा ब्राह्मणों में बांट देने का आदेश दिया। स्वयं जैसे आए थे,वैसे ही चले गए। न मरुत्त से मित्रता,न वृहस्पति से वैर।

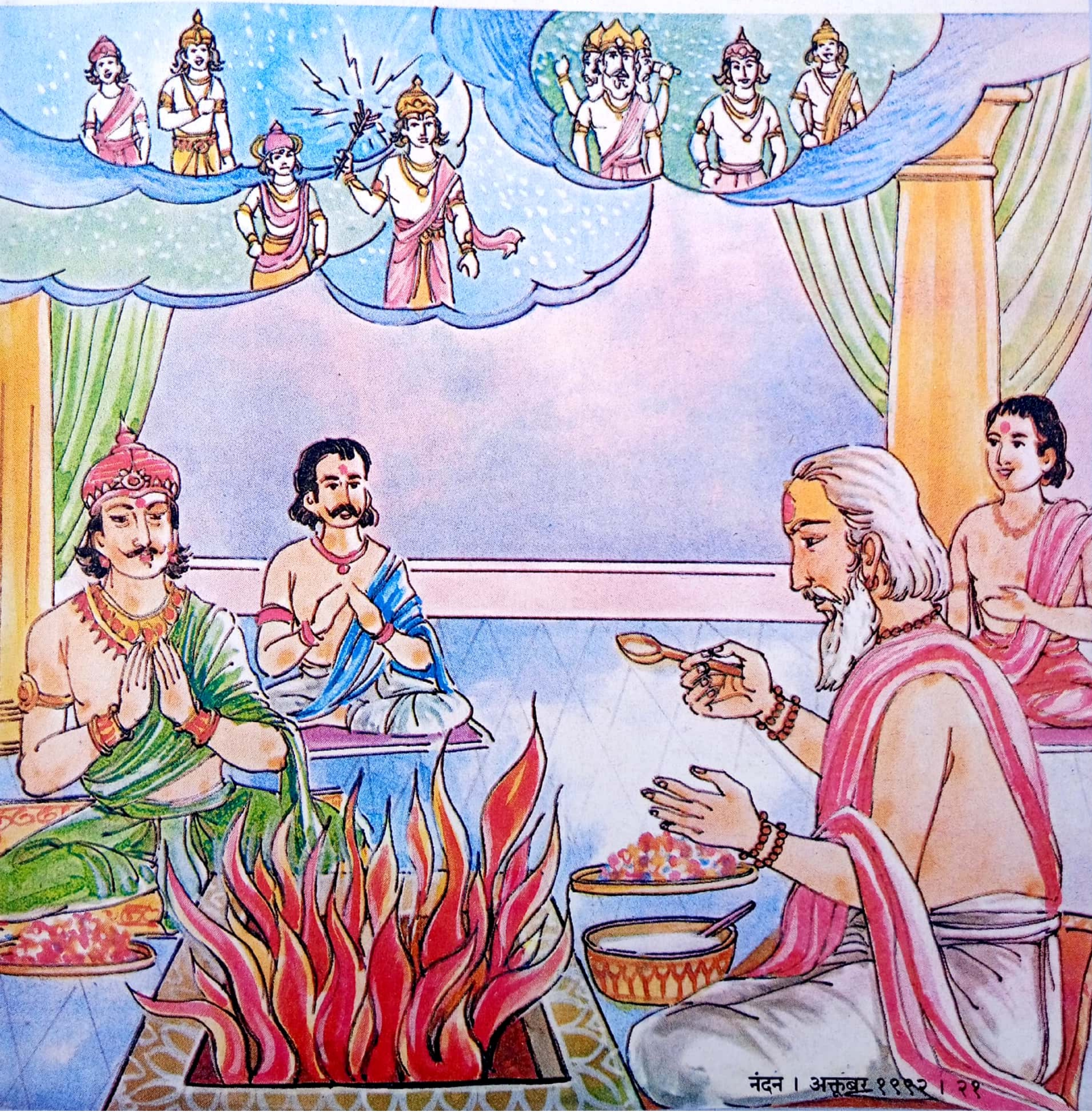

Scanned with CamScanner

हम से दुनिया रंगबिरंगी

हम धरती की शान

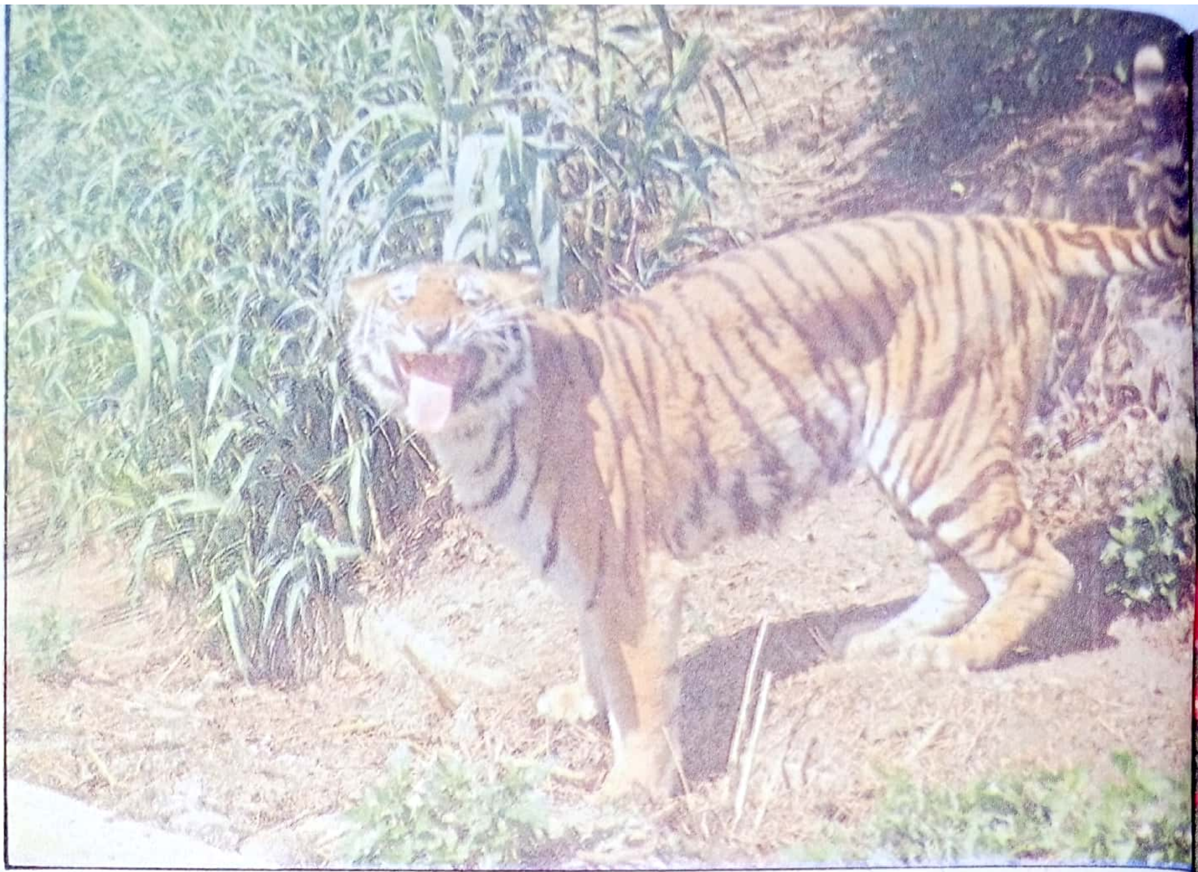

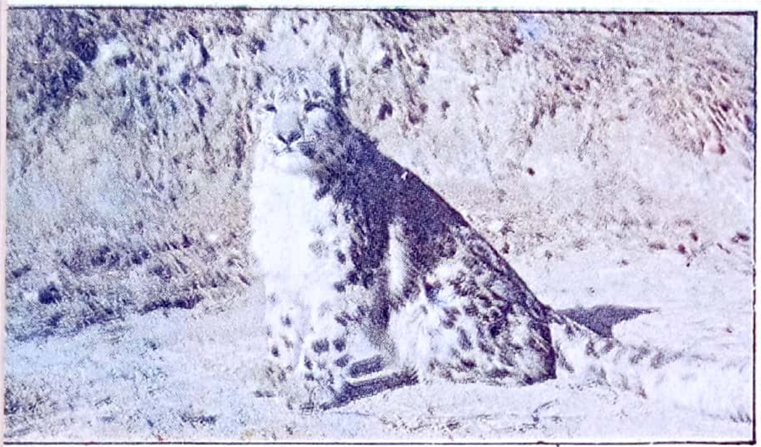

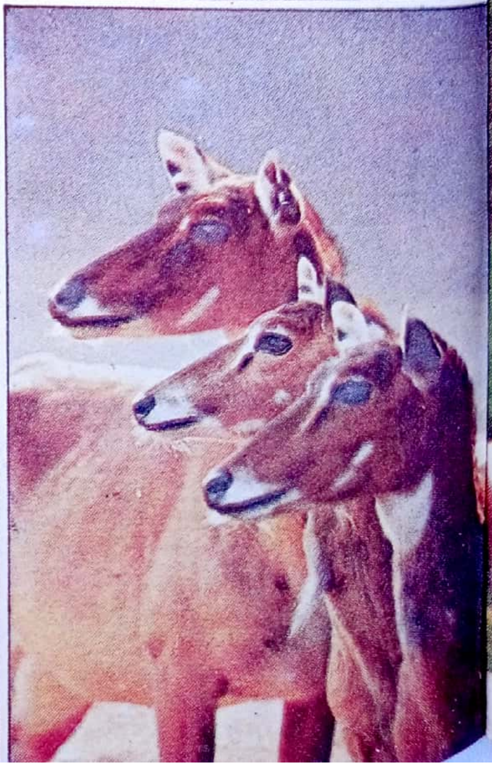

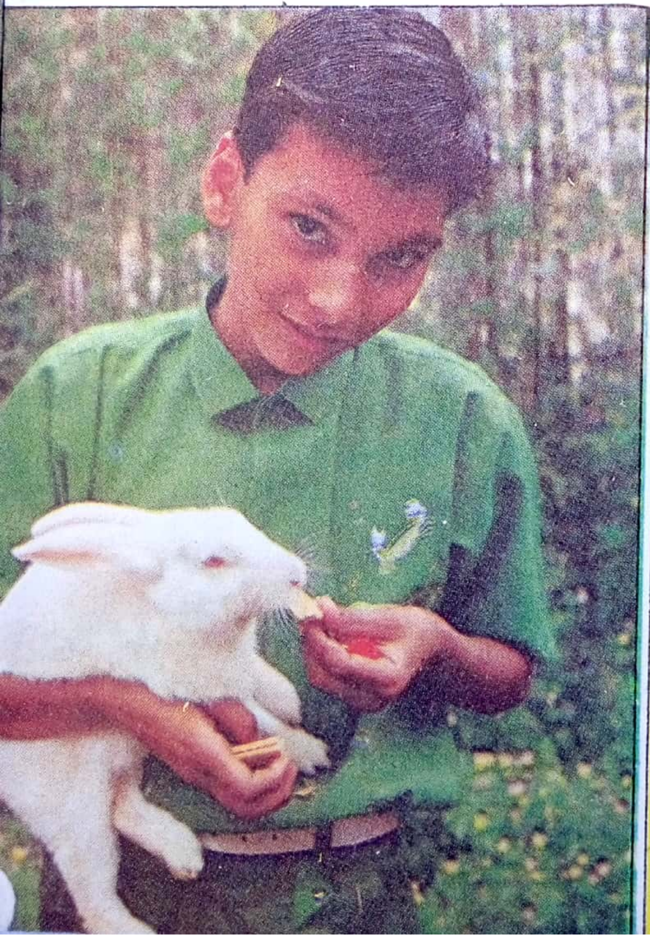

चित्र :
राजेन्द्रकुमार वधवा,
देवब्रत बनर्जी,
एल. आर. ग्रोवर,
सुरेश ऋतुपर्ण,
जनक देसाई

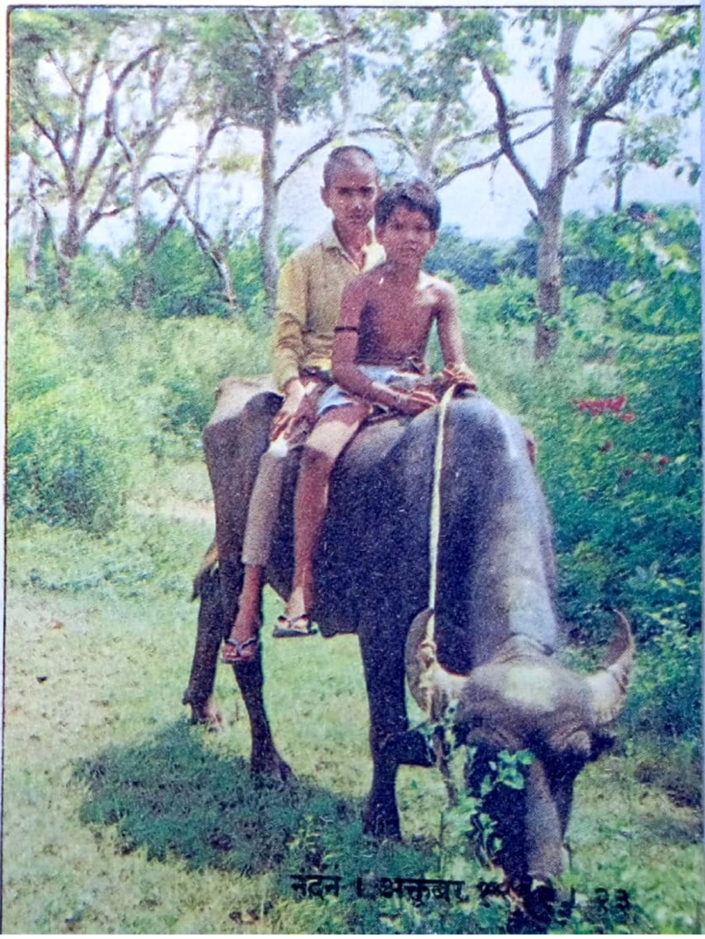

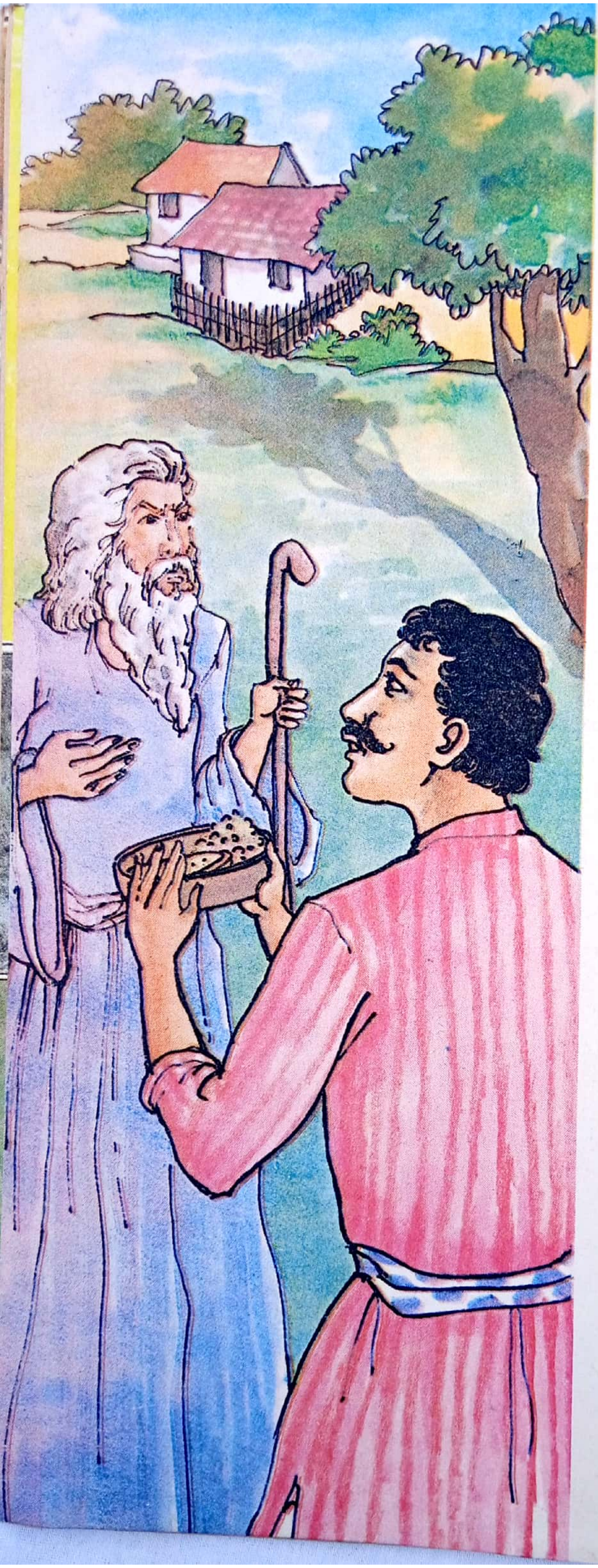

दस के बीस

— मधुमालती जैन

किसी गांव में नाहर और खड़क नाम के दो आदमी रहते थे। दोनों के घर आमने-सामने थे। नाहर व्यापारी था। उसका कारोबार अच्छा चलता था। घर भी उसने बहुत बड़ा बनाया हुआ था।

खड़क मामूली आदमी था। वह चटाई बुनता था और छोटे-से घर में रहता था। परंतु नाहर जितना कंजूस था, खड़क उतना ही खुले दिल का आदमी था। खड़क जितना भी कमाता, सब खाने-पीने में खर्च कर देता। पत्नी के अच्छे कपड़े बनवाता। नाते-रिश्तेदारों को खाने पर बुलाता। अच्छा खाता, अच्छा पहनता।

नाहर रूखी-सूखी खाता। न अच्छा पहनता, न अच्छा खाता। पत्नी कटिया सोचती— 'खड़क की पत्नी कितने अच्छे कपड़े पहनती है। आए दिन कोई न कोई आया रहता है उनके घर। दोनों रात को मस्ती में गीत भी गाते हैं। हमारे पास इतना पैसा है, फिर भी सुख क्यों नहीं? खड़क की पत्नी गिरी से पूछना चाहिए।' पर उसकी हिम्मत नहीं होती थी।

दोपहर को कटिया और गिरी अपने-अपने दरवाजे पर खड़ी होकर अपने-अपने सुख-दुःख की बातें करतीं। बातें करते-करते एक दिन कटिया ने गिरी से उनके सुख का रहस्य जानना चाहा। गिरी बोली— "मैं क्या जानूं? यह तो मेरे पति ही बता सकते हैं।"

अगले दिन खड़क काम से जा रहा था। वह धीमे स्वर में कोई गीत गुनगुना रहा था। रास्ते में उसे एक बूढ़ा मिला। उसने बहुत लम्बा चोगा पहन रखा था। लम्बी, सफेद दाढ़ी ने उसके चेहरे को ढक रखा था। बस, उसकी आंखें और होंठ नजर आ रहे थे। वह थर-थर कांप रहा था।

खड़क ने बूढ़े को देखा। उसे दया आ गई। उसने बूढ़े से पूछा— "बाबा, तुम कांप क्यों रहे हो?"

बूढ़ा बोला— "बेटा, मैं भूखा हूं। कई दिन से कुछ नहीं खाया।"

खड़क भागा-भागा घर गया और वहां से खाना लेकर वापस आया। बूढ़े ने भरपेट खाना खाया। आशीर्वाद देते हुए बोला— "बेटे, आज तुमने खाना खिलाकर मेरी जान बचाई है। यह डिब्बा संभालो। इसमें हमेशा पैसे भरे रहेंगे। तुम दस डालोगे, तो बीस बन जाएंगे।"

खड़क वह डिब्बा लेकर खुशी-खुशी घर वापस आया। उसने पत्नी को कुछ नहीं बताया। बोला— "गिरी, आज मुझे बहुत बड़ा काम मिला है। तुम जल्दी-जल्दी खाना बना लो, फिर मेरे साथ चटाई बुनने में मदद करना।"

गिरी ने खाना बनाया और फिर खड़क के साथ चटाई बुनने लगी। अब उनके घर न तो पहले की तरह चहल-पहल रहती, न ही रात को गाने की आवाज आती। गिरी दोपहर को आकर कटिया से बातें भी नहीं करती थी। यह बदला हुआ माहौल कटिया को बहुत परेशान करता। वह अब इसका कारण जानना चाहती थी।

कटिया से जब नहीं रहा गया, तो उसने नाहर से यह रहस्य जानना चाहा। नाहर भी कुछ नहीं बता सका। अब कटिया की तो रातों की नींद उड़ गई। एक दिन कटिया घर के काम-काज निपटाकर गिरी के घर पहुंच गई। गिरी काम में जुटी हुई थी। उसने कटिया को बैठने के लिए चारपाई दी और बात करते-करते हाथ से चटाई बुनती रही। कटिया हैरान थी कि गिरी दो मिनट बैठकर बात भी नहीं कर सकती।

उसने कहा— "बहन गिरी, आजकल तुम दिखाई नहीं देतीं, न ही तुम्हारे यहां मेहमान आते हैं। रात को तुम्हारे गीतों की आवाज भी नहीं आती। तुम्हारे पति का काम छूट गया है क्या?"

"नहीं बहन, मेरे पति के पास बहुत काम है। यह कहो, पहले से कई गुना ज्यादा काम मिलता है। खत्म होने में ही नहीं आता। बस, इसीलिए किसी और काम के लिए समय नहीं मिल पाता।"— हंसती हुई गिरी बोली।

गिरी के इस जवाब से कटिया खुश नहीं हुई। वह कुछ और जानना चाहती थी। जब उसने ज्यादा कहा, तो गिरी बोली— "मुझे नहीं पता, और क्या बात है? हां, आजकल इनको जितना भी पैसा मिलता है, सब एक डिब्बे में रखते जाते हैं। पहले की तरह खर्च नहीं करते। आधी रात को बार-बार निकालकर गिनते हैं और अपने माथे पर हाथ मारते हैं।"

"कहीं कोई भूत-प्रेत तो नहीं चिपट गया तुम्हारे पति को। वह तो ऐसे नहीं थे।"— कहकर कटिया चल पड़ी।

कटिया तो चली गई, पर गिरी परेशान हो उठी। उसने आज तक अपने पति का साथ दिया था। कभी

Scanned with CamScanner

सोचा नहीं था इस बारे में । आज उसे कटिया की बात सच लग रही थी ।

शाम को खड़क जब वापस आया, तो गिरी उसके हर काम को बड़े ध्यान से देख रही थी । उसने देखा— उसका पति डिब्बे में से बार-बार रुपए निकालता, फिर वापस रख देता । खड़क ने कई बार पैसे निकाले, गिने और वापस रख दिए । फिर उसी तरह अपने माथे पर हाथ मारने लगा ।

गिरी डरी-सहमी खड़क के पास जाकर खड़ी हो गई और जोर-जोर से रोने लगी । खड़क तो डर ही गया । बोला— "गिरी, क्यों रो रही हो ?"

"तुम्हें क्या हो गया है, किसका भूत तुम्हें चिपट गया है ? तुम इस डिब्बे के पीछे इतने परेशान क्यों रहते हो ?"— रोते हुए गिरी ने पूछा ।

—"आज मैं तुम्हें सारी बात बता ही देता हूं ।" और उसने खाना ले जाने से उस बूढ़े द्वारा दिए गए डिब्बे तक की सारी कहानी सुना दी । सुनकर गिरी रोते-रोते भी हंसने लगी । बोली— "उस बूढ़े आदमी ने आपको बेवकूफ बना दिया ।"

तभी अजीब-सा अट्टहास सुनाई दिया । दोनों हैरानी से देखने लगे । दरवाजे पर वही बूढ़ा खड़ा था । खड़क देखकर हैरान रह गया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया ।

बूढ़ा बोला— "बेटा, तुम बहुत ही नेकदिल और अच्छे इंसान थे । मैंने तुम्हें वह डिब्बा इसलिए दिया था, ताकि तुम गरीबों और दुखियों की सहायता करो । लेकिन तुम तो दस से बीस करने के चक्कर में लग गए । इसीलिए तुम्हारे डिब्बे में यह चमत्कार नहीं हुआ ।"

खड़क बहुत शर्मिंदा हुआ । उसने माफी मांगी और बोला— "बाबा, आप अपना यह डिब्बा वापस ले लीजिए । मैं तो इसके चक्कर में खाना-पीना, सोना, पत्नी और दोस्त सब कुछ भूल गया था । अब मैं खूब मेहनत करूंगा । सबकी सहायता करूंगा ।"

बाबा डिब्बा लेकर गायब हो गए । खड़क और गिरी खुशी-खुशी जीवन बिताने लगे । •

जामुन से हवेली

— चंद्रभूषण

बहुत पुरानी बात है । प्राग्ज्योतिषपुर (असम) के झालुकबाड़ी गांव में एक निर्धन परिवार रहता था । उस परिवार में बुढ़िया मां के अतिरिक्त उसका इकलौता बेटा पवन था । पवन जब छोटा था, उसके पिता की मृत्यु हो गई ।

बुढ़िया के पास थोड़ी-सी जमीन थी । उसी में शाक-सब्जी उगाकर, वह अपना और पवन का पेट पालती थी । बुढ़िया की इच्छा थी कि पवन पढ़-लिखकर कोई नौकरी कर ले । खुद तो वह पढ़ी-लिखी थी नहीं, किंतु पवन को उसने पास की एक पाठशाला में भरती करा दिया था ।

एक दिन पवन पाठशाला से लौट रहा था । रास्ते में उसने देखा कि देवव्रत नदी से मछलियां पकड़कर टोकरी में भर रहा है ।

देवव्रत पवन के साथ ही पाठशाला में पढ़ता था । काफी चतुर था । सदा प्रथम आता था । उसे ऐसा करते देख पवन को बड़ा आश्चर्य हुआ । देवव्रत के पास पहुंचकर उसने उससे मछलियां पकड़ने का कारण पूछा ।

देवव्रत ने उत्तर दिया— "मित्र, पढ़ाई के साथ-साथ मुझ पर अपने बूढ़े मां-बाप का भार भी है। तुम्हारी तो मां कमाती है, मगर मेरे मां-बाप कुछ काम नहीं कर सकते। इन मछलियों को बेचकर मैं अपना और उनका पालन-पोषण करता हूं।"

"मगर इतने बुद्धिमान होकर भी तुम ऐसा छोटा काम... ।"— पवन बोला ही था कि देवव्रत ने कहा— "तुम नहीं समझोगे कि कौन-सा काम छोटा होता है, और कौन-सा काम बड़ा ?" यह कहकर वह मछली भरी टोकरी सिर पर रखकर आगे बढ़ गया। पवन ने मुंह बिचकाया। फिर वह भी घर की ओर बढ़ लिया।

समय बीतता गया। पवन पाठशाला की पढ़ाई पूरी कर, शहर में नौकरी खोजने चला गया। वह काफी अच्छे अंकों से पास हुआ था। सोचता था कि नौकरी तो उसे जरूर ही मिल जाएगी। मगर नौकरी न लगी। ऊपर से वह घर से जो पैसे लाया था, वे भी खत्म हो गए। शहर में कोई पहचान का न था, अतः उधार भी किसी ने नहीं दिया।

ऐसी हालत में गांव लौटना ही ठीक समझा। वह पैदल ही गांव की ओर चल पड़ा।

चलते-चलते गांव कुछ ही दूर रह गया। मगर भूख और प्यास से पवन बेदम हुआ जा रहा था। तभी रास्ते में उसने जामुन के पेड़ देखे। उन पर पके जामुन लटक रहे थे। किसी तरह पेड़ पर चढ़ कर ढेर-सारे जामुन तोड़े। नीचे उतरकर छांव में बैठ वह उन्हें खाने लगा।

उसकी भूख कुछ शांत हुई। फिर भी उसके पास काफी जामुन बच गए थे। वह वहां से चलने को ही था कि एक बैलगाड़ी आकर उसके पास रुकी। उसमें बैठा व्यक्ति शक्ल-सूरत से सम्पन्न लगता था, गाड़ी में बैठे ही बैठे उसने पवन से पूछा— "भई! पूरे जामुन कितने के दोगे ?"

पवन के पास चूंकि पैसे नहीं थे, इसलिए पैसे की बात सुनकर क्षण भरके लिए वह चुप रहा। थोड़ी देर बाद बोला— "जो पैसे आप देंगे, मैं ले लूंगा।" उस व्यक्ति ने जेब से कुछ पैसे निकाले। उसे देते हुए सारे जामुन अपने वाहन में रखवा लिए।

पवन को एक रास्ता मिला। गांव की ओर बढ़ना छोड़, वह फिर पेड़ पर चढ़ा। ढेर-सारे जामुन तोड़े और पेड़ के नीचे बैठ गया। शाम तक उसे अच्छी-खासी आय हो चुकी थी।

अब वह गांव से प्रतिदिन वहां आकर ढेर-सारे जामुन तोड़ता। उन्हें बेचने के लिए वहीं बैठ जाता। धीरे-धीरे उसने इतने पैसे जोड़ लिए कि वह छोटी-मोटी परचून की दुकान खोल सकता था। उसने गांव से शहर की ओर जाने वाली सड़क के किनारे परचून की दुकान खोल ली। साथ ही उसने यात्रियों के लिए पीने के पानी की भी व्यवस्था कर दी।

दिनोंदिन उसका व्यवसाय बढ़ता गया। उसने एक पक्की हवेली भी खरीद ली।

एक दिन पवन अपनी दुकान पर बैठा था कि उसने सामने से देवव्रत को जाते देखा। वह तुरंत दुकान से उतरा। दौड़कर देवव्रत के पास गया। देवव्रत भी उसे पहचान गया। मुसकराकर बोला— "पवन, अब तो तुम समझ गए कि कौन-सा काम बड़ा होता है, कौन-सा काम छोटा ?"

"हां।"— पवन ने कहा— "काम कोई छोटा नहीं होता, बशर्ते वह सही हो।"

वह जानता था कि कैसे उसने जामुन बेचकर अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया। **(असमिया लोककथा)**

Scanned with CamScanner

अगड़म-बगड़म

अगड़म-बगड़म बम-बम-बो,
बंदर बोला—'खों-खों-खों ।
सार सपेटा सरबड़ शूं,
चिड़िया बोली—'चूं-चूं-चूं' ।
'सर-सर-सर-सर, उड़ी पतंग,
कौआ चला चील के संग ।
मोटूमल की सजी बरात,
अब होने वाली है रात ।
खेल हमारा खत्म हुआ,
चल कर खाएं मालपुआ ।

—शान्ति अग्रवाल

रमे राम

ये हरे-भरे जो जंगल हैं
इन सबके भीतर रमे राम,
इन नदियों, झीलों, झरनों में
उसकी शोभा फैली ललाम ।

यह वायु राम की सांसें हैं
आकाश राम का है शरीर,
पल-पल जो सागर मचल रहा
यह उसके उर का नेह नीर ।

उड़ते पंछी ये जीव-जंतु
लगते सब कितने अच्छे हैं,
सृष्टि की शोभा बढ़ा रहे
ये सभी राम के बच्चे हैं ।

फिर भी हम जंगल काट रहे
नदियों में कूड़ा बहा रहे,
जीवों की हत्या करते हैं
हैं शोर गगन में मचा रहे ।

हम जहर हवा में घोल रहे
हैं नहीं तनिक मन में डरते,
अब राम हमारे कहां रहें
हम पूजा जिनकी हैं करते ।

—रमेश कौशिक

एक कहानी

छुटका राजा बड़की रानी, लाल चिरैया पिंजरा धानी,
बोलो बच्चो, तुम्हें सुनाऊं इनकी
या फिर और कहानी !

एक कहानी गुड्डे के संग
घर से जाती गुड़िया की,
एक कहानी चंदा के घर
चरखे वाली बुढ़िया की ।
एक कहानी आसमान पर
टिम-टिम करते तारों की,
एक कहानी बादल-बिजली,
बारिश, मेघ मल्हारों की ।
एक कहानी आंखों देखी, एक कहानी अंधी कानी !

एक कहानी परियों वाले
पंख लगा उड़ जाने की,
एक कहानी किसी भूत के
पल में महल बनाने की ।
एक कहानी गांधी बाबा से
सच्चे इंसान की,
एक कहानी आजादी की,
सारे हिंदुस्तान की ।
एक कहानी दूध-बताशा, एक कहानी काला पानी !

—कृष्ण शलभ

अजब नजारे

हवा चल रही तेज बड़ी थी,
एक खटइया कहीं पड़ी थी ।
उड़ी खटइया आसमान में,
घुसी एक मच्छर के कान में ।

वहीं खड़ा था काला भालू,
बैठ खाट पर बेचे आलू ।
आलू में तो छेद बड़ा था,
शेर वहां पर तना खड़ा था ।

लम्बी पूंछ लटकती नीचे,
झटका दे-दे मुनिया खींचे ।
खिंची पूंछ तो गिरा शेर था,
गिरते ही बन गया बेर था ।

बेर देखकर झपटा बंदर,
खाकर पहुंचा पार समंदर ।
पार समंदर अजब नजारे,
दिन में दीख रहे थे तारे ।

तारों बीच महल था भारी,
राजा की जा रही सवारी ।
छोड़ सवारी, राजा-रानी,
उठा बाल्टी, भरते पानी ।

मीठा था मेहनत का पानी,
पीकर झूमें राजा-रानी ।
अच्छा भैया, खतम कहानी,
अब तो मुझे पुकारे नानी ।

—लता पंत

Scanned with CamScanner

मछुआरे

—तकषी शिवशंकर पिल्लै

सागर तट पर एक गांव बसा था । मछुआरों का वह गांव झोंपड़ीनुमा घरों में सिमटा था । मछुआरे लहरों के गर्जन-तर्जन की परवाह न करते । नौकाओं को लेकर सागर में दूर चले जाते और मछलियां पकड़कर लाते । फिर भी मजूरी के रूप में जो मिलता, उससे उनके परिवार दो जून की रूखी-सूखी खाने के अलावा कुछ न जुटा पाते ।

मगर कुछ लोग महत्वाकांक्षाओं से भरे होते हैं । चेम्पन भी इसी तरह का इंसान था । वह समझ गया था कि दुनिया में पैसा ही सबसे बड़ी चीज है । उसने तय कर लिया था कि चाहे जैसे हो,वह नाव और जाल खरीदेगा, पैसा इकट्ठा करके रहेगा ।

चेम्पन की पत्नी चक्की एक मेहनतकश मल्लाहिन थी । पति मछलियां पकड़ने जाता । वह दूसरी मछुआरिनों की तरह मछलियां बाजार में बेचने जाती । वह पति के मन की बात जानती थी । उसे भी चाह थी कि वे मल्लाह से नाव वाले बन जाएं । इसीलिए दोनों रोज ही कमाई में से कुछ बचाकर रखने लगे । इस तरह कुछ पूंजी तो हो गई, मगर इतनी नहीं कि नाव खरीदी जा सकती ।

करुतम्मा चक्की की बड़ी बेटी थी । छोटी बेटी का नाम था पंचमी । उसी तट पर मछलियों का एक व्यापारी रहता था । व्यापारी का बेटा था परिकुट्टी । व्यापारी को वहां की भाषा में मोतलाली भी कहते थे, इसीलिए परिकुट्टी छोटे मोतलाली के नाम से पुकारा जाता था । चक्की की बेटी करुतम्मा और परिकुट्टी बचपन से ही साथ-साथ खेलते और हंसते-बतियाते थे । धीरे-धीरे करुतम्मा बचपन को पारकर बड़ी हो गई । अब उनका मिलना बस्ती की औरतों को खलने लगा ।

एक दिन करुतम्मा परिकुट्टी से बोली—"मेरे बाबा नाव और जाल खरीदने की सोच रहे हैं ।"

"अच्छी बात है ।" —परिकुट्टी ने कहा ।

—"लेकिन उनके पास रुपए पूरे नहीं हैं । क्या तुम कुछ रकम उधार दे सकते हो ?"

परिकुट्टी ने कहा—"भला मेरे पास रुपए कहां हैं ?"

सुनकर करुतम्मा हंस पड़ी । बोली—"तब अपने को छोटा मोतलाली क्यों कहते फिरते हो?" कहकर वह घर चली आई । छोटी बहन पंचमी ने उन्हें बातें करते हुए देख लिया था । उसने मां से चुगली खाई । मां ने बेटी से पूछा ।

करुतम्मा सोचकर बोली—"नाव और जाल खरीदने के लिए रुपए कम हैं । मैं मोतलाली से पैसा मांग रही थी । तुम और बप्पा उस दिन कह रहे थे कि मोतलाली से रुपया मांगना है ।"

बेटी की बात सुन, चक्की कुछ देर चुप रही । चक्की भी इस उम्र से होकर गुजर चुकी थी ।-"इस महासागर में सब कुछ है बिटिया । मछलियां पकड़ने जाने वाले मछुआरे वहां से कैसे लौटकर आते हैं, यह तुझे क्या मालूम ? तट पर उनकी स्त्रियों को मान-मर्यादा के साथ

रहना होता है। तभी समुद्र प्रसन्न होता है। उनकी रक्षा करता है, वर्ना मल्लाह नाव सहित भंवर में फंसकर खत्म हो जाएं।''

करुतम्मा ये बातें पहले भी सुन चुकी थी। वह चुप रही। मां ने बेटी को फिर सावधान करते हुए कहा—''बिटिया, तू परिकुट्टी से न मिला कर। ऐसा करेगी, तो समुद्र नाराज हो जाएगा।''

सुनकर भोली करुतम्मा सचमुच डर गई। उसने सोचा—अब वह परिकुट्टी से नहीं मिलेगी। मगर उसी रात करुतम्मा ने मां-बाप को बातें करते हुए सुना। चेम्पन कह रहा था—''मैं छोटे मोतलाली से रुपया उधार लूंगा। वह देने पर राजी है। है भी भोला-भाला।''

करुतम्मा उनकी बातें सुनकर सोचने लगी—'जब छोटे मोतलाली से मेरा मिलना गलत है, तो उससे रुपए लेकर नाव खरीदना कैसे अच्छा हो गया? क्या इससे समुद्र नाराज नहीं होगा।'

आखिर चेम्पन को नाव और जाल खरीदने के लिए परिकुट्टी ने रुपए दे दिए। अब तो चेम्पन के पांव धरती पर नहीं पड़ते थे। सभी गांव वाले जान गए थे कि चेम्पन मल्लाह से नाव वाला होने जा रहा है। मगर उनकी समझ में नहीं आता था कि उसके पास रुपया आया कहां से! वह लालची है, धन जोड़ता है, यह तो सभी को पता था, मगर इतना पैसा कहां से आया? परिकुट्टी ने रुपए देने की बात किसी को बताई नहीं।

ऐसा समय भी आया जब परिकुट्टी के पास पैसा नहीं रहा। उसका व्यापार ठप्प होने लगा। चेम्पन ने उससे यही कहा था कि वह जो भी मछलियां पकड़कर लाएगा, उसी को बेचेगा। मगर चेम्पन इतना धूर्त और मक्कार निकला कि मछलियों के बदले नकद रुपए मांगने लगा। परिकुट्टी के पास नकद कहां था? सारी जमा-पूंजी तो वह चेम्पन को दे चुका था। इसीलिए चेम्पन ने उसे मछलियां देने से इंकार कर दिया। फिर भी परिकुट्टी ने किसी से यह नहीं कहा कि उसने चेम्पन को कर्ज दिया था।

करुतम्मा उसकी हालत से दुखी थी। वह जानती

विश्व की महान कृतियां : मलयालम

तकषी शिवशंकर पिल्लै —जन्म १९१२। स्थान-तकषी गांव (केरल)। मलयालम के प्रसिद्ध रचनाकार। अब तक कई उपन्यास, यात्रावृत्त, संस्मरण तथा कहानी संकलन प्रकाशित। भारतीय ज्ञान पीठ, साहित्य अकादमी, केरल साहित्य अकादमी तथा सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित। त्यागत्तिनु प्रतिफल और मछुआरे प्रसिद्ध उपन्यास हैं। यहां 'मछुआरे' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं। —सं.

थी कि परिकुट्टी ने अपना सारा धन लुटा दिया। वह अपना रुपया मांगेगा भी नहीं। इसीलिए उसने कई बार अपनी मां से कहा—''परिकुट्टी की हालत ठीक नहीं। बप्पा के पास अब काफी पैसा आ गया है। हमें उधार चुका देना चाहिए।''

चक्की जानती थी कि परिकुट्टी उसकी बेटी को प्यार करता है। उसी के कारण उसने रुपया दिया है। मगर वह यह बात चेम्पन को कैसे कहती। उसने पति से भी कई बार कर्ज की रकम लौटाने के लिए कहा, मगर परिकुट्टी का रुपया लौटाने की बात वह हमेशा टाल देता था।

चेम्पन धीरे-धीरे धनवान बनता जा रहा था। उसकी इच्छा थी कि एक नाव और खरीदी जाए। मगर उसकी खुशहाली से पड़ोसी और दूसरे लोग जलते थे। यह बात भी होने लगी थी कि चेम्पन की बेटी बड़ी हो गई, फिर भी उसका विवाह नहीं हुआ। घाट के नियम के अनुसार-लड़की की शादी छोटी उम्र में ही हो जानी चाहिए। चक्की इस बात से दुखी थी।

चक्की दूसरी नाव खरीदने से पहले बेटी की शादी करना चाहती थी। लेकिन चेम्पन रुपया कमाने में जुटा था। उसे न बेटी के विवाह की चिंता थी, न कर्ज लौटाने की। उसने एक दूसरे नाव वाले रामन को कर्ज देकर उसकी नाव गिरवी रख ली। इस तरह उसकी दो नावों की इच्छा भी पूरी हो गई। अब वह अपनी बिरादरी का एक मालदार आदमी बन गया।

समुद्र से लौटते समय चेम्पन की नाव सबसे आगे होती थी। वह साहसी और बलवान था। मगर आज उसकी नाव की होड़ में एक नाव और आगे बढ़ने की

Scanned with CamScanner

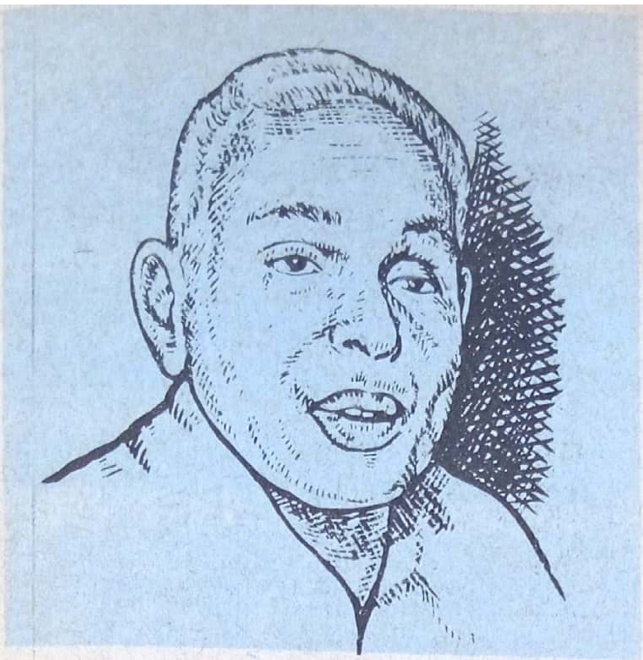

कोशिश कर रही थी। पतवार के पास एक बहुत होशियार आदमी खड़ा फुर्ती से नाव का संचालन कर रहा था, किनारे पर खड़े लोग आश्चर्य करने लगे कि यह नाव किसकी है। पता चला,चालक का नाम है पलनी। वह कम उम्र का एक बलिष्ठ नौजवान था।

चेप्पन और पलनी की नाव पहले बराबर-बराबर बढ़ रही थीं। कई बार दोनों नावें टकराते-टकराते भी बचीं। आखिर दोनों नावें एक किनारे पर लगीं। करुतम्मा ने पलनी को गौर से देखा। चेम्पन ने पलनी को गले लगाया और कहा—"बेटा, तुम सचमुच समुद्र के वीर पुत्र हो।"

उस दिन की बिक्री में पलनी को थोड़ा ज्यादा पैसा मिला। इस तरह चेम्पन की जरा-सी हार हो गई। फिर भी उसने कोई नाराजगी जाहिर नहीं की। चेम्पन ने पलनी से पूछा—"बेटा, तुम्हारे पिता का नाम क्या है ?"

"बेलू। वह जिंदा नहीं है।"—पलनी बोला।

—"और मां ?"

—"वह भी मर गई।"

सुनकर चेम्पन किसी सोच में डूब गया। घर आकर उसने चक्की से कहा—"वह लड़का देखा ? कैसा लगा। होशियार है न ?"

चक्की ने पूछा—"क्या मतलब ?"

—"मैंने करुतम्मा के लिए इसे ही पसंद किया है। हमारे कोई लड़का नहीं। इसे घर पर भी रख सकते हैं। भला है, मान जाएगा।"

चेम्पन ने पलनी के साथ बेटी की शादी पक्की कर दी। पलनी में चेम्पन ने एक दूसरा गुण भी देखा। वह गरीब था, फिर भी अपने होने वाले ससुर से उसने कोई मांग नहीं की। भला चेम्पन जैसे लालची को और क्या चाहिए था। उसने पत्नी से यह बात कही, तो वह गुस्से से बोली—"उसने न लेने की बात कही होगी, तो भी हमें कुछ देना ही चाहिए।"

चेम्पन कुछ न बोला। उठकर चला गया। करुतम्मा मां के पास आई। बोली—"मुझे स्त्रीधन नहीं चाहिए।"

"क्यों ? लड़की स्त्रीधन के बिना ससुराल जाए, तो यह अपमान की बात होगी। तुम्हारे पास भी चार पैसे होने चाहिएं।" —चक्की बोली।

करुतम्मा बोली—"अम्मा, मुझे जो देना है, वह मोतलाली को दे देना। वह दिवालिया हो गया है। उसे निराधार बनाकर मैं नहीं जा सकती। यह अन्याय है।"

चक्की बेटी का दर्द समझ रही थी। बोली—"बेटी, तू चिंता न कर। कर्ज चुकाने का भार मैं अपने ऊपर लेती हूं।"

शादी तय हो गई थी। करुतम्मा के मन पर परिकुट्टी के कर्ज का बोझ था। उसके लिए वह अपने को दोषी मान रही थी।

आखिर शादी का दिन आ गया। लेन-देन पर थोड़ा विवाद हुआ। इसी समय पलनी के एक साथी ने चेम्पन से कहा—"तुम इतने ही अमीर हो,तो पलनी जैसे गरीब से लड़की क्यों ब्याह रहे हो ? जरूर लड़की में कोई खोट है।"

सब उसकी बातें सुनकर चौंक गए। चक्की जहां खड़ी थी, वहीं बेहोश होकर गिर पड़ी। चेम्पन पागलों की तरह इधर-उधर दौड़ने लगा। आखिर बातचीत के द्वारा मामला निपटाया गया। शादी हो गई। करुतम्मा विदा होकर ससुराल चली गई। लेकिन चेम्पन ने अपनी कड़वी बातों से पलनी के मन में दरार डाल दी थी।

कुछ दिन बीते। बाहर बातें होतीं, तो पलनी भी सुनता। करुतम्मा के बारे में सुन-सुनकर उसका मन

Scanned with CamScanner

भी मैला होने लगा । पलनी के गांव के एक आदमी ने करुतम्मा के बारे में उल्टी-सीधी बातें फैला दी थीं ।

इसी बीच करुतम्मा ने पलनी से कई बार कहा कि वह अपनी बीमार मां को देखना चाहती है, मगर पलनी भी ससुर से चिढ़ा बैठा था । बोला—''कोई लेने नहीं आया । मैं न तुम्हें भेजूंगा, न स्वयं जाऊंगा ।''

चक्की बेटी की विदा के समय बीमार हुई थी । दिन बीतने के साथ उसकी हालत बिगड़ती ही गई । एक दिन उसने परिकुट्टी को बुलाया । कहा—''बेटा, मैं अब ज्यादा दिन नहीं जिऊंगी । तुम्हारा पैसा... ।''

परिकुट्टी बोला—''उसकी चिंता न करो ।''

—''बेटा, मेरी लड़की दुखी है । उसका विवाह अच्छी जगह नहीं हुआ ।''

परिकुट्टी कुछ न बोला, तो चक्की कहने लगी—''मेरे कोई बेटा नहीं । तुम मेरे बेटे बन जाओ । आज से तुम करुतम्मा के भाई बन जाओ । बनोगे ?'' मरणासन्न चक्की को दिलासा देते हुए परिकुट्टी बोला—''ठीक है । आज से वह मेरी बहन हुई । मैं उसे कष्ट में नहीं डालूंगा ।''

उसके बाद चक्की चल बसी । सभी ने कहा—''इसकी बेटी को खबर कर दो ।'' मगर चेम्पन कठोर बन गया । उसने बेटी को मां के मरने की खबर नहीं की । यह सब देखकर परिकुट्टी से नहीं रहा गया । वह रात में ही करुतम्मा के पास गया । पलनी उस समय घर पर नहीं था । उसने करुतम्मा को उसकी मां के मरने की खबर दी । सुनते ही वह रो पड़ी । परिकुट्टी उसी समय वहां से चला आया ।

जब पलनी आया, तो उसे सारी बात पता चली । फिर भी पलनी ने करुतम्मा को नहीं भेजा ।

इसी बीच चेम्पन ने दूसरी शादी कर ली । उसकी छोटी लड़की पंचमी सौतेली मां से दुखी थी । चेम्पन भी अब बूढ़ा हो चला था । उसका मन नहीं लगता था । धीरे-धीरे उसका सारा पैसा खत्म हो गया । दोनों नावें तट पर खड़ी रहती थीं । जालों की मरम्मत भी नहीं होती थी । लालच ने उसे बरबाद कर दिया था । वह अब अपने किए पर पश्चाताप करता । उसकी हालत पागलों जैसी हो गई थी ।

तंग आकर पंचमी अपनी बड़ी बहन के घर आई । उसे अचानक और अकेली आई देख, करुतम्मा आश्चर्यचकित रह गई । पूछने पर पंचमी ने घर की दयनीय हालत बहन को बताई । कहा—''बप्पा का सारा काम चौपट हो गया । उन्होंने सब कुछ छोड़ दिया है । पागलों की तरह समुद्र तट पर घूमते रहते हैं ।'' साथ ही पंचमी ने परिकुट्टी की बुरी दशा का भी वर्णन किया । सुनकर करुतम्मा उदास हुई । इन दिनों पति का व्यवहार भी क्रूर होता जा रहा था ।

एक सुबह पलनी कुछ जल्दी उठा और नाव लेकर चला गया । उसके मन में क्या था, कुछ बताया नहीं । तेजी से नाव चलाता हुआ समुद्र में दूर चला गया । बवंडर उठ रहा था । समुद्र की अनंत जलराशि पर उसकी छोटी नौका गेंद की तरह उछलने लगी । लहरों ने उसकी नौका को कई बार उछालकर पीछे ढकेला । जैसे कहा—'वापस जा ! आगे न बढ़ !' मगर उसने कुछ नहीं सुना । मछली पकड़ने के लिए कांटा फेंका । दुर्भाग्य से वह कांटा एक शार्क के गले में अटक गया । क्रोधित शार्क उसकी नाव को खींच ले चली । उस दिन के बाद पलनी को किसी ने नहीं देखा ।

अगले दिन एक शार्क तट पर आ लगी । उसके मुंह में अटका कांटा पलनी का था । चेम्पन ने परिकुट्टी का रुपया नहीं लौटाया, पर उसे अपना सब कुछ गंवाना पड़ा ।

प्रस्तुत : इन्दु

Scanned with CamScanner

भगवान श्रीराम

चित्रमय झांकी

श्रीराम ने धनुष तोड़ा।
महाराजा जनक की लाड़ली
बिटिया सीता ने उन्हें
वरमाला पहनाई।

राम वनवास को चले।
सरयू को पार करना था।
नाव पर चढ़ने से पहले
केवट ने उनके
चरण पखारे।

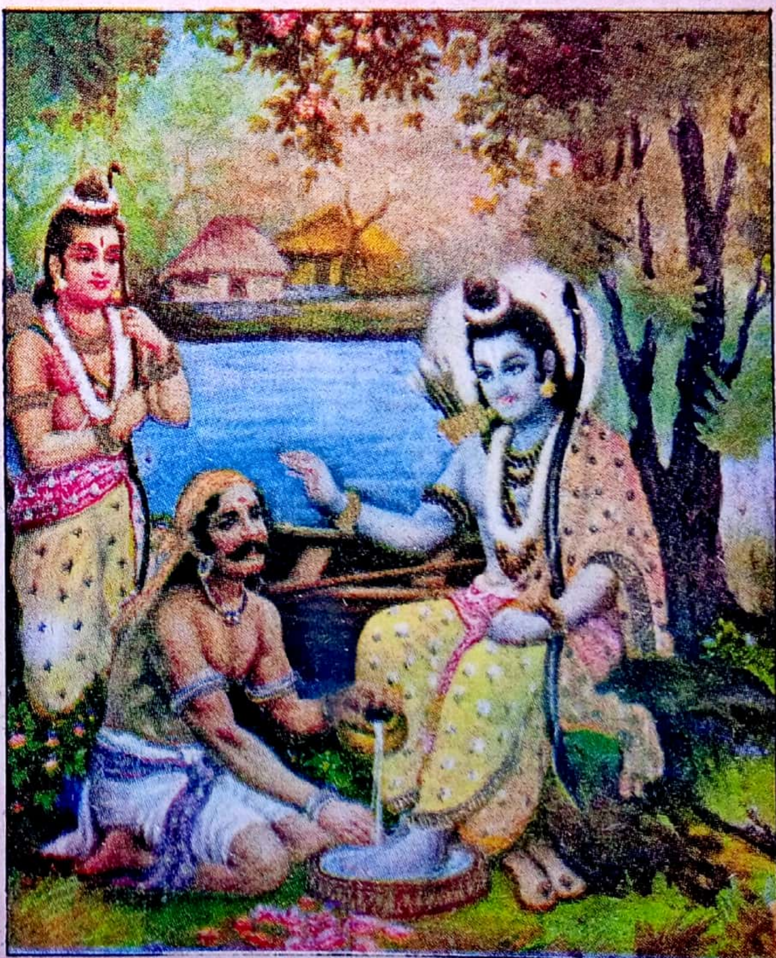

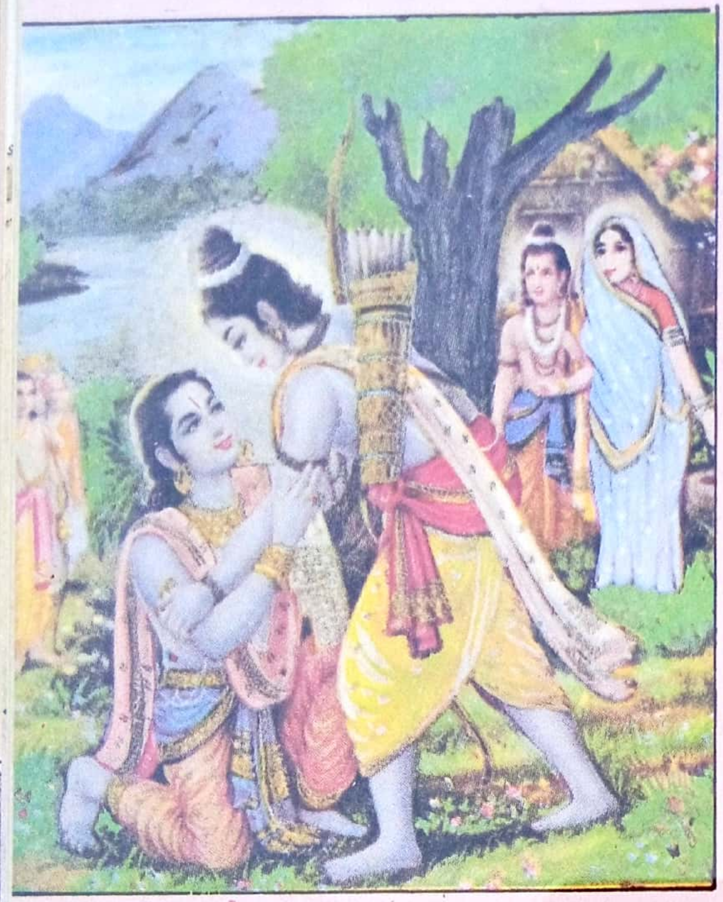

भरत ननिहाल से अयोध्या आए।
बनवास की बात सुनी,
तो श्रीराम को
मनाने वन में गए।

रावण सीताजी को हर ले गया।
लंका तक पहुंचने में
समुद्र पार करना था।
श्रीराम ने सफलता पाने के
लिए रामेश्वरम में
शिव की पूजा की।

हनुमान सीताजी की खोज में लंका पहुंचे। अशोक वाटिका में जाकर उन्होंने भगवान राम की अंगूठी सीताजी को दी।

रावण ने इंद्रजीत को भेज हनुमान को बंदी बना लिया। दंड-स्वरूप उनकी पूंछ में कपड़े लपेट आग लगवा दी। हनुमानजी ने जलती पूंछ से सारी लंका में आग लगा दी।

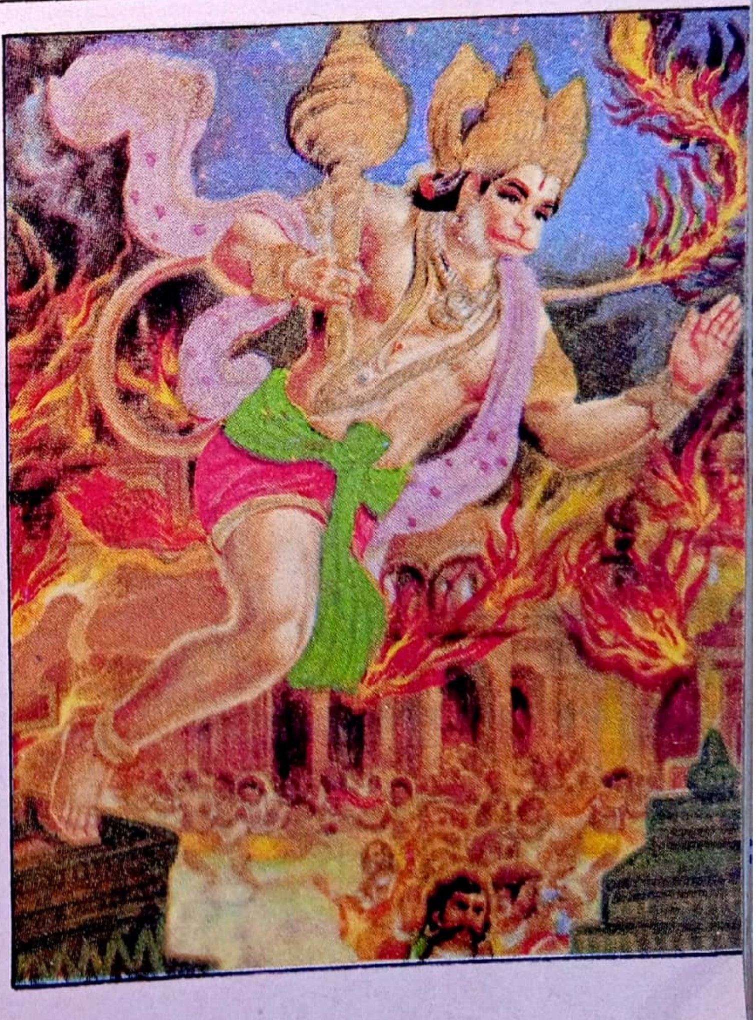

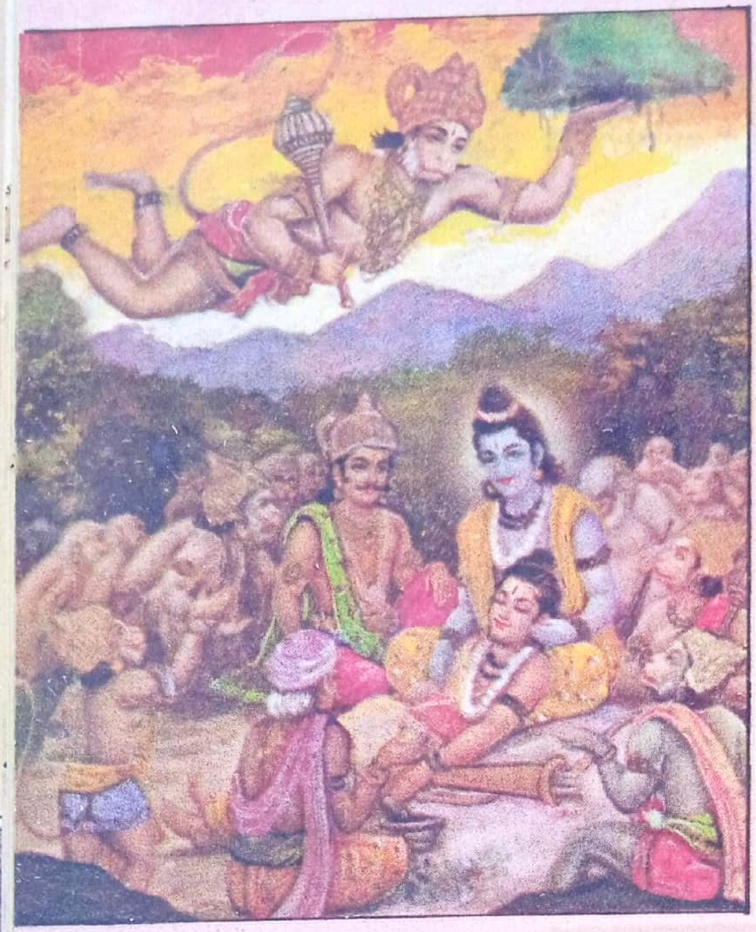

राम-रावण युद्ध में इंद्रजीत की शक्ति से
लक्ष्मण मूर्छित हो गए।
सुषेण वैद्य के कहने पर
हनुमानजी संजीवनी बूटी लेने गए।
पूरा पर्वत ही उठा लाए।

पाप पर पुण्य की विजय हुई।
राम अयोध्या लौटे।
धूमधाम से उनका राज तिलक हुआ।
आज तक लोग
'राम राज्य' को याद करते हैं।

Scanned with CamScanner

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष २८, अंक १२; नई दिल्ली, अक्तूबर '९२; आश्विन-कार्तिक, शक सं. १९१४

वहां घूमते हैं डाइनासोर

एमस्टर्डम । यहां से कुछ दूरी पर अनेक ऐसे पार्क हैं, जिन्हें कथा-कहानी पार्क कहना बेहतर होगा । इन्हें देखकर लगता है, जैसे हम इस धरती पर नहीं, सपनों की दुनिया में सैर कर रहे हों ।

एक है—परी कथा पार्क । सचमुच का परीलोक । नाचतीं-गातीं—वृक्षों की टहनियों पर झुकी तरह-तरह की कोमल परियां । यहां रोशनी हर पल अपना रंग बदलती है, भीनी-भीनी खुशबू वातावरण में और भी मिठास भर देती है ।

ऐसे ही दूसरे पार्क को घने जंगल का रूप दिया गया है ।

तीसरे पार्क में पहुंचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं । लगता है, हम आज की नहीं, करोड़ों वर्ष पहले की दुनिया में पहुंच गए हैं । मशीन चालित डाइनासोर चारों ओर चलते-फिरते दिखाई देते हैं । उनकी आवाजें भी सुनाई देती हैं । भेड़िए सपरिवार घूमते दिखते हैं ।

एक और पार्क राजा-महाराजा और उनके सिपहसालारों से भरा है । इनके बारे में तरह-तरह की कहानियां भी सुनाई देती हैं ।

रेडियो लोकप्रिय

नई दिल्ली । एक जमाने में रेडियो को गांव-गांव बाजे के नाम से जाना जाता था । फिर दूरदर्शन की धूम मची तो ऐसा लगा कि रेडियो को लोग भूल जाएंगे । लेकिन एक संस्था ने सर्वेक्षण में पाया कि आज भी गांव में रेडियो बहुत लोकप्रिय है ।

स्नानघर में अंग्रेजी

टोकियो । जापान में अंग्रेजी सिखाने वाली एक किताब मिलती है । अधिकतर जापानी उस किताब को स्नानघर में अपने साथ ले जाते हैं । वहां बाथ टब में बैठकर ये उन शब्दों को याद करते हैं । इसीलिए इस किताब को ऐसा बनाया गया है कि यह पानी से खराब नहीं होती ।

घास से ईंधन

डबलिन । आयरलैंड के वैज्ञानिकों ने घास से पेट्रोल जैसा ईंधन बनाया है । इसे घास के रस से तैयार किया गया है । यदि इसका बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाए तो यह पेट्रोल से बहुत सस्ता भी होगा ।

भवन में घोंसला

बरमिंघम । यहां एक भवन बनाया जा रहा था । अचानक बीच में ही काम रोक दिया गया क्योंकि वहीं एक जगह घोंसला रखा था । उसमें अंडे थे । पांच हफ्ते तक वहां कोई काम नहीं किया गया जब तक कि अंडों से बच्चे निकलकर कुछ बड़े न हो गए ।

नया पेंट

ओहिओ । जापान में एक ऐसा पेंट बनाया गया है जो कमरे को ठंडा नहीं होने देता । यह कमरे के तापमान को सोख उसे गर्म बनाए रखता है ।

समुद्र के भीतर

वाशिंगटन । अब तक समुद्र के अंदर के हालात जानने के लिए वैज्ञानिकों को काफी खर्च करना पड़ता था । अब एक अनोखा यंत्र बनाया गया है । इसे समुद्र के अंदर डाल दिया जाता है । दो किलोग्राम वजन और पचहत्तर से.मी. लम्बा यह यंत्र सारी सूचनाएं इकट्ठी कर लेता है । फिर अपने आप पानी की सतह पर आ जाता है । एक एंटीना बाहर निकलता है और सारी सूचनाएं पृथ्वी के चक्कर लगाते उपग्रहों को भेज दी जाती है ।

कविता प्रतियोगिता

नई दिल्ली । बालकनजी बारी ने चाचा नेहरू बाल कविता प्रतियोगिता की घोषणा की है । सोलह वर्ष तक के बच्चे अपनी बनाई कविता इसमें भेज सकते हैं । कविता के विषय हैं—१. शांति : युद्ध घोर अंधकार है और शांति प्रकाश है । २. महानता : दूसरों के लिए त्याग करने वाला व्यक्ति महान है। ३. सफलता : आत्मानुशासन सफलता की पहली सीढ़ी है ।

कविता किसी एक विषय पर कागज के एक ओर लिखी हो । कविता की चार कापियां भेजनी होंगी । कवि का नाम, आयु-प्रमाणपत्र, पिता का नाम और घर का पता लिखना जरूरी है । अंतिम तिथि है—३१ अक्तूबर ।

कविताएं भेजने का पता—बालकनजी बारी इंटरनेशनल, बी-ई-१७२, जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

Scanned with CamScanner

बच्चों का अखबार
नंदन बाल समाचार

सच कहने से कभी मत डरो —महात्मा गांधी

खर्चा बचाओ : आमदनी बढ़ाओ

बालकनजी बारी ने दो महीने का बालिका शिविर लगाया। इसमें साठ छात्राओं ने भाग लिया। उन्हें तरह-तरह के काम सिखाए गए जैसे चित्रकारी, सिलाई-कढ़ाई, बैग—पर्स बनाना, कम खर्च में भोजन के स्वादिष्ट व्यंजन बनाना, फल-सब्जियों की डिब्बाबंदी आदि। बालिकाएं अपने ऊपर होने वाले खर्च को कम कर सकें। कुछ न कुछ बनाएं और परिवार की आमदनी बढ़ाने में हाथ बंटाएं।

बालकनजी बारी के अध्यक्ष का कहना है—'खर्चा बचाओ, आमदनी बढ़ाओ', यह हमारी नई योजना है। खास तौर से गरीब घरों की लड़कियों को थोड़े समय में ऐसा प्रशिक्षण दिया जाए। इससे उनमें आत्मविश्वास जागता है। परिवार की दशा सुधरती है, तो बच्चियों के प्रति भेदभाव कम होता है। वह चलता-फिरता संस्थान बनाकर जगह-जगह ऐसे शिविर चलाना चाहते हैं।

कुछ बालिकाएं मिल-जुलकर ऐसा प्रयास कर सकती हैं।

बहादुर बहनें

नई दिल्ली। पंद्रह वर्ष की सोनिया, दस वर्ष की ज्योति और छह वर्ष की पूजा खेल रही थीं। तभी एक आदमी पूजा को उठाकर ले जाने लगा। उसकी चीखें सुनकर दोनों बड़ी बहनें दौड़ीं। वे उस आदमी पर टूट पड़ीं और सहायता के लिए चिल्लाने लगीं। पड़ोसी आए और उस आदमी को पकड़ लिया। दोनों बहनों को खूब प्रशंसा मिली। पुलिस का कहना है कि इसके लिए उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा।

कंघे से जुएं खत्म

तेल अवीव। इस्राइल में बिजली से चलने वाला एक कंघा बनाया गया है। इसे नाम दिया गया है—'रोबी काम्बी।' इसमें एक छोटी-सी इलेक्ट्रॉनिक मशीन लगी है। जैसे ही कंघा बालों को छूता है, हलका-सा विद्युत करंट बहने लगता है। यह करंट सारी जुओं को खत्म कर देता है।

शिकार पर रोक

कराची। पाकिस्तान की एक अदालत ने सोहन चिड़िया के शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया है। अरब देशों के शेख खासतौर से इस चिड़िया का शिकार करने पाकिस्तान आया करते थे। जीव-जंतुओं का बचाव करने वाली संस्था ने सरकार से कहा था कि यह चिड़िया लुप्त होती जा रही है।

सेना ने बचाया

ब्रिसबेन। यहां दुर्लभ जंतु पाए जाते हैं। कुछ-कुछ खरगोश से मिलते इस जीव पर जंगली बिल्लियों ने हमला कर दिया। इस को बचाने के लिए सेना को बुलाना पड़ा।

दुनिया की सैर

कलकत्ता। सलाउद्दीन चौधरी और उनकी पत्नी ने ३९ दिन २० घंटे १५ मिनट में दुनिया का चक्कर लगाया। यह यात्रा उन्होंने अपनी कार से की। यह एक कीर्तिमान है।

अरबपति बढ़ रहे हैं

न्यूयार्क। ब्रूनेई का सुल्तान दुनिया का सबसे अमीर व्यक्ति है। एक पत्रिका के अनुसार दुनिया में अरबपतियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। गत वर्ष की संख्या २०२ के मुकाबले इस वर्ष उनकी संख्या २२३ है। इसमें सात वर्ष की एथलीना मी शामिल है। सबसे अधिक उम्र का अरबपति एक जापानी है। उसकी उम्र एक सौ दो वर्ष है। दुनिया में सबसे अधिक अरबपति अमरीका में रहते हैं।

तैरता महल

रियाद। सऊदी अरब के शाह के लिए नाव के आकार का तैरने वाला महल बनाया गया है। महल में जगह-जगह पर सोने-चांदी और हाथी दांत का काम है। इसमें आधुनिक सुख-सुविधाएं भी हैं।

डायना से शुभ्रा

कटक। नाम है उसका शुभ्रा। दिल्ली की निवासी है। अब तक वह सोलह संतानों को जन्म देकर रिकार्ड बना चुकी है। शुभ्रा को पहले डायना नाम से पुकारा जाता था। वह एक दुर्लभ सफेद शेरनी है।

वेंकटेश्वर के चित्र

तिरुपति। यहां भगवान वेंकटेश्वर के जीवन से सम्बंधित घटनाओं के चित्रों की प्रदर्शनी लगी। ये चित्र दाल, चावल और सरसों के दाने पर बनाए गए हैं। इन्हें देखने के लिए लैंस की जरूरत पड़ती है।

चित्रों से भोजन

क्वालालम्पुर। मलयेशिया की राजधानी में एक अनूठा रेस्तरां खुला है। इसके भोजन की सूची पर सिर्फ शब्द ही नहीं खाने-पीने की चीजों के चित्र बने हैं। इसका कारण यह है कि यहां के सभी बीस कर्मचारी गूंगे-बहरे हैं।

अलविदा दादा इंजन

जमालपुर। यहां और चारबाग में भाप के इंजनों को ठीक करने का काम किया जाता था। अब ये कारखाने बंदकर दिए जाएंगे। धीरे-धीरे ऐसे इंजन खत्म किए जा रहे हैं। भाप के इंजनों ने दुनिया की दूरी को बहुत कम कर दिया था। लेकिन अब ये इंजन समय के साथ पिछड़ गए हैं।

बेघर बार बच्चे

कोलम्बो। श्रीलंका में चल रहे गृहयुद्ध का सबसे खराब असर बच्चों पर पड़ा है। लाखों बच्चे बेघर-बार हो गए हैं। उन्हें ठीक से खाना नहीं मिलता। अनाथ बच्चों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

पहिया गिरा

लंदन। वायुसेना का एक विमान उड़ा। उसका पहिया निकलकर नीचे जा गिरा। जहां पहिया गिरा था, वहां बहुत-से सैलानी बैठे थे। वे जहाजों का उड़ना देखने आते थे। सभी बाल-बाल बच गए।

बगैर साबुन कपड़ों की धुलाई

न्यूयार्क। कपड़ों को बगैर सांबुन या पाउडर के धोया जाए,ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता। किन्तु अमरीका में एक ऐसी मशीन से कपड़ों की धुलाई शुरू हुई है, जिसमें साबुन या पाउडर के स्थान पर ओजोन का उपयोग होता है। इससे ऊर्जा लागत में कमी आती है और पानी भी कम लगता है। इस मशीन में आक्सीकरण के द्वारा सफाई होती है। ओजोन गैस मशीन में पहुंचाई जाती है जो बगैर गरम पानी के गंदगी को दस मिनट में निकाल देती है। अब इस गंदगी को धुलाई के पानी में से अलग कर लिया जाता है। और इस प्रकार पानी पुनः उपयोग करने लायक हो जाता है।

रूस में श्रीकृष्ण

मास्को। रूस के बरनेल नगर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाई गई। इसमें सैकड़ों रूसियों ने भाग लिया। इस अवसर पर धार्मिक साहित्य बांटा गया। सभी को शाकाहारी भोजन भी परोसा गया।

नेपाल को कर्ज

काठमांडू। नेपाल को युनिसेफ से दो करोड़ पचास लाख डालर का अनुदान मिला है। इसे बच्चों और उनकी माताओं के कल्याण पर खर्च किया जाएगा।

कुत्ते-बिल्लियों से भी कम

लंदन। कुत्ते-बिल्लियों के लिए पश्चिमी देशों में जो भोजन तैयार किया जाता है, वह विटामिनों और पोषक तत्वों से भरपूर होता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि गरीब लोगों को जो भोजन सहायता के रूप में दिया जाता है, वह कुत्ते-बिल्लियों के भोजन से भी ज्यादा खराब है।

समुद्र किनारे ज्वार-बाजरा

गांधीनगर। समुद्र के किनारों पर खाली पड़ी जमीन पर ज्वार-बाजरा, सूरजमुखी आदि की फसलें उगाई जा सकती हैं। इनकी सिंचाई में समुद्री पानी भी इस्तेमाल किया जा सकता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ज्वार-बाजरा की ये किस्में बहुत अच्छी होंगी।

जागो सोनेवालो

टोकियो। अक्सर लोग एलार्म बजते सुन, उसे बंद करते हैं फिर गहरी नींद में सो जाते हैं। अब एक नई घड़ी बनाई गई है। इसका एलार्म तब तक बजता रहता है जब तक कि सोने वाला उठ नहीं जाता। इसे बंद करने के लिए इस पर एक छोटा हथौड़ा कई बार मारना पड़ता है, तब तक सोने वाले की नींद भाग चुकी होती है।

नन्हे समाचार

□ देश की झीलों पर हाल ही में एक पुस्तक प्रकाशित हुई है। उसमें बताया गया है कि गंदगी तथा मिट्टी भरने के कारण सभी झीलें सिकुड़ती जा रही हैं।

□ राऊरकेला इस्पात कारखाने में एक कोयला गाड़ी आई। उसके एक डिब्बे में अजगर फंसा मिला। निकल न पाने के कारण वह फुफकार रहा था। उसे निकालकर बाद में चिड़ियाघर भेज दिया गया।

□ शिकागो में रहती हैं सिंथिया होस। हर बृहस्पतिवार को घर से भोजन बनाकर ले जाती है और सौ गरीबों को खिलाती हैं। वह बहुत दिनों से ऐसा कर रही हैं।

□ तमिलनाडु में मेलाकोइल का पुराना शिव मंदिर खंडहर हो गया था। उसे फिर से बनाने में हिंदुओं के साथ-साथ मुसलमानों ने भी धन दिया।

□ इंग्लैंड की फ्रांसिस कैथलीन अपनी वसीयत में कुत्तों की देखरेख के लिए करोड़ों रुपए छोड़ गई हैं। ये ब्लाइंड ऐसोसिएशन के वे कुत्ते हैं जो नेत्रहीनों को रास्ता बताते हैं।

□ भारत ने गीर अभय वन के तीन शेर हेलसिंकी चिड़ियाघर को उपहार में दिए हैं।

□ वैज्ञानिकों ने कहा है लम्बी गरदन वाले विशाल डाइनासोर के शरीर में आठ हृदय होते थे। यह डाइनासोर दस करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी पर पाया जाता था।

□ इंग्लैंड के दो मछुआरे नाव में बैठकर समुद्र में गए। उनकी नाव का नाम था 'आशा'। अचानक नाव चट्टान से टकराकर डूब गई। दोनों मछुआरे डूबने लगे। तभी नौसेना के एक हेलीकाप्टर ने आकर उनके प्राण बचा लिए।

□ स्विट्जरलैंड के मेंडेसियो क्षेत्र में हर वर्ष गधों की दौड़ होती है। उसमें बहुत-से लोग हिस्सा लेते हैं, दर्शक जमा होते हैं इसे देखने के लिए।

Scanned with CamScanner

सचित्र समाचार

↑ अरे—यह कोई ड्रेगन नहीं, नए डिजाइन की नाव है ।

↑ भारत के नए उपराष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन ।

एक शेरनी फिनलैंड में सर्कस से भाग गई । सरकार ने उसकी इतनी जोर-शोर से खोज की कि वहां मजाक चल पड़ा । जिसे देखो वह सड़क पर शेर बनकर निकल पड़ा । ↓

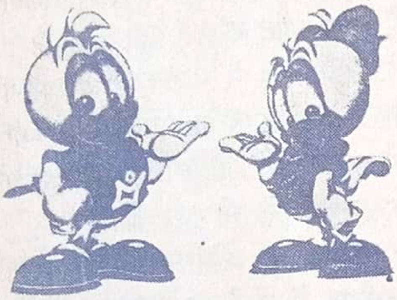

← हिरोशिमा में १९९४ में होनेवाले बारहवें एशियाई खेलों के शुभंकर—पोपो और कुक्कू

सौ वर्ष पहले बने मकान को पूरा उठाकर साढ़े तीन किलोमीटर दूर ले जाया गया । किंगस्टन में इस दृश्य को हजारों लोगों ने देखा । ↓

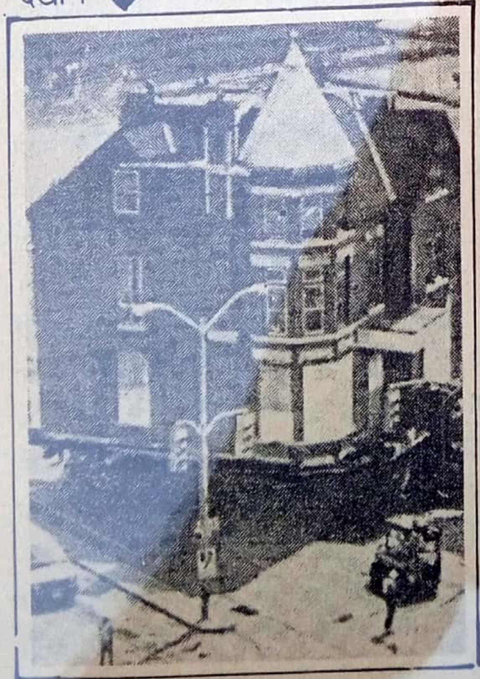

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और हिमाचल प्रदेश के सांस्कृतिक विभाग ने रंगमंच पर पांच कार्यशालाएं कीं । सोलन में हुए 'बूट नगरी' नाटक का एक दृश्य । ↓

Scanned with CamScanner

व्यापारी दरबार से गया ही था कि राजा ने प्रधान गुप्तचर से ...
यह कल नहीं आया तो ! तुरंत इसका पीछा करो । देखो, यह कौन है ? कहां रहता है ?
जो आज्ञा ...
आगे-आगे व्यापारी, पीछे-पीछे गुप्तचर ...
पैसे गए, मगर जान तो बची । राजा बड़ा स्वार्थी है । कहता है, दूसरे न पहनें । हुं ...
यह तो सावन गांव की ओर जा रहा है ।
घोड़ागाड़ी सावन गांव के जमींदार की हवेली के सामने रुकी, मगर कोई नीचे नहीं उतरा । गुप्तचर ने पास जाकर ...
अरे, कोई नहीं ! व्यापारी कहां गया ? उफ ! अब महाराज से क्या कहूंगा ?
गुप्तचर ने कई दिन तक सारा गांव छाना, किंतु व्यापारी नहीं मिला । राजा ने यह सुना, तो ...
इसे जेलखाने में डाल दो । घोषणा करा दो—जो उस व्यापारी को पकड़ लाएगा, इनाम मिलेगा । ...
जी !
उफ !

महीना बीत गया । व्यापारी का पता नहीं लग सका । एक दिन एक गरीब युवक राजा से मिला ...
महाराज, यदि आप व्यापारी से खरीदे कपड़े पर निशान लगाकर मुझे दे दें, तो मैं पता लगा सकता हूं । ...
अवश्य । उसका पता लगाने के लिए कुछ भी ...
सावन गांव में दशहरे का मेला लगा था । मेले में एक व्यापारी ...
निराला कपड़ा । मक्खन सा मुलायम, चिकना, चमकदार । बेहद सस्ता ... नाम कमल सुख
सचमुच !
मैं कुर्ता बनवाऊंगा ...
मैं कमीज ...
जमींदार को भी खबर लगी । वह तुरंत वहां पहुंचा ...
जमींदार !
कोई नहीं खरीदेगा । सारा कपड़ा मेरा !
जमींदार साहेब !
जमींदार ने सारा कपड़ा खरीद लिया । घर आकर ...
राजा से अगला-पिछला पैसा सब वसूल करूंगा, फिर तुम्हारे लिए ...
सोने की हंसली । ... सोने की तगड़ी ...

Scanned with CamScanner

ढम ढमा ढम

रवि दिवाकर

ढम ढमा ढम ढम--ढम ढमा ढम ढम--सूरजपुर गांव के लोग पिछले करीब एक पखवाड़े से ढोल बजने की यह आवाज सुन रहे थे। गांव में किसी के यहां न कोई शादी थी, न ब्याह। न ही कोई और समारोह किसी के घर में था, जहां ढोल बजता हो।

करीब-करीब सभी ने गांव से बाहर जाकर भी ढोल की यह आवाज सुनी। खेतों में काम कर रहे किसानों, पनघट पर पानी भरती महिलाओं और पाठशाला जाते छोटे-छोटे बच्चों ने। लोग इस बात से भी हैरान थे कि इस ढोल की आवाज में और ढोलों की आवाज से बहुत ज्यादा मिठास है। ढोल की यह आवाज कभी हौले-हौले, तो कभी तेज हो जाती थी। शुरू में तो गांव के लोगों ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया, लेकिन धीरे-धीरे ढोल की यह आवाज उन्हें अच्छी लगने लगी। अपने-अपने कामों में लगे रहते हुए भी उनके कान ढोल की आवाज की तरफ लगे रहते थे।

लोगों को हैरानी थी कि यह ढोल कहां बज रहा है और कौन इसे बजा रहा है? किसी ने भी न तो ढोल को ही देखा था, न ढोल वाले को।

गांव के बूढ़े पंडित जमुना का जवान बेटा गंगा पढ़ा-लिखा था, मगर उसे कोई रोजगार नहीं मिल पा रहा था। घर में छह प्राणी खाने वाले थे और कमाने वाला कोई भी नहीं था। जमुना पंडित थोड़ा-बहुत पूजा-पाठ कर कुछ लाते थे, मगर उससे गुजारा नहीं चलता था। घर में बराबर चख-चख चलती रहती थी। गंगा चाहता तो बहुत था कि उसे कोई काम मिले, जिससे वह अपने परिवार की गुजर-बसर कर सके। लेकिन उसे कोई काम नहीं मिलता था। जमीन-जायदाद और खेत भी उनके पास नहीं थे।

एक दिन गंगा ने प्रतिज्ञा की कि आज वह कोई काम जरूर तलाश करेगा। काम मिलने पर ही घर लौटेगा।

गंगा तुरंत घर से बाहर निकल आया। उसने

घरवालों को भी नहीं बताया कि वह कहां जा रहा है। वह ढोल की आवाज की सीध में चल रहा था।

गंगा गांव से कई कोस दूर आ चुका था। मगर ढोल का कोई अता-पता उसे नहीं चल पाया। चलते-चलते रास्ते में एक बियाबान जंगल आ गया। गंगा को डर भी लग रहा था कि कोई जंगली जानवर उसे न मिल जाए। वह बचपन से ही भालू से बहुत डरता था।

गंगा जंगल में चलता गया, चलता गया। आखिर वह वहां पहुंच ही गया, जहां ढोल बज रहा था। उसने देखा—सामने एक गुफा है। उस में रखा हुआ एक ढोल अपने आप ही बज रहा है।

वह लपककर गुफा में घुस गया। उसने जोर से ढोल पर हथेली की थाप दी, लेकिन उसका हाथ ढोल पर ही चिपक गया। उसने हाथ छुड़ाने के लिए बहुत जोर लगाया, लेकिन उसका हाथ ढोल से नहीं छूटा। तभी ऐसा लगा, जैसे उसे किसी ने धक्का दिया है। वह गिर पड़ा। ढोल के साथ लुढ़कता-लुढ़कता नीचे की तरफ आ गया।

गंगा ने देखा कि अभी कुछ देर पहले जो छोटी-छोटी तीन-चार सुंदर परियां दिखाई दे रही थीं, वे बौनों की शक्ल में बदल गईं। उन तीन-चार बौनों के सिर पर नोक वाली टोपियां लगी हुई थीं।

गंगा को ढोल के साथ लुढ़ककर आते देख, वे बौने एक साथ कड़ककर बोले—"कौन हो तुम? तुमने ढोल पर हाथ मारने की गुस्ताखी क्यों की? हम अभी तुम्हें ऐसा दंड देंगे कि तुम्हारे हाथ-पैर ही गायब

Scanned with CamScanner

कर देंगे।"

गंगा बौनों की बात सुनकर कांप गया। उसने रो-रोकर सारा किस्सा कह सुनाया। बौने उसकी सच्ची बातों से इतना खुश हुए कि उन्होंने ढोल पर चिपका हुआ उसका हाथ हटा दिया। कहा—"डरो मत, तुम को कोई तकलीफ नहीं होगी। दरअसल तुमने गलती यह की कि ढोल बजा दिया। इस ढोल को सिर्फ हम बजाते हैं। कोई मनुष्य अगर इस ढोल को बजाएगा, तो उसका हाथ चिपक जाएगा। हम भी उसे कड़ी सजा देंगे।"

गंगा की हिम्मत फिर वापस लौट आई। अब उसका डर दूर हो गया था।

बौनों ने उसे सोने के कई सिक्के दिए और कहा—"तुम इन सिक्कों को अपनी जरूरत में खर्च करना। तुम इन्हें खर्च करोगे, लेकिन खर्च करने के बाद ये सिक्के ऐसे के ऐसे तुम्हारे पास रहेंगे।" बौनों ने गंगा को यह भी चेतावनी दी कि वह ढोल का यह भेद किसी को नहीं बताएगा। अगर उसने गलती से भी ऐसा किया, तो ये सिक्के उसके पास नहीं रहेंगे।

गंगा बौनों से मिले सिक्के लेकर अपने घर आया और हंसी-खुशी के साथ अपने परिवार का पालन करने लगा।

बनेगा राजा

— रमेश आजाद

प्रसेनजित नाम का एक राजा था। वह बहुत ही महत्वाकांक्षी था। अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए हमेशा युद्ध किया करता था। एक बार उसने पड़ोसी राजा को हराकर उसका बहुत-सारा माल लूट लिया। हारे हुए राजा से एक लाख स्वर्ण मुद्राएं लेकर, उसे राजा बने रहने दिया। हारे हुए राजा ने प्रसेनजित को अपना प्रिय श्वेत अश्वों का एक रथ भी दिया। उस रथ पर ही प्रसेनजित अपने सैनिकों के साथ लौट चला।

उस रथ में जुते घोड़ों को अपने राजा से बहुत लगाव था। इसलिए जब प्रसेनजित उसे हांककर ले गया, तो थोड़ी देर बाद ही रथ बेकाबू होने लगा। प्रसेनजित ने उसे रोकना चाहा। लेकिन वह सैनिकों को पीछे छोड़ता हुआ दूर निकल कर, आंखों से ओझल हो गया।

इस तरह घोड़े रथ और राजा को लेकर एक जंगल में जा पहुंचे। रथ की गति में कमी नहीं आई थी। राजा भी बदहवास हो रहा था। तभी एक गड्ढे में रथ का पहिया फंस गया और राजा नीचे गिर पड़ा। गिरते ही वह बेहोश हो गया।

जंगलवासी भीलराज उधर से आ रहा था। वह राजा को उठाकर अपने घर ले आया। उपचार के बाद राजा को होश आ गया, मगर वह इतना घायल हो गया था कि चलना-फिरना भी मुश्किल था।

भीलराज की पत्नी और पुत्री ने उसकी खूब सेवा की। भीलराज की पुत्री किरातिनी पर राजा मोहित हो गया। स्वास्थ्य लाभ होते ही प्रसेनजित ने भीलराज के आगे उसकी पुत्री किरातिनी से विवाह का प्रस्ताव रखा। भीलराज ने राजा के आगे शर्त रखी। कहा कि अगर राजा किरातिनी के पुत्र को ही राजगद्दी पर बैठाने का वचन दें, तभी वह अपनी पुत्री का विवाह कर सकता है अन्यथा नहीं। किरातिनी के रूप लावण्य पर राजा इस कदर मोहित था कि उसे भीलराज की हर शर्त मंजूर थी।

राजा की एक रानी पहले से थी, जिसका पुत्र था अभय। किरातिनी से भी एक पुत्र हुआ चिलाति।

दिन बीते, दोनों पुत्र बड़े हो गए। अभय बलवान था, बुद्धिमान भी। वह जनता में भी लोकप्रिय हो रहा था, जबकि चिलाति दिन-रात नाच-रंग में मस्त रहता। प्रजा के साथ बेरहमी से भी पेश आता। अभय का बड़ा होना और प्रजा में लोकप्रिय होना, दोनों बातों से राजा चिंतित था कि चिलाति को गद्दी किस तरह सौंपे ?

राजा का मंत्री समझदार और नेक व्यक्ति था। उसने राजा से कहा — ''राज्य को तो योग्य राजा ही चाहिए। वरना आपके बाद राज्य का बचना मुश्किल है। इसलिए आप दोनों कुमारों की परीक्षा ले लें, जो सफल हो उसे ही गद्दी सौंपें। इससे आपके मन का क्षोभ भी मिटेगा।''

इधर नगर में आए दिन आग लगने की घटनाएं होने लगीं। राजा ने आदेश दिया कि अपने घरों की सुरक्षा खुद करें। जिसके घर में अब आग लगेगी, उसे नगर छोड़कर जाना पड़ेगा।

एक दिन की बात है। रसोइए की गलती से राजमहल में ही आग लग गई। महल धू-धूकर जलने लगा। राजा ने अपने बेटों से कहा कि जिसके हाथ जो धन-दौलत लगे,वह लेकर निकल ले। अपनी-अपनी समझ से सबने मूल्यवान से मूल्यवान वस्तुएं ले लीं और भाग निकले'। चिलाति हीरे-जवाहरात से भरी एक पेटी उठा लाया। मगर अभय ने भंभावाद्य लिया। भंभावाद्य राजाओं का राजचिन्ह भी होता था। इसी को फूंककर दिग्विजय की मंगल कामना करके, चढ़ाई पर जाते थे। इसलिए किसी भी राजा को सबसे पहले इसी की रक्षा करना आवश्यक था।

आग की लपटें शांत नहीं हुईं। ब्राह्मणों ने बताया कि यदि भावी राजा इस जलते महल से राज सिंहासन उठा लाए, तो आग पर काबू पाया जा सकता है। दरअसल यह किरातिनी का ब्राह्मणों के साथ मिलकर अभय के खिलाफ किया हुआ षड्यंत्र था। हुआ भी यही। चिलाति ने जाने से मना कर दिया, तो अभय ने राज सिंहासन लाने का वचन दिया। वह शस्त्र शिल्पी

लोहार के पास गया। वहां उसे अपना कीमती हार देकर,बदले में पूरे जिस्म के लिए फौलादी कवच और शिरस्त्राण लेकर लौटा।

सारा राजमहल धधक रहा था। आग की गर्मी से महल के पास तक जाना मुश्किल था। मगर अभय बड़े धीरज के साथ महल में प्रवेश कर गया। किरातिनी प्रसन्न थी। चिलाति भी सोच रहा था कि अब तो कांटा दूर हुआ। राज्य उसी को मिलेगा। प्रसेनजित चिंतित था। लेकिन अभय सुरक्षित लौट आया। उसके सिर पर राज सिंहासन रखा था। राज सिंहासन को उस प्रचंड आग में भी कुछ नुकसान नहीं पहुंचा था, यह भी कम आश्चर्य की बात न थी।

राजा प्रसेनजित को अपनी राजाज्ञा के कारण नगर त्यागना पड़ा। वह तप करने जंगल में चला गया। नगर से कुछ योजन दूर वह जिस अरण्य में गया था, नगरवासी भी वहीं जाकर बस गए। तभी से उस जगह को राजगृही कहने लगे। आज भी वह जगह राजगृह या राजगीर के नाम से जानी जाती है। ●

Scanned with CamScanner

भर-भर बूंद

—सुरेश के. अंजुम

उग्र नगर का राजा उग्रसेन था। वह दुष्ट था। तरह-तरह से प्रजा को परेशान करता। इसलिए प्रजा उसके अत्याचार से दुखी थी।

एक बार उग्रसेन के दिमाग में एक बात आई। वह चाहता था कि उसे कोई व्यक्ति ऐसी कहानी सुनाए जो कभी खत्म न हो। उसने पूरे राज्य में घोषणा करा दी—जो व्यक्ति राजा को कभी न समाप्त होने वाली कहानी सुनाएगा, उसे बहुत-सा पुरस्कार दिया जाएगा। यदि वह आदमी कहानी न सुना पाया, तो उसे मृत्यु दंड मिलेगा।

राजा की घोषणा सुन प्रजा दंग रह गई। कोई भी व्यक्ति ऐसी कहानी न जानता था। राजा ने हर घर के एक सदस्य को कहानी सुनाने का आदेश दे दिया। अब हर परिवार से एक सदस्य राजा को कहानी सुनाने जाता। कहानी समाप्त होते ही राजा के आदेशानुसार, सैनिक उसका वध कर देते।

इससे प्रजा में आतंक छा गया। उसी नगर में वेदपाल नाम का एक किसान रहता था। परिवार में उसकी पत्नी कमला तथा बेटा विजयसेन था। लड़का बुद्धिमान था।

एक दिन सैनिक वेदपाल के घर पहुंचे। सैनिकों ने उसे राजा की घोषणा सुनाई। घोषणा सुन किसान घबरा गया। पर विजयसेन विचलित न हुआ बोला—"पिता जी, आप चिंता न करें। राजा को कहानी सुनाने मैं जाऊंगा। मेरी कहानी सुन कर राजा अवश्य प्रसन्न होंगे। आप मुझे आशीर्वाद दें। मैं चलता हूं।"

"नहीं बेटा, तुम्हें छोड़कर हम कैसे जीवित रहेंगे? अब तक काफी लोग मारे जा चुके हैं।"—मां-बाप ने उसे समझाया।

"मां, तुम मेरी चिंता न करो। मैं सकुशल वापस आ जाऊंगा। मुझे पूरा विश्वास है कि राजा मेरी कहानी सुन प्रसन्न हो जाएंगे।"—विजयसेन ने अपनी बात दोहराई।

वह माता-पिता को समझाकर सैनिकों के साथ महल की ओर चल दिया।

सैनिकों ने विजयसेन को राजा के सामने खड़ा कर दिया। विजयसेन ने राजा को प्रणाम किया।

"क्या नाम है तुम्हारा लड़के?"—राजा ने अपनी मूंछों पर ताव देते हुए कहा।

"महाराज, मेरा नाम विजयसेन है।"—हाथ जोड़कर विजयसेन ने उत्तर दिया।

"ठीक है, क्या तुम मेरी घोषणा के बारे में जानते हो?"—राजा ने पूछा। "हां महाराज, यही कि आपको एक कभी न समाप्त होने वाली कहानी सुनानी है।"—विजयसेन ने कहा।

राजा ने कहा—"यदि तुमने मुझे अपनी कहानी से प्रसन्न कर दिया, तो मैं तुम्हें पुरस्कार दूंगा, नहीं तो मृत्यु दंड मिलेगा।"

"महाराज, मैं समझ गया। एक प्रश्न पूछना है। यदि आप आदेश दें, तो पूछूं?"—विजयसेन ने कहा। "अवश्य पूछो।"—राजा ने थोड़ा नरम होकर कहा।

"महाराज, यदि आप कहानी पूरी न सुन सके अथवा किसी कारण से आप सुनना पसंद न करें, तो मैं क्या करूंगा?"—विजयसेन ने पूछा

"बात बिलकुल ठीक है। यदि मैं किसी वजह

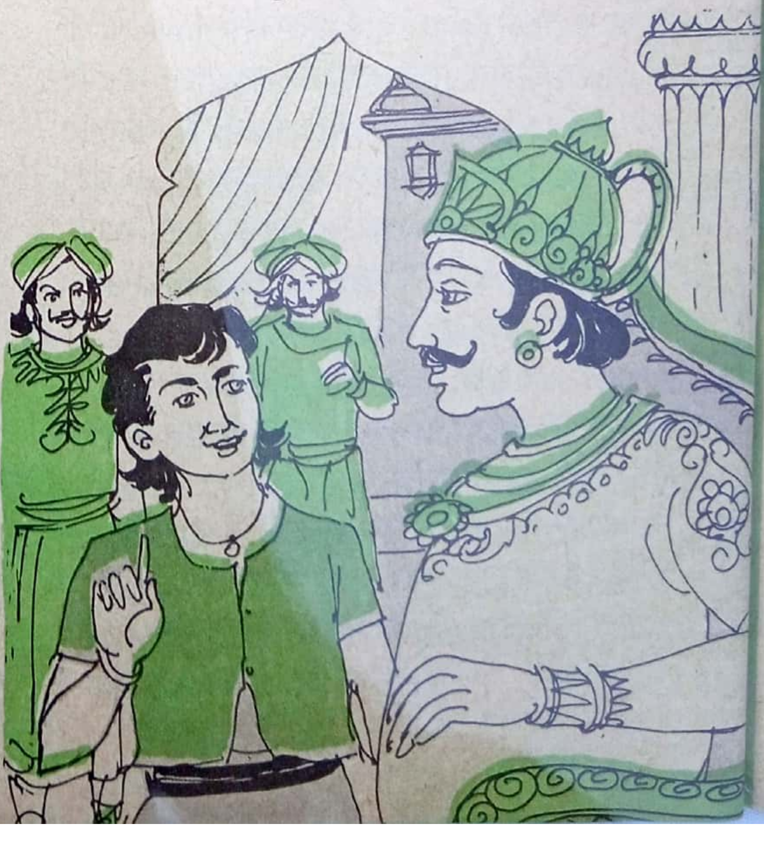

से कहानी न सुन सका, तो भी तुम्हें पुरस्कार मिलेगा। तभी यह प्रतियोगिता भी खत्म हो जाएगी। और भी कुछ पूछना है, तो पूछ सकते हो।''—राजा ने कहा

''महाराज, मैं इतना ही जानना चाहता था।''—विजयसेन ने उत्तर दिया।

राजा की अनुमति मिलते ही विजयसेन ने कहानी सुनानी शुरू कर दी—''महाराज, एक बार चंद्रनगर में अकाल पड़ा। नगर के तालाब और नदियां सूख गईं। चारों तरफ हाहाकार मच गया।

एक दिन कुछ पशु-पक्षियों ने एक सभा की। सभा का अध्यक्ष शेर को बनाया गया। वन का राजा होने के कारण शेर चिंतित हो गया। हाथी ने कहा—'साथियो, हमारे नगर के पास सूर्यनगर की रोहिणी नदी में अभी काफी जल है। यदि हम उस जल को लाकर अपने नगर के सूखे तालाबों में भर दें, तो हम काफी समय तक जिंदा रह सकते हैं। लेकिन रोहिणी नदी का जल हमारे नगर के तालाबों में कौन भर सकेगा? अध्यक्ष से प्रार्थना है कि वह किसी पशु या पक्षी को रोहिणी नदी से जल लाकर यहां के तालाबों को भरने का कार्य सौंप दें।'

हाथी का प्रस्ताव सुन शेर ने कहा—'मैं चील को आदेश देता हूं कि वह रोहिणी नदी का जल अपनी चोंच में भर-भरकर लाए और यहां के तालाबों को भर दें।'

शेर के आदेश को टालने का साहस चील में न था।

लाचार होकर चील रोहिणी नदी के तट पर पहुंची। उसने अपनी चोंच में एक बूंद नदी का जल भरा। वह एक बूंद जल लेकर तालाब पर पहुंची। उस तालाब में जल डाल दिया। फिर उड़ कर नदी पर पहुंची। एक बूंद जल भरा, तालाब में डालने आई। फिर वह उड़ी। रोहिणी नदी पर पहुंची। वहां उसने एक बूंद जल चोंच में भरा। उसे लेकर आई और फिर...।''

''बंद करो यह कहानी। कब तक तालाब भरा जाएगा?''—राजा बौखलाया।

''महाराज, चील की चोंच में एक बूंद जल ही

समा सकता है। तालाब भरने के लिए, तो कई बार चील को नदी पर आना-जाना पड़ेगा। अभी तो एक तालाब भी नहीं भर पाया है। चील को तो कई तालाब और नदियों को जल से भरना है।''

''नहीं, मुझे तुम्हारी यह कहानी नहीं सुननी। ऐसी कहानी सुनने के लिए मेरे पास समय नहीं है। बंद करो यह कहानी और चले जाओ मेरे सामने से।''—राजा ने चिल्लाकर कहा।

—''महाराज, अपराध क्षमा हो। आप प्रतियोगिता के नियमों को स्वयं कैसे तोड़ सकते हैं?''

विजयसेन की बात सुनते ही राजा को कुछ याद आया। उसका क्रोध तुरंत काफूर हो गया। वह बोला—''विजयसेन, मैं तुम्हारी बुद्धिमानी से बहुत प्रसन्न हूं। तुम जीते, मैं हारा। मैं तुम्हें पुरस्कार अवश्य दूंगा। भविष्य में इस प्रकार की कोई भी प्रतियोगिता नहीं होगी। जो चाहो, मांग लो।''

विजयसेन बोला—''महाराज, आपके आशीर्वाद से मेरा परिवार फल-फूल रहा है। मुझे कुछ नहीं चाहिए।'' राजा ने कहा—''विजयसेन, आज तुम्हें कुछ मांगना ही होगा।''—''महाराज, यदि ऐसी ही बात है, तो आप प्रजा का पुत्र की तरह पालन करें, ताकि कोई भी दुखी न रहे।''

—''विजयसेन, आज से मैं प्रजा के हित का पूरा-पूरा ख्याल रखूंगा। कोई कष्ट—तकलीफ उन्हें न दूंगा।'' यह सुन सबके चेहरे खिल गए। विजयसेन मुसकराता हुआ महल से बाहर निकल गया।●

Scanned with CamScanner

पानी लाओ

—मालती सिंह

एक गांव में सोहन नाम का एक वृद्ध लकड़हारा रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी व दो बेटियां थीं। वह लकड़ी बेचकर किसी तरह अपना व अपने परिवार का भरण-पोषण करता था।

रोज की भांति एक दिन सुबह वह कुल्हाड़ी लेकर जंगल में लकड़ी काटने गया था। सूखी लकड़ियों की खोज में वह दूर जंगल में चला गया था। तभी उसकी नजर पेड़ के नीचे लेटे एक युवक पर गई। लकड़हारे ने पास जाकर देखा। युवक की नब्ज धीरे-धीरे चल रही थी। वह भूख-प्यास से बेहोश हो गया था।

'ओफ़ ! इस जंगल में कहीं पानी भी तो नहीं है। गांव से पानी लाते-लाते यह दम तोड़ देगा।' —सोहन मन ही मन बड़बड़ाया।

तभी उसकी आंखों में चमक आ गई। वह एक ओर दौड़ पड़ा। कुछ ही दूरी पर एक नारियल का वृक्ष था। सोहन ने सिर उठाकर देखा, वृक्ष पर मात्र तीन फल बचे थे। उसने अपने पैरों में रस्सी बांधी और जल्दी-जल्दी पेड़ पर चढ़ गया। उसने तीनों नारियल के फल तोड़े और फुर्ती से नीचे उतर आया।

जब वह नारियल लेकर युवक के पास पहुंचा, तो देखा, उसे होश आ चुका था। उसके मुंह से बड़ा ही धीमा शब्द निकल रहा था—"पानी...पा...नी।"

सोहन ने झटपट अपनी कुल्हाड़ी से एक नारियल छील डाला। फिर उसमें छेद किया और युवक के मुंह में लगा दिया। युवक गटागट पानी पी गया। सोहन ने बाकी दो फलों का भी पानी उसे पिला दिया।

कुछ ही देर बाद युवक में ताजगी आ गई और वह उठ बैठा। वह सोहन को अपलक देख रहा था। उसे पिछले दिन वाली, घटना याद हो आई। वह अपने साथियों के साथ जंगल में शिकार करने आया था। एक हिरण का पीछा करता हुआ घने जंगल में चला गया था। उसके साथी काफी पीछे छूट गए थे। तभी शाम ढलने लगी। उसने अपने साथियों को बहुत आवाज लगाई, लेकिन उनका कहीं अता-पता नहीं था। प्यास से उसका कंठ सूखने लगा था। वह घोड़े से एक पेड़ के नीचे उतरा। घोड़े को पेड़ से बांधा और दोनों हाथ सिर पर रख बैठ गया। उसे चक्कर आने लगा था। कुछ ही देर में उस पर बेहोशी छाने लगी और वह औंधे मुंह जमीन पर गिर गया था।

"आप कौन हैं बाबा ? और मेरा घोड़ा कहां गया ?"–युवक चारों ओर नजरें दौड़ाकर बोल पड़ा।

"मैं लकड़हारा हूं बेटे।"—सोहन ने कहा—"जंगल में सूखी लकड़ियां खोज रहा था कि तुम पर नजर पड़ गई। मैं समझ गया, जरूर तुम्हारी यह हालत भूख-प्यास के कारण हुई है। लो, यह गरी खा लो। तुम्हें अवश्य भूख लगी होगी।"

फिर कुछ सोचते हुए सोहन ने कहा—"लेकिन यहां तो कोई घोड़ा नहीं था।"

तभी उन्हें पास ही कहीं घोड़े की हिनहिनाहट सुनाई दी। दोनों उठ खड़े हुए और उस दिशा में चल दिए, जिधर से हिनहिनाहट की आवाज आई थी। कुछ ही दूरी पर लंबी झाड़ियों के उस पार एक सफेद घोड़ा दूब चरता हुआ दिखाई दिया।

"यही है मेरा घोड़ा।"—युवक ने खुशी से कहा और घोड़े की लगाम थाम ली। फिर वह आवेश में आकर बोला—"बाबा, आज अगर आप नहीं होते, तो मैं अवश्य मर जाता। आपने मुझे नया जीवन दिया है।" फिर उसने अपना परिचय दिया कि वह दुधई गांव के जमींदार चंद्रभूषण सिंह का बेटा है। गले से सोने की जंजीर निकाल कर सोहन की ओर बढ़ाता हुआ बोला— "यह छोटा-सा उपहार आप स्वीकार करें।"

यह कहकर युवक उसे अभिवादन कर, घोड़े पर बैठकर अपने गांव की ओर चल पड़ा। ●

Scanned with CamScanner

नहीं चाहिए धन

— के. राधाकृष्णन अयिरूर

केरल में एक आदमी रहता था। नाम था पाकनार। वह भगवान शिव का भक्त था।

वह जंगल से बांस काट लाता। उनसे सूप बनाता। घर-घर जाकर सूप बेचता। जो कुछ मिलता, उससे निर्वाह करता था।

आमदनी थोड़ी थी। पेट भर खाना कभी-कभी नसीब होता था। पत्नी उसे खरी-खोटी सुनाती।

एक दिन शिव और पार्वती घूमते हुए उधर से निकल रहे थे। पाकनार की गरीबी पार्वती से देखी नहीं जा रही थी। वह पति से बोलीं— "आप भक्तों की रक्षा करने वाले हैं। आप बहुतों के दुःख-दर्द दूर करते रहते हैं। लेकिन आपने अब तक पाकनार का कष्ट दूर क्यों नहीं किया ?"

शिवजी ने जवाब दिया— "पाकनार को धन दे सकता हूं। लेकिन वह लेने को तैयार नहीं। उसके लिए धन जहर है।"

शिवजी की बात पर पार्वती को विश्वास नहीं हुआ। शिवजी उनके मन को जान गए। वह पार्वती के साथ धरती पर पहुंचे। पाकनार जहां रोज बांस काटने जाता था, वहां शिवजी ने बांस के अंदर मुहरें और रत्न भर दिए। सुबह होते-होते दोनों कैलाश पर्वत पर वापस चले गए।

अगले दिन सुबह पाकनार कुल्हाड़ी लेकर बांस काटने जंगल में पहुंचा। उसने बांस पर कुल्हाड़ी चलाई। तभी उसमें से मुहरें और रत्न निकलकर जमीन पर गिर पड़े। उसने कुल्हाड़ी वहीं फेंकी। वह घबरा गया। सोचा— 'मैं इस धन का क्या करूंगा ? मैं लालच करूं, यह ठीक नहीं। जिसे जरूरत होगी, वह इन्हें ले जाएगा। लगता है, शिवजी मेरी परीक्षा ले रहे हैं।'

फिर वह भाग खड़ा हुआ। उसे रास्ते में दो शिकारी मिले। उन्होंने इस तरह भागने का उससे कारण पूछा। उसने कहा— "आज मैंने जंगल में खतरनाक चीज देखी है। कुछ दूर और जाने पर आप दोनों भी उसे देख सकते हैं।"

शिकारी उसे देखते रह गए। उन्होंने सोचा कि शायद पाकनार किसी बाघ या शेर की बात कर रहा है। वे पूरी तैयारी के साथ आगे बढ़े। लेकिन कुछ दूर पर उन्हें सोने की मुहरें और चमकते रत्न दिखाई दिए। उन्होंने मुहरें और रत्नों को बोरे में भर लिया। लेकिन उन्हें ख्याल आया कि दिन के समय मुहरें ले जाना खतरे की बात है। कोई देख भी सकता है। इसलिए उन्होंने रात होने तक वहीं रुकने का निश्चय किया।

एक शिकारी पहरा देने लगा। दूसरा खाना पका रहा था। पहले शिकारी के मन में लालच आ गया। उसने उसे जान से मारने की सोची। दूसरा शिकारी भी पहले शिकारी को मारना चाहता था। वह सारा धन हड़पना चाहता था। उसने भोजन में जहर मिला दिया।

खाना बन गया, तो पहला शिकारी खाने बैठ गया। दूसरा खाना परोसने झुका। मौका मिलते ही पहले शिकारी ने उस पर भाले से वार कर दिया। शिकारी वहीं ढेर हो गया।

पहला शिकारी बहुत खुश था। वह खाना खाने लगा। खाने में तो जहर था। खाते ही वह लुढ़क गया। दोनों मर गए थे।

उधर पाकनार खाली हाथ घर लौटा, तो पत्नी को क्रोध आ गया। बोली— "तुम कुल्हाड़ी कहां छोड़ आए ?"

पाकनार ने कहा— "आज मैंने जंगल में एक खतरनाक चीज देखी। वहां मुहरें और रत्न पड़े थे। कुल्हाड़ी वहीं छोड़कर घर चला आया। भगवान शिव मुझे धन देना चाहते हैं। पर मैं धन नहीं लूंगा। जबरदस्ती धन देंगे, तो भी मना कर दूंगा।"

कुछ दिन बाद फिर शिव और पार्वती पाकनार को देखने निकले। पाकनार का घर पहले जैसा ही था। शिव ने कहा— "देवी ! मैं तो पहले ही कहता था कि पाकनार धन लेगा ही नहीं। इसकी रुचि पूजा-पाठ में ही है।" बातें करते दोनों कैलाश पर्वत की ओर चल दिए। ●

Scanned with CamScanner

चटपट

● अध्यापक —राजू, एक कुम्हार के पास चार घड़े थे। उसमें से एक फूट गया, बताओ अब कितने बचे ?
राजू —अभी बताने से क्या फायदा ? और फूट जाने दीजिए, इकट्ठा ही बता दूंगा।

● पुलिस वाला —अरे, तुम कैसी साइकिल रखते हो ? खट-खट करती है।
साइकिल वाला —साहब, साइकिल का ब्रेक खराब हो गया है।

● अध्यापक —विनय, क्या तुम गरीबी को मिटा सकते हो ?
विनय —आप बोर्ड पर लिखिए तो सर, मिटा दूंगा।

● मोहन —तुमने मुझे थप्पड़ क्यों मारे ?
सोहन —थोड़ी देर रुक तो जाओ, घूंसे भी मारूंगा।

● मरीज —पता नहीं क्यों, रात में नींद नहीं आती।
डाक्टर —दिन में सो लिया करो।

● विजय —कमल, तुमने घर के सामने कीचड़ क्यों कर रखा है ?
कमल —बड़े भोले हो। जानते नहीं, कीचड़ में ही कमल खिलता है।

● ग्राहक —तुमने पैंट छोटी कर, सारा कपड़ा बर्बाद कर दिया।
दर्जी —माफ कीजिएगा, आप गलत जगह आ गए। मैं हाफ पैंट का विशेषज्ञ हूं।

● मालकिन —अरे रामू, आज तुम काम पर इतनी जल्दी आ गए ?
रामू —मालकिन, मैं तो कल शाम का बचा काम करने आया हूं।

● अध्यापक —विमल, तुम्हारे जूते ढीले क्यों हैं ?
विमल —आज मैंने गलती से पिता जी के जूते पहन लिए हैं।

● मां —बेटा, तुमने रिंकू की शर्ट के बटन क्यों तोड़ दिए ?
बेटा —मां, क्या करता, पूरी शर्ट मेरे हाथ में आई नहीं। वरना आपको यह कहने का मौका ही नहीं मिलता।

● सुनील —यदि तुम इस पेड़ से फल तोड़ दो, तो पांच रुपए इनाम।
अनिल —बेवकूफ न बनाओ। माली की लाठी से पैर टूट गया, तो क्या पांच रुपए में इलाज हो जाएगा ?

● मां —बेटा, किसी की नकल करना अच्छी बात नहीं।
बेटा —ठीक है, कल से मैं अपनी ही नकल करूंगा।

● मां —बेटा, तुमने गिलास जमीन पर पटककर क्यों तोड़ दिया।
बेटा —मां, मैं तो इस गिलास की मजबूती परख रहा था।

● एक पहलवान —चुप हो जाओ, वरना टांगें तोड़ दूंगा।
दूसरा पहलवान —चुप मैं फिर भी नहीं हूंगा, जोर-जोर से रोने और लगूंगा।

तेनालीराम २६४

सही निशाना

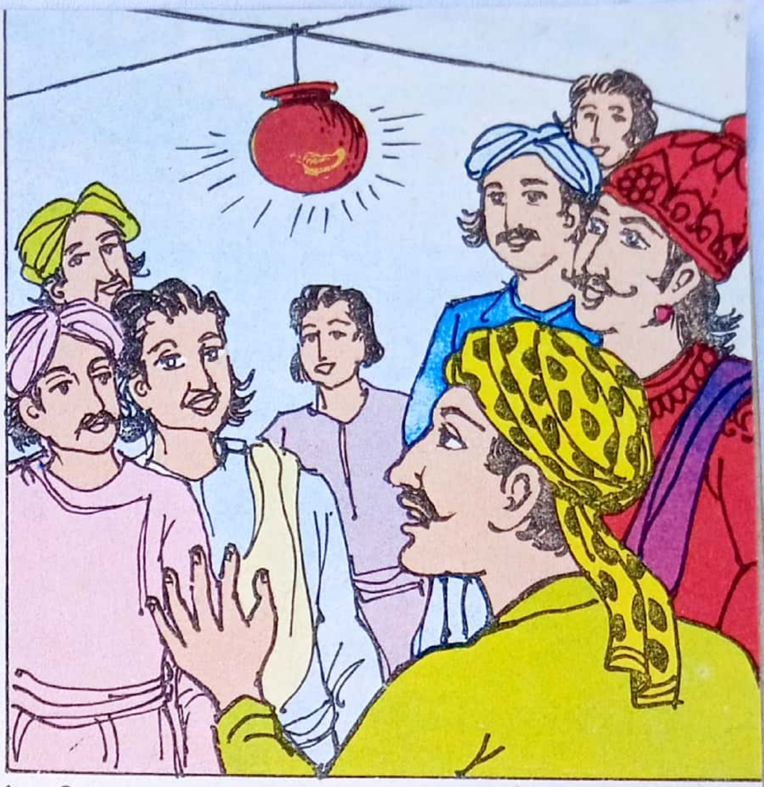

विजय नगर में दशहरा बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता था। अनेक प्रतियोगिताएं होती थीं। एक विचित्र प्रतियोगिता राजा कृष्णदेव राय की ओर से होती थी। उसमें विजयी प्रतियोगी को सौ स्वर्ण मुद्राएं प्रति माह दी जाती थीं।

इस बार एक मैदान के चारों कोनों में एक एक बांस गाड़ा गया। बासों से सूत की रस्सियां आड़ी बांधी गईं। बीचों बीच एक खाली मटका लटका दिया गया। घोषणा की गई कि जो अकेला व्यक्ति, पैदल जाकर उस मटके को उतार कर राजा के पास लाएगा, विजयी होगा। यदि किसी से मटका फूट गया, तो उसे दंड दिया जाएगा।

लोग असमंजस में थे। न बांस पर चढ़कर मटके तक पहुंचा जा सकता था, न उसे हाथ से छुआ जा सकता था। डोरी काट कर मटके को लपकने में उसके फूट जाने का भय था। कोई आगे न बढ़ा।

सहसा भीड़ में से एक युवक आगे बढ़ा। उसके हाथ में एक जाल था। उसने जाल के सिरों को चारों बांसों से पांच फुट ऊपर बांध दिया। फिर तीर का निशाना साध एक ही वार में मटके से बंधी डोरी काट दी। मटका जाल पर गिरा। टूटा नहीं। देखने वाले हत्प्रभ रह गए।

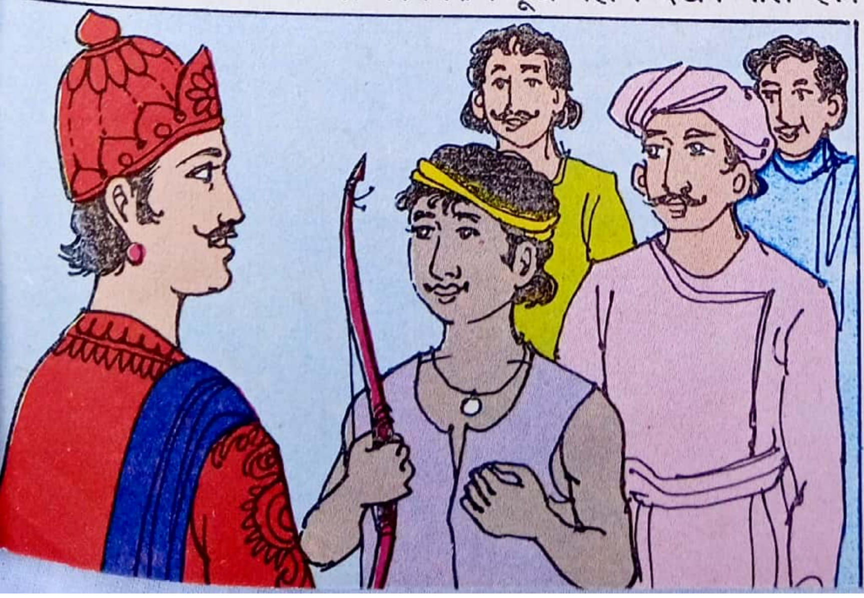

राजा ने युवक को विजयी घोषित करते हुए उसकी चतुराई की प्रशंसा की, तो युवक हाथ जोड़ कर बोला—"महाराज, क्षमा करें। मैं तो सीधा-सादा आदिवासी हूं। तीरंदाजी सीखना चाहता था, मगर उसका खर्चा नहीं उठा पा रहा था। तेनालीराम जी ने मेरी सहायता की। यह सारी चतुराई इन्हीं की है।"

राजा और भी खुश हुए। तेनालीराम को शाबाशी दी। युवक को अपनी तीरंदाजी सेना में भरती कर लिया।

अब मौज-मस्ती भरे साहसिक खेल!

मैगी क्लब के सदस्यों के लिए मुफ़्त उपहार

मैगी रेडर्स ऑफ़ दि रेड स्टार गेम में ग्रहों पर विजय पाओ.

आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल होकर मैगी के मौज-मस्ती भरी चमत्कारी दुनिया में रंग जमाओ!

बस यह लोगो [MAGGI] मैगी नूडल्स के 5 रैपर के सामने वाले हिस्सों से काटकर हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों के बीच तुम्हें मैगी क्लब की ओर से तुम्हारी पसंद का मस्ती-भरा उपहार मिल जाएगा.

अपनी पसंद का उपहार मंगाते समय अपना नाम, पता और जन्म-तिथि ज़रूर लिख भेजना. और हां, अगर तुम पहले से ही मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिख भेजना. यदि तुम अभी तक सदस्य नहीं बने हो तो यह मौका मत चूकना! अपना विवरण भेजते समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. तुम्हारे उपहार के साथ हम तुम्हारा मुफ़्त मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी भेज देंगे.

मुफ़्त मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमिल्स' क्विज पुस्तिका!
अपने हर 2 उपहारों के साथ तुम मुफ़्त ले सकते हो मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमिल्स' क्विज पुस्तिका.

हमाार पता है
मैगी क्लब
पो.ओ. बॉक्स 5788, नई दिल्ली-110 055

एक और मौका: अगर अभी तक तुमने मैगी 'बर्डहाउस' नहीं लिया है तो तुरन्त ले लो!

HTA 7778HIN

Scanned with CamScanner

आओ जश्न मनाएं, गीत कैम्पको के गाएं!

"यह दूधभरी, यह क्रीमभरी, यह स्वादभरे सपनों से भरी.
यह मेरी मनभाती चॉकलेट. कैम्पको क्रीमी मिल्क चॉकलेट!"

भारत के सबसे बड़े, सबसे आधुनिक प्लांट में निर्मित.
कैम्पको लिमिटेड, मेंगलोर.

R K SWAMY/BBDO CL 10117 HN

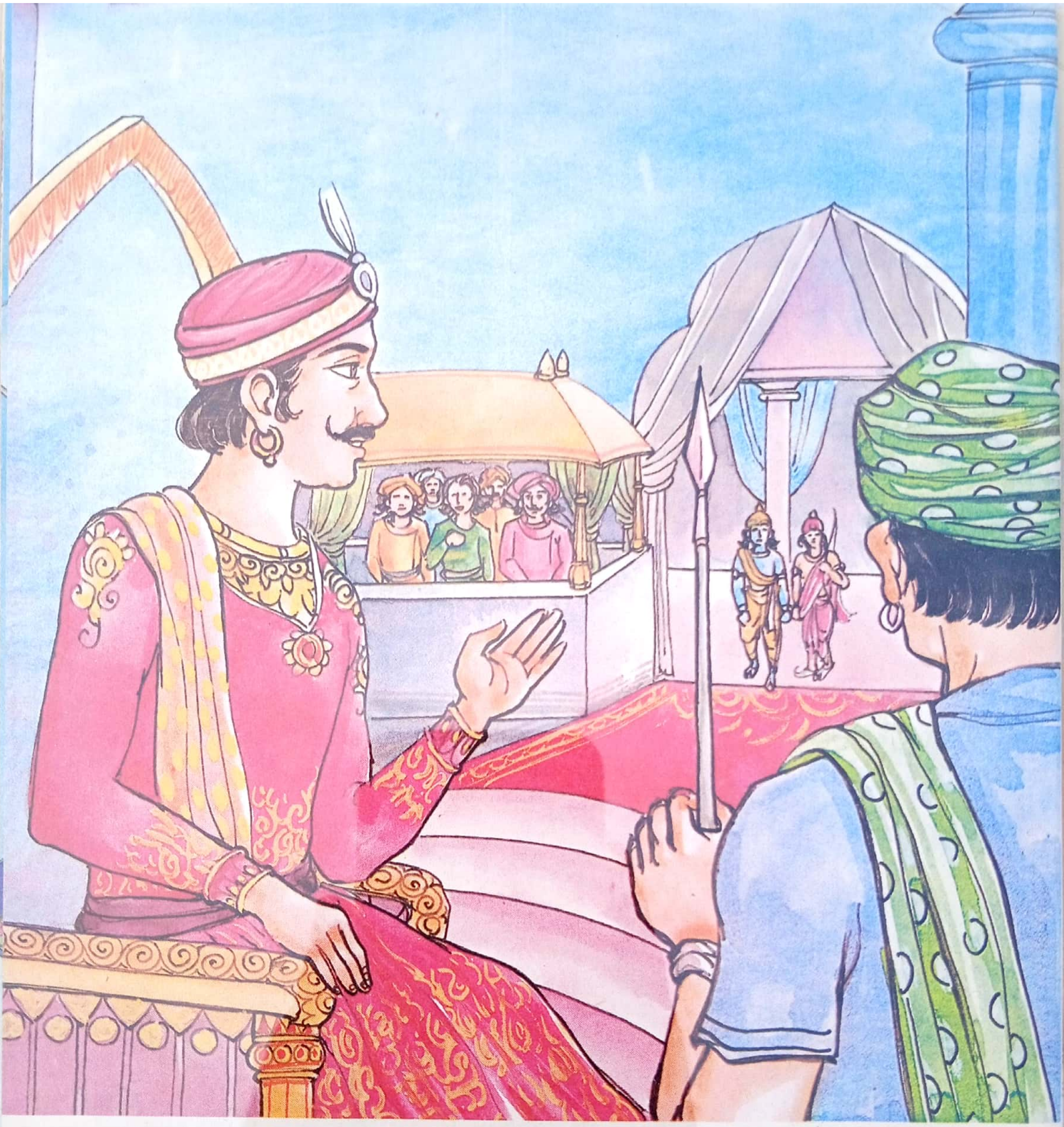

रथ आया

—डा. सत्येंद्र वर्मा

कौसल देश की राजकुमारी थी सत्या। उसके रूप और गुण की चर्चा दूर-दूर तक थी। अनेक राजा और राजकुमार उससे विवाह करने के इच्छुक थे। सत्या के पिता कौसल के राजा धन और शक्ति दोनों से ही संपन्न थे। सत्या के बड़े होने पर राजा को उसके लिए योग्य वर खोजने की चिंता हुई। उन्होंने सोचा —'क्यों न स्वयंवर द्वारा सत्या के लिए योग्य वर का चयन किया जाए।'

कौसल के राजा ने आसपास के सभी राज्यों में घोषणा करवाई कि राजकुमारी सत्या का विवाह उस राजा अथवा राजकुमार से होगा, जो उनकी गौशाला के

सात सांडों को एक जुए में बांध देगा। स्वयंवर के लिए दिन भी निश्चित कर दिया गया। साथ-साथ विवाह की तैयारी भी होने लगी। अतिथियों के लिए शानदार अतिथि गृह बनवाए गए। उनके भोजन, मनोरंजन आदि प्रत्येक सुख-सुविधा का प्रबंध किया गया। सारे नगर को दुल्हन जैसा सजा दिया गया।

स्वयंवर के दो दिन पहले से ही अतिथियों का आगमन आरंभ हो गया। सभी इस आशा के साथ आए थे कि स्वयंवर में उन्हीं की जीत होगी।

स्वयंवर के दिन सभी राजा और राजकुमार कीमती पोशाकों और हीरे-जवाहरात के आभूषण पहनकर स्वयंवर-स्थल पर उपस्थित हुए। सभी को सम्मान के साथ बैठाया गया। मैदान के बीचोंबीच एक विशेष बाड़ा बनाया गया था। निश्चित समय पर कौसल के राजा, रानी और राजकुमारी सत्या भी वहां आ गए। कौसल नरेश ने सभी को संबोधित करते हुए स्वयंवर की शर्त दोहराई।

नगाड़े, तुरही, ढोल और ताशे से स्वयंवर का शुभारंभ हुआ। सांडों के पिंजड़े बाड़े के अंदर लाए गए। फिर उन भयानक और डरावने सांडों को पिंजड़ों से बाहर निकाल दिया गया। सातों सांड घूर-घूरकर एक दूसरे को देखते रहे। फिर बाड़े में इधर-उधर घूमने लगे। सभी राजा-राजकुमार चाहते थे कि वे ही उन सांडों को जुए में बांधने वाले पहले व्यक्ति हों। अतः अनेक उम्मीदवार एक साथ ही बाड़े में घुसे।

एक राजा, जो अनेक युद्धों को जीत चुका था, सोचता था कि वही सबसे अधिक शक्तिशाली है। एक सांड ने अपने सींग से उसे ऐसा उछाला कि वह औंधे मुंह धरती पर जा गिरा। एक शिकारी राजकुमार ने सोचा कि मैंने अनेक भयानक जंगली जानवरों का शिकार किया है। मेरे लिए ये सांड क्या हैं! किंतु जैसे ही वह आगे बढ़ा, एक सांड ने उसे ऐसा पटका कि उसकी टांग ही टूट गई। किसी दूसरे राजकुमार ने एक सांड का सींग पकड़कर उसे काबू करना चाहा। सांड ने उसे इतनी जोर से झटका दिया कि राजकुमार हवा में कलाबाजियां खाता दूर जा गिरा।

स्वयंवर में उपस्थित सभी उम्मीदवारों को निराश होना पड़ा। सभी खिसियाहट भरे स्वरों में कहने लगे—"कौसल नरेश ने जानबूझकर ऐसी शर्त रखी है। उन्हें चाहिए कि हममें से किसी एक को चुनकर उसके साथ सत्या का विवाह कर दें।" स्वयंवर में किसी के नहीं चुने जाने से कौसल नरेश को भी दुःख हुआ।

तभी स्वयंवर स्थल की तरफ आता हुआ एक रथ दिखाई दिया। रथ में कृष्ण बैठे थे। सारथी के रूप में अर्जुन थे। कृष्ण भी स्वयंवर में भाग लेने वहां आए थे। कौसल नरेश ने कृष्ण का हृदय से स्वागत करने के साथ स्वयंवर की शर्तें बताईं। शर्त को सहर्ष स्वीकार करते हुए कृष्ण ने बाड़े में प्रवेश किया। पराजित राजा और राजकुमार सांस रोके देखते रहे।

कृष्ण जैसे ही बाड़े में घुसे, लगा सातों जंगली सांड सतर्क हो गए हों। वे सिर ताने डरे-डरे दिखाई दे रहे थे। कृष्ण चतुर होने के साथ बलवान भी थे। उन्हें ऐसे जंगली पशुओं से निपटना भी आता था। उन्होंने सांडों की ओर चक्कर लगाए। प्रत्येक सांड को पुचकारा, फिर बिजली की तेजी के साथ सभी को एक ही जुए में कसकर बांध दिया।

स्वयंवर में उपस्थित सभी राजा और राजकुमार स्तंभित रह गए। यह कैसा चमत्कार! दर्शक कृष्ण की जय-जयकार करने लगे। कौसल नरेश ने आगे बढ़कर कृष्ण को गले लगा लिया। राजकुमारी सत्या का हाथ उनके हाथों में सौंप दिया।

पराजित राजाओं में गहरा असंतोष छा गया।

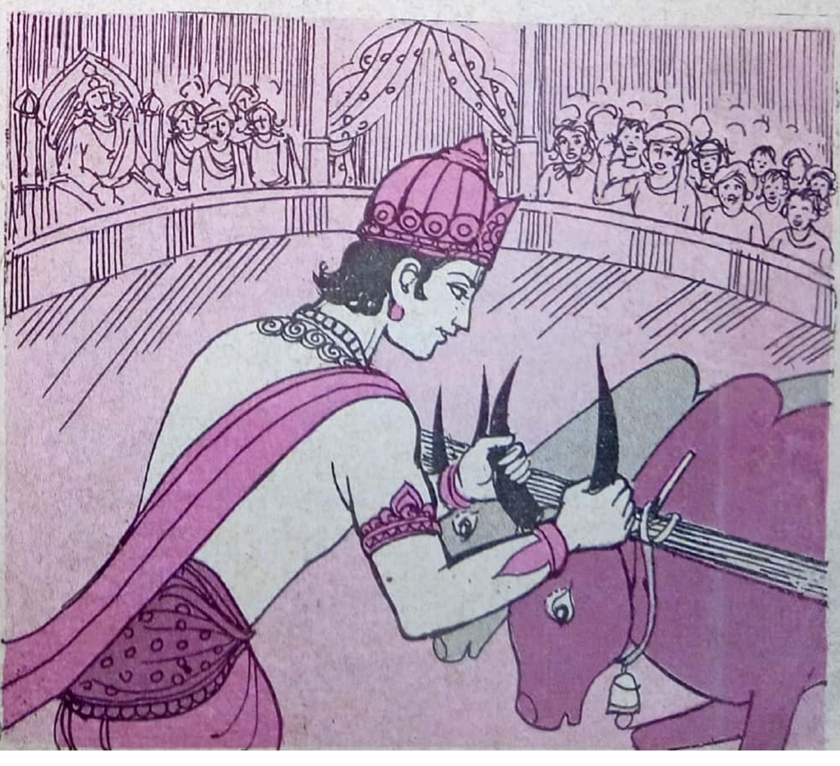

कृष्ण और अर्जुन सत्या को अपने साथ ले ही जा रहे थे कि राजा और राजकुमारों ने उन्हें चुनौती दी। चुनौती की अनसुनी करते हुए कृष्ण ने अर्जुन से कहा —"असंतुष्ट राजाओं से निपटो।"

अर्जुन ने राजाओं को समझाते हुए कहा —"कृष्ण ने सत्या को स्वयंवर में सबके सामने जीता है। इसलिए आप व्यर्थ का विवाद न करें।" राजाओं और राजकुमारों ने अर्जुन की एक नहीं सुनी। वे उन्हें युद्ध के लिए ललकारने लगे।

अर्जुन ने उनकी चुनौती स्वीकार कर, अपने गांडीव से तीरों की वर्षा शुरू कर दी। राजा और राजकुमारों ने भी अपने तीर छोड़े। किंतु अर्जुन और उन राजाओं का क्या मुकाबला ! अर्जुन ने ऐसी सावधानी से तीरों को चलाया कि किसी राजा अथवा राजकुमार की न मृत्यु हो, न उन्हें चोट पहुंचे। अर्जुन के तीरों का निशाना राजाओं के केवल धनुष बने। देखते-देखते सारे राजाओं के धनुष टूट गए। हथियार न होने पर भी राजाओं ने हठ नहीं छोड़ा। अर्जुन ने परेशान होकर ऐसे तीर चलाने शुरू किए, जिससे राजाओं के बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण तार-तार होकर जमीन पर गिरने लगे।

अंत में राजाओं और राजकुमारों को लज्जित होकर मैदान छोड़ना पड़ा।

कृष्ण, शांत मन से इस युद्ध को देखते रहे। युद्ध समाप्त हो गया, तो उन्होंने कौसल नरेश से विदा ली। सत्या के साथ अपने नगर की ओर चल दिए।●

कड़वा बना मीठा

—अवतारसिंह जसवाल

किसी समय उत्तरा पथ में ब्रह्मगुप्त नामक राजा राज करता था। वह नेक और दयालु था। प्रजा को उससे कोई शिकायत नहीं थी, किंतु उसके इकलौते पुत्र माधवगुप्त से प्रजा परेशान थी। माधव अहंकारी, क्रोधी और कड़वे वचन बोलने वाला था।

एक दिन एक महात्मा उस राज्य में पधारे। लोगों ने उनका खूब सत्कार किया और भोजन कराया। भोजन के बाद महात्मा लोगों के दुःख-तकलीफ सुनने लगे। सबकी परेशानी का एक ही कारण था—राजकुमार माधवगुप्त। महात्मा ने लोगों को धैर्य रखने के लिए कहा। वह राजकुमार से मिलने महल की ओर चल दिए।

महात्मा महल में पहुंचे, तो राजकुमार ने उनका स्वागत किया। उन्हें आसन पर बैठाया। कुछ देर बैठने के बाद महात्मा उसे साथ लेकर महल से बाहर आ गए। बाहर सुंदर बगीचा था।

चलते-चलते महात्मा एक जगह रुक गए। फिर उन्होंने क्यारी में लगे एक पौधे को छुआ। उसमें अभी तीन पत्तियां ही आई थीं। उनमें से दो पत्तियों को तोड़ा। राजकुमार को पत्तियां दिखाते हुए बोले—"माधव, ये किस पौधे की पत्तियां हैं ?"

माधव पत्तियां चबाने लगा। उसका मुंह कड़वा हो गया। उसने तुरंत पत्तियों को थूक दिया। क्रोध में पौधे को भी क्यारी से उखाड़कर फेंक दिया।

—"यह तुमने क्या किया राजकुमार ?"

—"पौधे की पत्तियों से मेरा मुंह कड़वा हो गया। महात्मा जी, यह पौधा अभी इतना कड़वा है, तो बड़ा होकर यह और भी कड़वा होगा। इसलिए इसे उखाड़ दिया।"

माधवगुप्त का उत्तर सुनकर महात्मा जी के चेहरे पर मुसकान फैल गई। बोले—"तुम ठीक कहते हो राजकुमार। जो बचपन में ही इतना कड़वा हो, वह बड़ा होकर और भी कड़वा हो जाएगा। इसलिए तुमने नीम के पौधे को उखाड़कर फेंका। राज्य के लोग तुम्हें भी कुछ ऐसा ही समझते हैं। अभी तो तुम राजकुमार हो, राजा नहीं बने। फिर भी प्रजा तुम्हारे क्रोध और अहंकार से परेशान है। राजा बनोगे, तो प्रजा का क्या हाल होगा ?"

महात्मा की बात सुन, राजकुमार सोच में पड़ गया। धीरे-धीरे वह सारी बात समझ गया। राजकुमार ने महात्मा से कहा—"अब मुझसे कोई दुखी नहीं रहेगा।" महात्मा चले गए। उस दिन के बाद प्रजा उससे कभी परेशान नहीं हुई।●

Scanned with CamScanner

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. मैं—रसगुल्ले खा सकता हूं चाचा जी।
(तीन/तीस)

२. लाओ, यह—मुझे दे दो।
(सीटी/सीप)

४. —का यही तो गुण है विद्याधर।
(पारे/पानी)

८. मित्र,—कभी मत छोड़ना।
(हाथ/साथ)

९. ठहरो, कुछ—लो भाई!
(खा/पी)

१२. केरल में **इसे कल्पतरु भी कहते हैं।**

ऊपर से नीचे

३. जो कहना है,—की कसम खाकर कहो।
(गीता/पिता)

५. देखो, मैं टहनी पर—रहा हूं।
(झूल/चल)

६. —सुबह से तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।
(बाबा/बापू)

७. उसे तो बस—की चिंता है मुखिया जी।
(रेल/खेल)

१०. तुम्हारी वह मधुर—कहां खो गई?
(बीन/तान)

११. त्योहार हो, तो हर घर में बनती है।

काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली : २८६

नाम ____________________

आयु ________ पता ____________________

____

नं॰ ज्ञा॰ प॰ २८६

आज़ादी की ढाल

भारत की
हर जाति तथा धर्म के
लोगों ने एकजुट होकर
आज़ादी की लड़ाई लड़ी।

एकता, बलिदान और धर्म-निरपेक्षता
उनके संघर्ष के हथियार थे।
यही भावना हमें एक सूत्र में पिरो कर
देश को समृद्ध बना सकती है।

हमारी आज़ादी की सुरक्षा—धर्म-निरपेक्षता

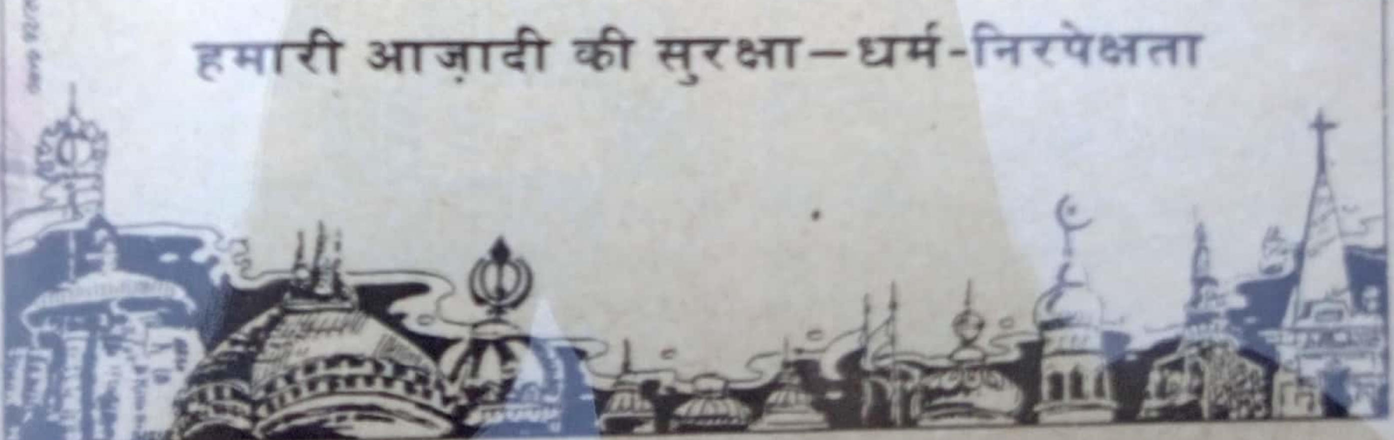

आओ दवा दो

—श्रीनिवास वत्स

बिलासपुर गांव में शम्भूलाल नामक एक वैद्य रहते थे। दूर-दूर तक उनकी कीर्ति फैली थी। बड़े-से बड़े रोगों में जकड़े व्यक्ति भी उनकी दवा से ठीक हो जाते थे। शम्भूलाल के पास एक घोड़ा था। वह घोड़े पर सवार होकर जंगल में जाते और जड़ी-बूटी खोद लाते।

उनकी पत्नी शीतला बहुत दयालु और धार्मिक स्वभाव की थी। जब दूर से कोई थका-हारा रोगी औषधालय में पहुंचता, तो शीतला उसकी सेवा करती। उनकी कोई संतान न थी, इसलिए दोनों पति-पत्नी परोपकार में ही जुटे रहते।

वैद्य जी को संतान न होने का ज्यादा दुःख न था। वह तो अपने पास आने वाले हर रोगी को अपना बच्चा समझते थे। लेकिन उनकी पत्नी संतान के बारे में सोचकर कभी-कभी बहुत उदास हो जाती थी। एक दिन उसने अपने पति से कहा—"वैद्य जी, आपने औषधालय में आने वाले हर रोगी का इलाज किया है। क्या ऐसी कोई दवा नहीं, जिससे मेरा दुःख दूर हो सके?"

वैद्य बोले—"दवा तभी असर करती है, जब भगवान की कृपा हो। यदि भगवान ने हमारे भाग्य में संतान का सुख नहीं लिखा, तो हमें इसी अवस्था में संतोष करना चाहिए।"

शीतला ने कहा—"मैं देवी भगवती की पूजा कर उनसे संतान के लिए प्रार्थना करूंगी। मुझे आशा है, मेरी पूजा व्यर्थ नहीं जाएगी।"

"इसमें मैं भी तुम्हारा साथ दूंगा।"—वैद्य ने कहा।

पति-पत्नी सुबह-शाम मां भगवती के मंदिर में जाते। दीप जलाकर पूजा करते।

हृदय से की गई पूजा ने असर दिखाया। एक दिन वैद्य शम्भूलाल के घर पुत्र ने जन्म लिया। पर सुख के साथ विपत्ति का पहाड़ भी टूट पड़ा। पुत्र को जन्म देते ही शीतला स्वर्ग सिधार गई। शम्भूलाल को बहुत दुःख हुआ, पर इसे भाग्य की विडम्बना मान, उन्होंने संतोष कर लिया। उन्होंने पुत्र का नाम सुदर्शन रखा। धीरे-धीरे सुदर्शन बड़ा होने लगा।

अब वैद्य जी जब भी जड़ी-बूटी लेने जंगल में जाते, अपने पुत्र सुदर्शन को भी साथ ले जाते। वह बूढ़े हो चले थे। उनकी इच्छा थी कि अपनी मृत्यु से पूर्व सुदर्शन को औषध विज्ञान में पारंगत बना दें। जंगल में बूटी तोड़ते समय सुदर्शन को अच्छी तरह समझाते कि यह औषधि किस-किस रोग में काम आती है। बहुत-सी जड़ी-बूटियों के नाम तो सुदर्शन को याद भी हो गए थे। वैद्य जी का घोड़ा इतने दिन से

जंगल में आ-जा रहा था। उसे पता था कि कौन-सी बूटी कहां मिलेगी।

पंद्रह वर्ष की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते सुदर्शन काफी दवाओं के विषय में जान चुका था। रोगियों को दवा देते समय वह वैद्य जी के पास बैठ जाता।

एक दिन अचानक शम्भूलाल का स्वास्थ्य खराब हो गया। उन्होंने शीशी में रखी दवा ली। पर कोई लाभ न हुआ। सुदर्शन भी पास ही बैठा था। उसने दूसरी शीशी देते हुए कहा—"पिता जी, आप यह दवा लें।"

वैद्य जी बोले—"बेटा, मेरा यह रोग सामान्य रोग नहीं है। लगता है, अब तो आखिरी समय आ गया।"

वे बातें कर ही रहे थे कि एक व्यक्ति गांव में मुनादी करता हुआ उधर से गुजरा—'पुष्पनगर के साहूकार का इकलौता बेटा अचानक बहुत बीमार हो गया है। जो भी वैद्य-हकीम उसे ठीक कर देगा, उसे बीस हजार स्वर्ण मुद्राएं पुरस्कार में प्राप्त होंगी।'

वैद्य जी ने सुदर्शन से कहा—"पुत्र, जाओ, उस व्यक्ति से साहूकार के बेटे के रोग के लक्षण पूछकर आओ।"

सुदर्शन दौड़ा-दौड़ा गली में आया और उस व्यक्ति से पूरी जानकारी प्राप्त की। फिर पिता के पास जाकर पूरा हाल बता दिया। वैद्य जी ने कहा—"बेटा, यह रोग बहुत कष्टकारी होता है। यदि दस दिन के भीतर रोगी को सही दवा न मिले, तो उसकी मृत्यु निश्चित समझो। छह दिन तक दोनों समय दवा देनी होगी।"

वैद्य ने सामने अलमारी में रखी तीन शीशियां मंगवाईं। सुदर्शन से कहा—"इनकी एक-एक खुराक मिलाकर रोगी को दोनों समय पिला दी जाए, तो छह दिन में वह ठीक हो सकता है।"

"पिता जी, आप पुष्पनगर पहुंचकर साहूकार के बेटे का इलाज कर दीजिए।"—सुदर्शन बोला।

वैद्य जी ने कहा—"बेटा, मैं तो अब कुछ ही पलों का मेहमान हूं। तुम जाकर उसे दवा दे देना।"

इतना कहकर वैद्य जी ने आंखें बंद कर लीं। कुछ ही क्षण बाद उनका देहांत हो गया। अकेला बच्चा सुदर्शन क्या करे? बैठकर रोने लगा।

वैद्य जी के पड़ोस में स्वर्णदास नाम का एक लोभी नीम हकीम रहता था। वह वैद्य जी से ईर्ष्या करता था। उसकी इच्छा थी कि वैद्य जी की तरह उसके पास भी घर बैठे-बैठे काफी धन हो जाए। परंतु उसे दवाओं का तनिक भी ज्ञान न था। कई बार वह उल्टी-सीधी दवा देकर कई रोगियों को मौत के मुंह में धकेल चुका था।

सुदर्शन का रोना सुन, वह उसके पास आया। जब उसे पता चला कि वैद्य जी स्वर्ग सिधार गए हैं, तो मन ही मन बहुत खुश हुआ। पर दिखावटी आंसू बहाता हुआ शोक प्रकट करने लगा।

सुदर्शन ने कहा—"चाचा जी, मेरे पिता जी ने बताया था कि पुष्पनगर के साहूकार के पुत्र को यदि तुरंत दवा न दी गई, तो उसका जीवन समाप्त हो सकता है। मैं चाहता हूं, शीघ्र ही पुष्पनगर जाकर दवा दे आऊं।"

स्वर्णदास ने सुना, तो खुशी से उछल पड़ा। उसे लगा, जैसे बीस हजार स्वर्ण मुद्राएं उसकी राह देख रही हैं। गम्भीर होकर बोला—"वह कौन-सी दवा है जो पुष्पनगर पहुंचानी है?"

सुदर्शन ने तीन शीशियां लाकर उसे दे दीं। कहा—"तीनों की एक-एक खुराक मिलाकर छह दिन तक लेने से वह ठीक हो जाएगा।"

—"अच्छा बेटा, चिंता न करो, तुम घर पर ही रहो। मैं यह दवा पुष्पनगर पहुंचा देता हूं।"

दवा लेकर स्वर्णदास पुष्पनगर पहुंचा। जाकर साहूकार के बेटे का इलाज प्रारम्भ कर दिया। छह दिन बाद लड़का पूरी तरह स्वस्थ हो गया। साहूकार ने घोषणा के अनुसार बीस हजार स्वर्ण मुद्राएं और बहुत-सी कीमती चीजें उसे भेंट कीं।

लौटते हुए स्वर्णदास ने सोचा—'यदि इतना धन लेकर मैं बिलासपुर जाऊंगा, तो मुझे सारी चीजें सुदर्शन को देनी होंगी। क्यों न धन गांव से बाहर जमीन में दबा दूं। किसी दिन चुपके से निकाल ले जाऊंगा।'

उसने ऐसा ही किया। सारा धन जमीन में दबा,

जंगल में आ-जा रहा था। उसे पता था कि कौन-सी बूटी कहां मिलेगी।

पंद्रह वर्ष की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते सुदर्शन काफी दवाओं के विषय में जान चुका था। रोगियों को दवा देते समय वह वैद्य जी के पास बैठ जाता।

एक दिन अचानक शम्भूलाल का स्वास्थ्य खराब हो गया। उन्होंने शीशी में रखी दवा ली। पर कोई लाभ न हुआ। सुदर्शन भी पास ही बैठा था। उसने दूसरी शीशी देते हुए कहा—"पिता जी, आप यह दवा लें।"

वैद्य जी बोले—"बेटा, मेरा यह रोग सामान्य रोग नहीं है। लगता है, अब तो आखिरी समय आ गया।"

वे बातें कर ही रहे थे कि एक व्यक्ति गांव में मुनादी करता हुआ उधर से गुजरा—'पुष्पनगर के साहूकार का इकलौता बेटा अचानक बहुत बीमार हो गया है। जो भी वैद्य-हकीम उसे ठीक कर देगा, उसे बीस हजार स्वर्ण मुद्राएं पुरस्कार में प्राप्त होंगी।'

वैद्य जी ने सुदर्शन से कहा—"पुत्र, जाओ, उस व्यक्ति से साहूकार के बेटे के रोग के लक्षण पूछकर आओ।"

सुदर्शन दौड़ा-दौड़ा गली में आया और उस व्यक्ति से पूरी जानकारी प्राप्त की। फिर पिता के पास जाकर पूरा हाल बता दिया। वैद्य जी ने कहा—"बेटा, यह रोग बहुत कष्टकरी होता है। यदि दस दिन के भीतर रोगी को सही दवा न मिले, तो उसकी मृत्यु निश्चित समझो। छह दिन तक दोनों समय दवा देनी होगी।"

वैद्य ने सामने अलमारी में रखी तीन शीशियां मंगवाईं। सुदर्शन से कहा—"इनकी एक-एक खुराक मिलाकर रोगी को दोनों समय पिला दी जाए, तो छह दिन में वह ठीक हो सकता है।"

"पिता जी, आप पुष्पनगर पहुंचकर साहूकार के बेटे का इलाज कर दीजिए।"—सुदर्शन बोला।

वैद्य जी ने कहा—"बेटा, मैं तो अब कुछ ही पलों का मेहमान हूं। तुम जाकर उसे दवा दे देना।"

इतना कहकर वैद्य जी ने आंखें बंद कर लीं। कुछ ही क्षण बाद उनका देहांत हो गया। अकेला बच्चा सुदर्शन क्या करे? बैठकर रोने लगा।

वैद्य जी के पड़ोस में स्वर्णदास नाम का एक लोभी नीम हकीम रहता था। वह वैद्य जी से ईर्ष्या करता था। उसकी इच्छा थी कि वैद्य जी की तरह उसके पास भी घर बैठे-बैठे काफी धन हो जाए। परंतु उसे दवाओं का तनिक भी ज्ञान न था। कई बार वह उल्टी-सीधी दवा देकर कई रोगियों को मौत के मुंह में धकेल चुका था।

सुदर्शन का रोना सुन, वह उसके पास आया। जब उसे पता चला कि वैद्य जी स्वर्ग सिधार गए हैं, तो मन ही मन बहुत खुश हुआ। पर दिखावटी आंसू बहाता हुआ शोक प्रकट करने लगा।

सुदर्शन ने कहा—"चाचा जी, मेरे पिता जी ने बताया था कि पुष्पनगर के साहूकार के पुत्र को यदि तुरंत दवा न दी गई, तो उसका जीवन समाप्त हो सकता है। मैं चाहता हूं, शीघ्र ही पुष्पनगर जाकर दवा दे आऊं।"

स्वर्णदास ने सुना, तो खुशी से उछल पड़ा। उसे लगा, जैसे बीस हजार स्वर्ण मुद्राएं उसकी राह देख रही हैं। गम्भीर होकर बोला—"वह कौन-सी दवा है जो पुष्पनगर पहुंचानी है?"

सुदर्शन ने तीन शीशियां लाकर उसे दे दीं। कहा—"तीनों की एक-एक खुराक मिलाकर छह दिन तक लेने से वह ठीक हो जाएगा।"

—"अच्छा बेटा, चिंता न करो, तुम घर पर ही रहो। मैं यह दवा पुष्पनगर पहुंचा देता हूं।"

दवा लेकर स्वर्णदास पुष्पनगर पहुंचा। जाकर साहूकार के बेटे का इलाज प्रारम्भ कर दिया। छह दिन बाद लड़का पूरी तरह स्वस्थ हो गया। साहूकार ने घोषणा के अनुसार बीस हजार स्वर्ण मुद्राएं और बहुत-सी कीमती चीजें उसे भेंट कीं।

लौटते हुए स्वर्णदास ने सोचा—'यदि इतना धन लेकर मैं बिलासपुर जाऊंगा, तो मुझे सारी चीजें सुदर्शन को देनी होंगी। क्यों न धन गांव से बाहर जमीन में दबा दूं। किसी दिन चुपके से निकाल ले जाऊंगा।'

उसने ऐसा ही किया। सारा धन जमीन में दबा,

वह खाली हाथ सुदर्शन के घर पहुंचा । क्रोधित होते हुए बोला—''तुम्हारा पिता तो मूर्ख था । उसे औषध विज्ञान की जरा भी जानकारी नहीं थी । गलत दवा देने से साहूकार का लड़का ज्यादा बीमार हो गया है । मैं तो जान बचाकर यहां भाग आया हूं । वह तुम्हें भी मारेगा, इसलिए अच्छा है, तुम यहां से चले जाओ ।''

सुदर्शन ने सुना, तो उसे बहुत दुःख हुआ । अपने पिता का अपमान उससे बर्दाश्त नहीं हुआ । पर बेचारा क्या कर सकता था ! चुप ही रहा । गुस्से में आकर स्वर्णदास ने औषधालय में रखी कुछ शीशियां भी जमीन पर पटक दीं ।

सुदर्शन की आंखों में आंसू आ गए । वह चुपचाप आंगन में गया और अपने घोड़े के गले से लिपटकर रोने लगा । अगले दिन वह बिलासपुर को छोड़कर दूसरे गांव में चला गया ।

अब बिलासपुर में स्वर्णदास के अतिरिक्त कोई वैद्य नहीं था । वह जरा-सी दवा के भी लोगों से दूने-चौगुने पैसे ऐंठने लगा ।

अचानक एक दिन महाराज शैलभद्र के पुत्र को भी वही रोग हो गया, जो साहूकार के बेटे को हुआ था । राजा पुत्र की बीमारी देख, घबरा गया । उसने मंत्री को बुलवाया । आदेश दिया—''तुरंत ऐसे वैद्य को खोजो, जो इस रोग का इलाज कर सके ।''

सारे राज्य में राजकुमार की बीमारी की चर्चा फैल गई । पुष्पनगर के साहूकार ने सुना, तो दौड़ा-दौड़ा राजमहल में पहुंचा । जाकर बताया—''महाराज, मेरे बेटे को भी यही रोग हुआ था । उसका इलाज बिलासपुर के वैद्य स्वर्णदास ने किया था । आप कुमार को उससे दवा दिलवाइए । यह जरूर ठीक हो जाएगा ।''

राजा ने सेवकों को आदेश दिया—''बिलासपुर से स्वर्णदास वैद्य को बुलाकर लाओ ।''

सेवक बिलासपुर पहुंचे और स्वर्णदास को पूरा वृत्तांत सुनाया । स्वर्णदास ने सुना, तो पैरों तले की जमीन खिसक गई । अब तो उसके पास दवा थी नहीं । जड़ी-बूटियों का उसे ज्ञान भी नहीं था । लेकिन राजा के आदेश का उल्लंघन भी कैसे करे ? डर से थर-थर कांपने लगा ।

सेवक उसे पकड़कर राजमहल में ले आए । राजा ने कहा—''वैद्य जी, आप तुरंत हमारे बच्चे का इलाज कीजिए । हम आपको मुंहमांगा इनाम देंगे ।''

स्वर्णदास ने अपनी ओर से एक बूटी पानी में घोलकर कुमार को पिलाई, पर उसके पीते ही राजकुमार की दशा और बिगड़ गई । राजा ने क्रोध से कहा—''स्वर्णदास, यदि तुमने मेरे बेटे को सही दवा न दी, तो मैं तुम्हें सजा दूंगा ।''

स्वर्णदास गिड़गिड़ाया । राजा के पैर पकड़कर पूरी कहानी कह सुनाई । शैलभद्र ने सुना, तो गुस्से से कांप उठा । उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया—''इस दुष्ट को कारागार में डाल दो । वैद्य शम्भूलाल के बेटे सुदर्शन को ढूंढ़कर हमारे सम्मुख उपस्थित करो ।''

सैनिकों ने स्वर्णदास को बेड़ियां पहनाकर कारागार में बंद कर दिया । राजसेवक सुदर्शन को ढूंढ़ने चारों दिशाओं में निकल पड़े । अगले दिन उन्होंने सुदर्शन को एक गांव में ढूंढ़ लिया । उसे लेकर वे राजमहल पहुंचे ।

राजा ने कहा—''वैद्य सुदर्शन, हमें तुम्हारी पूरी कहानी पता चल गई है । दुष्ट स्वर्णदास ने तुम्हारे पिता जी की दवा से साहूकार के बेटे को ठीक किया था । पुरस्कार का सारा धन भी उसी ने हड़प लिया । हमने उसे कैद में डाल दिया है । अब तुम जल्दी से हमारे बेटे का इलाज करो ।''

सुदर्शन अपने घोड़े पर सवार होकर तुरंत जंगल में पहुंचा । घोड़े को तो सभी रास्तों का पता था । रात होने से पहले वह उस स्थान पर पहुंच गया, जहां जड़ी-बूटियां उगी हुई थीं ।

सुदर्शन ने जड़ी-बूटियां लीं और महल में आकर दवा बनाई । छह दिन दवा पीने के बाद राजकुमार पूरी तरह स्वस्थ हो गया । राजा की खुशी का ठिकाना न रहा । उसने सैनिकों को आदेश देकर वह सारा धन निकलवा लिया, जो स्वर्णदास ने जमीन में दबा रखा था ।

राजा ने वह धन सुदर्शन को सौंप दिया । उसे ढेरों इनाम दिए ।

Scanned with CamScanner

पीठ पर पोता

—गिरिधर 'योगेश्वर'

बहुत पहले की बात है । तब कनखल और हरिद्वार का नाम मायापुरी था । वहां का राजकुमार था विहंगमणि पाल । एक बार वह हिमाचल की वादियों में घूमने गया । साथ में कुछ सैनिक भी थे ।

विहंगमणि ने पहले उबलते पानी के चश्मों वाली घाटी मणिकर्ण को देखा । कुछ दिन बाद उसने पार्वती घाटी की छोटी-छोटी रियासतों के शासकों को जीता । पर उसकी यह विजय ज्यादा दिन तक टिकी न रह सकी । छोटे-छोटे शासकों ने मिलकर उस पर आक्रमण कर दिया । वह हार गया । विहंगमणि किसी तरह बचता हुआ कुल्लू नगर में पहुंचा । वहां वह एक कुम्हार के घर रहने लगा । वह उसके बर्तन-भांडे घूम-घूम कर इधर-उधर बेचता । वह किसी तरह दिन काट रहा था ।

उस समय कुल्लू के आसपास राणाओं और ठाकुरों का शासन था । वे अत्याचारी थे । कुल्लू नगर का शासक तो बहुत ही क्रूर था ।

एक बार कुल्लू नगर के जगतसुख गांव में मेला लगा । विहंगमणि वहां मिट्टी के बर्तन बेचने जा रहा था । रास्ते में धुआगणु नाले के पास उसे एक बुढ़िया मिल गई । वह कमजोरी के कारण चल नहीं पा रही थी । विहंगमणि पाल से उसका दुःख देखा नहीं गया । उसने कहा—''अम्मां, अम्मां ! यदि मेले में जाना है, तो मेरी पीठ पर बैठ जाओ । मैं तुम्हें घड़ों के छिक्के में लादकर ले चलूंगा ।'' बुढ़िया बोली—''ठीक है बेटा । नाला तो पार करवा ही दो ।'' और वह खुशी-खुशी विहंगमणि की पीठ पर बैठ गई ।

नाला पार कर राजकुमार कुछ आगे बढ़ा । तभी बुढ़िया बोली—''पोते ! अब तू थक गया होगा । कुछ देर आराम कर ले ।'' दोनों बैठकर आराम करने लगे । कुछ देर बाद वे चल पड़े । तभी बुढ़िया बोली—''बेटा, अब तू मेरी पीठ पर आ जा । मैं तुझे ले चलूंगी ।''

राजकुमार भौंचक्का था । 'बुढ़िया को हो क्या गया है ? अपना शरीर तो संभलता नहीं और मुझे पीठ पर बैठने को कहती है ।' पहले तो उसने इंकार कर दिया, पर बुढ़िया अपने हठ पर अड़ गई । आखिरकार उसका मन रखने के लिए विहंगमणि उसकी पीठ पर बैठ गया । पर यह क्या ? बुढ़िया आनन-फानन में अपना आकार बढ़ाती चली गई । फिर पूछा—''पोते, तुझे कहां तक का इलाका नजर आ रहा है ?'' राजकुमार ने उत्तर दिया—''दादी अम्मां, मैं दलासनी से ऊपर और कोठी सोलंग से नीचे का सारा भाग देख रहा हूं ।'' बुढ़िया रुक गई । उसने कहा—''अब इस सारे क्षेत्र पर तू राज करेगा ।'' राजकुमार ने हाथ जोड़ लिए । बुढ़िया अपना परिचय देती हुई बोली—''मैं तुम्हारे पांडव वंश की कुलवधू हिडिम्बा हूं, आर्य भीमसेन की पत्नी और महाबली घटोत्कच की जननी । कुल्लू मेरी जन्मभूमि है । यहीं भीमसेन से मेरी भेंट हुई थी । मेरे भाई हिडिम्ब का वध करके उन्होंने मेरा वरण किया था । अच्छा, तू मुझे एक वचन अवश्य दे । जब तू पूरे कुल्लू राज्य का राजा बन जाएगा, मुझे भूलेगा नहीं । दादी मां-सा ही मुझे सम्मान देगा ।''

राजकुमार हतप्रभ था । वह बोला—''दादी अम्मां, ऐसा ही होगा ।'' दूसरे ही पल बुढ़िया अदृश्य हो गई ।

राजकुमार सोचता – विचारता जगतसुख पहुंचा । मेले में एकत्रित लोगों ने उसका—'जै देवा' कहकर सम्मान किया । यह आदरसूचक सम्बोधन केवल राजा के सम्मान में ही कहा जाता है । जन समुदाय ने विहंगमणि पाल को अपना राजा घोषित कर दिया । वे लोग क्रूर शासक से मुक्ति चाहते थे ।

विहंगमणि ने अत्याचारी राणाओं और ठाकुरों का डटकर मुकाबला किया । युद्ध में उसकी विजय हुई । प्रजा खुश थी । विहंगमणि ने हिडिम्बा दादी को दिया हुआ पूरा किया । उसे अपनी 'कुलदेवी' माना ।

आज भी कुल्लू का दशहरा तब तक शुरू नहीं होता, जब तक मनाली से देवी हिडिम्बा का रथ वहां पहुंच नहीं जाता । दशहरे का समापन भी हिडिम्बा के ही हाथों से होता है ।

Scanned with CamScanner

चीटू-नीटू

बचपन से खेलों का अभ्यास किया जाए तो ओलम्पिक में देश को पदक...
हम आज ही से...
भैया एक आंख बंद कर के...
भागो भैया, तीर भैंस को जा लगा, इससे तो हम लम्बी कूद की प्रेक्टिस करते...
भागो भैया और लम्बी कूद से झाड़ी को पार कर जाओ
उई मां... कांटे चुभ गए। इससे तो तैराकी...
बचाओ चीटू डूब रहा है
अकेला मैं नहीं डूबा मम्मी, मेरे साथ देश को पदकों की उम्मीदें डूब गई हैं...

शीर्षक बताइए

लव, कुश हैं या लक्ष्मण, राम ? इस चित्र के ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए, कोई सुंदर-सा शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० **अक्तूबर, १९९२** तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम— दिसम्बर '९२ अंक

चित्र : के. सी. गर्ग

पुरस्कृत चित्र

शहीन हुसैन, ३/६३ विकास नगर, कुर्सी रोड लखनऊ

इनके चित्र भी पसंद किए गए— घनश्याम प्रजापत, सांभरलेक (राज.); कुमारी अमृता, भोपाल; पूनम ओहरी, चंडीगढ़; सव्यसांची साहा, नई दिल्ली; चंदनसिंह रावत, टिहरी-गढ़वाल

आगामी अंक

दीपों के मौसम में मनभावन भेंट

वार्षिक उपहार विशेषांक

नंदन का नवम्बर '९२ अंक

पूरे पृष्ठ में **लक्ष्मी और गणेश**—फ्रेम कराने योग्य बहुरंगी छवि

- **चहक उठे पंछी, थिरक उठे पांव :** विश्व के चुने हुए डाक टिकटों की झलकियां
- **सारा आकाश हमारा :** भारतीय वायुसेना की हीरक जंयती पर दो पृष्ठों में बिखरे अद्‌भुत रंग
- बिना पासे के खेलिए एक मजेदार खेल—**घर बदल**
- **गोरखधंधा :** अक्ल लगाइए और उत्तर खोजिए। कुछ टेढ़े प्रश्न, सीधे उत्तर
- **अपने मित्रों को शुभ कामनाएं भेजिए। रंग-बिरंगे मनमोहक बधाई पत्र**

'अपना देश प्रतियोगिता' के परिणाम

- रोचक कहानियां भारतीय भाषाओं की। दो दर्जन से अधिक
- तेनालीराम, चीटू-नीटू आदि सभी स्थायी स्तंभ

मूल्य : ५ रुपए

अधिक पृष्ठ : अधिक रंगीन पृष्ठ

पेट की गड़बड़ी ?
अम्लरोग ? क्षुधामंद ? कोष्ठबद्धता ?

डा. सरकार कहते हैं –

स्वास्थ्य एवं सौंदर्य की रक्षा के लिए लिवर।

यदि लिवर या स्टमक का काम अच्छा न हो अथवा मानसिक अशांति के कारण नींद अच्छी न होने से ही पेट की गड़बड़ी होती है। सर्वाधिक रोगों का कारण पेट की गड़बड़ी है, अतः अगर तंदुरूस्ती चाहते हों तो पेट की गड़बड़ी को दूर कीजिए और लिवर की सुरक्षा पर ध्यान दीजिए।

पेट की गड़बड़ी को दूर करने के लिए एवं लिवर की सुरक्षा हेतु डा. सरकार का एक फलप्रद अविष्कार (माइकल मधुसूदन अकादमी पुरस्कृत)

लिवोसिन – आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक

सेवन विधि :

एक गिलास पानी में दो चाय-चम्मच लिवोसिन मिलाकर सुबह खाली पेट एवं रात को सोने से पहले सेवन करें, जबतक सीने का जलन, हाज़माशक्ति में वृद्धि, अम्लरोग, क्षुधामंदता तथा कोष्ठबद्धता दूर न हो जाए, पेट की गड़बड़ी भगाए और सुन्दरता बढ़ाए।

लिवोसिन

लिवर करेक्टिव, कारमिनेटिव
एपीटाइजर, रेस्टोरेटिव-टॉनिक।

एलोपैथिक एवं आयुर्वेदिक औषधि प्रस्तुतकर्ता :

जूपिटर फर्मास्युटिकल्स प्रा. लि.
२५, इडेन हास्पिटल रोड, कलकत्ता-७३
फोन : २६-०१५६/२७-०२२४/७७-७०७५/३३-७०२६

जिसके हिफाजत से ही आपका आरोग्य एवं विश्वास

आर्निकाप्लस-ट्रायोफर निर्माताओं की सहयोगी संस्था Jupiter का आयुर्वेदिक गवेषणा का एक तोहफा।

Jupiter Emars Allen

Bringing Science To Life

Dr. Sarkar Group

Allen's Ad. India

अमर हो जाओ

एक वीरान टापू में एक चूहा और चुहिया रहते थे। कुछ समय से वहां एक बाज आ गया था, जिससे चूहा और चुहिया परेशान रहने लगे।

एक दिन की बात दोनों बगीचे में घूमने निकले। तभी चुहिया की नजर बाज पर पड़ी, जो उन पर नजर लगाए बैठा था। उसने चूहे को आगाह किया। चूहा बोला— "संकट के समय बुद्धि से काम लेना चाहिए।"

उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई, फिर बाज से नजर बचाकर सामने की डाल से एक सुंदर-सा फूल तोड़ लिया। फूल सूंघकर अपनी पत्नी को देते हुए बोला— "लो तुम भी सूंघो।" चुहिया बिफरकर बोली— "मौत सामने खड़ी है और तुम्हें फूल सूंघने की पड़ी है।" चूहा कड़े लहजे में बोला— "जैसा मैं कहता हूं, वैसा ही करो।"

दूर बैठा बाज यह सब देख रहा था। जब उससे रहा न गया, तो वह पास आकर बोला— "ये क्या मूर्खतापूर्ण हरकतें कर रहे हो?"

चूहा बोला— "ये कोई साधारण फूल नहीं है। यह है 'अमरताप्रदायी पुष्प।' इसे सूंघकर प्रत्येक जीव अमर हो सकता है।"

बाज अविश्वास से बोला— "क्या सबूत है तुम्हारे पास?"

चूहा मुसकराकर बोला— "सबूत! तुम इस फूल को सूंघकर सागर में कूद जाओ। देखना कुछ पल बाद तुम पुनः जीवित बाहर निकलोगे... तब तो तुम्हें विश्वास होगा न।"

बाज बिना सोचे-समझे फूल सूंघकर सागर में कूद गया। बाज सागर में कूदकर मर गया। चूहा अपनी चतुराई से हमेशा के लिए बेफिक्र हो गया।

— विजयकुमार विश्वकर्मा, धनपुरी, शहडोल

पिता कौआ

कुछ समय पहले की बात है। एक बार एक कौआ शहर से गुजर रहा था। शहर के आगे एक जंगल में वह एक पेड़ पर थोड़ा विश्राम करने बैठा, तो अचानक उसकी नजर एक नवजात चुहिया पर पड़ी। जिसे वहां कोई छोड़कर चला गया था।

चुहिया को देखकर कौए को दया आ गई। उसके कोई संतान नहीं थी। इस कारण उसने उस नवजात चुहिया को अपने पंजों में दबाया और उड़ चला अपने घर की ओर।

कौआ एक घने जंगल में अपनी पत्नी के साथ रहता था। पत्नी का नाम ऋतु था। ऋतु ने जब चुहिया को देखा, तो वह मन ही मन प्रफुल्लित हो उठी। उसने चुहिया को बड़े लाड़-प्यार से पाला और उसका नाम पिंकी रखा।

अचानक ऋतु की मृत्यु हो गई। इससे कौआ और पिंकी दुखी हो उठे। लेकिन होनी को भला कौन टाल सकता था?

कौए का एक दोस्त चूहा था। जिसके बेटे का नाम रिंकू था। कौआ अब बूढ़ा हो चला था। उसे अपनी बेटी पिंकी की शादी की चिंता लगी रहती। उसने सोचा, क्यों न मैं अपनी बेटी की शादी अपने दोस्त रिंकू चूहे से कर दूं। रिंकू बलवान व धनी था।

कौए ने यह प्रस्ताव रिंकू व उसके मम्मी-पापा के समक्ष रखा, तो उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई। वे दोनों की शादी के लिए तैयार हो गए।

रिंकू चूहा और पिंकी चुहिया अब सुखी जीवन व्यतीत करने लगे। कौआ उनके सुखी जीवन को देखता, तो उसे बहुत खुशी होती।

— राजीव कुमार चौधरी, जसपुर (उ.प्र.)

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : मंगला चौबे, इंदौर; सुनीलकुमार सिन्हा, फारबिसगंज।

फूल नदी में

—बांसुरी कौशल

बहुत समय पहले की बात है। एक राज्य में एक राजा राज करता था। उसके सात पुत्र थे। उनमें से छह का विवाह हो चुका था। सातवें का विवाह नहीं हुआ था। सब राजकुमार जंगल में शिकार खेलने जाते थे। जब वे वापस आते, तो पत्नियां उनका स्वागत करती थीं। हाथ-पैर धुलवातीं और भोजन करातीं। एक दिन सातवां राजकुमार जरा देर से आया। आकर उसने देखा, उसके सभी बड़े भाई आ चुके थे और भोजन कर रहे थे। उसने बड़ी भाभी से कहा— ''भाभी, मेरे भी हाथ धुलवाइए और भोजन दीजिए।'' जवाब में एक भाभी, मजाक में ताना मारती हुई बोली— ''अरे, इतना ही शौक है, तो जाओ न अपने लिए भी परी दुल्हन ले आओ राजकुमार !''

जब राजकुमार ने यह ताना सुना, तो उसे बड़ा क्रोध आया। उसने प्रतिज्ञा की कि वह वापस घर नहीं लौटेगा, जब तक कि वह परी दुल्हन न ले आएगा। वह घोड़े पर बैठकर दूर निकल गया। बहुत दूर निकलने पर उसने देखा, एक साधु महाराज तप कर रहे हैं। उसने देखा, साधु के शरीर पर मक्खियां भिनभिना रही हैं। उनके आसपास खेत सूख रहे थे। राजकुमार ने सोचा— 'जब तक साधु महाराज तपस्या पर बैठे हैं, क्यों न मैं इनकी फसल की देखभाल करूं।'

वह दौड़ा हुआ पास की नदी तक गया। वहां से पानी निकालकर उसने खेतों में दिया। जगह-जगह से कंकड़-पत्थरों को हटाया। कुछ ही दिनों में साधु महाराज के खेत लहलहाने लगे। समय बीतता रहा। एक दिन साधु महाराज ने आंखें खोलीं। जब उन्होंने देखा कि फसल लहलहा रही है, तो वह आश्चर्यचकित हुए। तभी उन्होंने देखा, एक राजकुमार नदी से पानी ला रहा है। साधु बोले— ''युवक, तुम कौन हो ? मैं कैसे तुम्हारा धन्यवाद करूं ! तुम्हारा उपकार मैं भूल नहीं सकता। मांगो, जो मांगना चाहते हो।''

साधु के बार-बार जिद करने पर राजकुमार ने अपने घर की सारी कहानी सुनाते हुए कहा— ''मुझे परी रानी चाहिए।''

साधु ने कहा— ''बेटा, याद रख। इस शनिवार की सुबह चार बजे एक हाथी और हथिनी नदी किनारे स्नान करने आएंगे। जब वे अपने ऊपर जल का छिड़काव करेंगे, तब-तब उनके कान के अंदर से परियां निकलेंगी। जब वे वापस जाने लगेंगी, तो जो सबसे आखिर में होगी, उसका हाथ पकड़कर ले आना। लेकिन याद रखना, तुम मुड़कर मत देखना। मुड़कर देखोगे, तो मूर्ति बन जाओगे।''

राजकुमार शनिवार की सुबह गंगा के किनारे जा पहुंचा। ठीक चार बजे उसने देखा, एक हाथी और हथिनी आए। जल क्रीड़ा करने के बाद वे सो गए। तब उनके कान से परियां निकलीं। उसने साधु महाराज के कहे अनुसार सबसे आखिरी परी का हाथ पकड़ा। लेकिन साधु महाराज की पीछे मुड़कर न देखने की चेतावनी वह भूल गया। ज्यों ही उसने मुड़कर देखा, वह मूर्ति बन गया। यह बात साधु महाराज को पता चली। वह आए, फिर कमंडल से

Scanned with CamScanner

जल छिड़का, तो राजकुमार अपने असली रूप में आ गया ।

अगली बार राजकुमार फिर नदी तट पर गया । इस बार वह बिल्कुल नहीं मुड़ा । परी को लेकर सीधे साधु की कुटिया में पहुंचा । साधु ने दोनों को मक्खी बना दिया । पीछे-पीछे अन्य परियां दौड़ी आ रही थीं । वे भी साधु की कुटिया में पहुंचीं । उन्होंने साधु से पूछा— "महाराज, आपने हमारी रानी देखी है ?" साधु चुप रहा । परियों ने पूरी कुटिया छान मारी, उन्हें परी नहीं मिली । हां, मक्खियां जरूर थीं, पर उन्हें क्या मालूम था कि उन्हीं में उनकी परी रानी थी ।

परियां वापस चली गईं । फिर साधु ने दोनों को मनुष्य बना दिया । राजकुमार परी के साथ अपने राज्य की ओर चल दिया । रास्ते में दोनों थककर एक पेड़ के नीचे बैठ गए । परी रानी राजकुमार के सिर को अपनी गोद में लेकर बैठ गई । तभी एक बंजारन उधर से गुजरी । परी रानी और उसके सुंदर कपड़ों को देखकर उसके मन में लालच आ गया । उसने परी रानी से कहा— "मुझे बड़ी प्यास लगी है, क्या तुम मुझे पानी पिलाओगी ?"

परी रानी बड़ी अच्छी थी । उसने कहा— "हां-हां, क्यों नहीं !"

बंजारन ने कहा— "मुझे तुम्हारे कपड़े बहुत पसंद हैं । तुम थोड़ी देर के लिए मेरे कपड़े पहन लो और मैं तुम्हारे पहन लेती हूं ।" परी रानी मान गई । वह पानी लेने चली गई । इस बीच राजकुमार की नींद टूटी और वह परी रानी के कपड़े पहने बंजारन के साथ अपने राज्य की तरफ बढ़ चला ।

महल में आकर राजकुमार ने अपनी भाभियों से कहा— "मैं अपनी प्रतिज्ञा के मुताबिक परी रानी लेकर ही लौटा हूं ।" भाभियां काली बंजारन को देखकर हंस पड़ीं और ताने देने लगीं । राजकुमार निराश हो गया ।

दूसरे दिन, सातों राजकुमार फिर शिकार पर निकले । वे उसी नदी के तट पर पहुंचे, जहां परी रानी पानी लेने गई थी । सबने देखा, नदी में एक सुंदर फूल तैर रहा था । सभी राजकुमार फूल लाने की कोशिश करने लगे । दरअसल वह फूल और कोई नहीं— परी रानी ही थी । बड़े छह राजकुमारों ने लाख कोशिश की, पर वह फूल हाथ नहीं आया । सातवें राजकुमार की बारी आते ही वह फूल अपने आप किनारे आ लगा । सातवां राजकुमार वह फूल लेकर लौटा और अपने कमरे के फूलदान में लगा दिया ।

बंजारन के पूछने पर राजकुमार ने सारी बात बता दी । बंजारन को शक हुआ— 'हो न हो, यह परी रानी ही है ।' उसने चुपके से वह फूल उठाकर पिछवाड़े फेंक दिया ।

एक दिन राजकुमार ने पिछवाड़े देखा, वहां एक पौधा उग आया था । राजकुमार ने उस पौधे को पानी देना शुरू किया । देखते ही देखते वह पौधा पेड़ बन गया । उसमें बड़ी अच्छी खुशबू वाले फूल लगे । कुछ दिन बाद राजकुमार ने देखा, उस पेड़ के नीचे एक संदूक पड़ा था । उसने उसे खोला । राजकुमार आश्चर्यचकित था । वह परी रानी को पहचान नहीं पाया था । जब परी रानी ने उसे सारी बात बताई, तो वह बंजारन को मारने के लिए तैयार हो गया । परी रानी ने उसे माफ कर देने को कहा । सभी भाभियों ने यह तमाशा देखा ।

राजकुमार मुसकराया— "भाभी, यह तो मेरी परी रानी ही है न !" सुनकर सभी भाभियों ने दांतों तले अंगुली दबा ली । ●

नंदन के बाद तुम्हारा अगला रास्ता कादम्बिनी

प्रिय बच्चो,

कुछ समय पश्चात तुम कॉलेज में पढ़ने जाओगे। कॉलेज की जिंदगी तुम्हारी आज की जिंदगी से बिलकुल अलग होगी। नये-नये विषय होंगे और नये-नये मित्र बनेंगे। कॉलेज में तुम्हारा साहित्य से, संस्कृति से, कला से भी गहरा संबंध जुड़ेगा। शायद, तुम स्वयं भी कविता, कहानी अथवा निबंध लिखना चाहो। हमारी राय है कि नंदन तो तुम पढ़ते ही हो, अभी से **'कादम्बिनी'** पढ़ने की भी आदत डालो। 'नंदन' हिन्दुस्तान टाइम्स की एक लोकप्रिय बाल-पत्रिका है। 'नंदन' की तरह **'कादम्बिनी'** भी हिन्दुस्तान टाइम्स से ही प्रकाशित होती है। **'कादम्बिनी'** में तुम्हें नयी-नयी जानकारियां मिलेंगी और 'कादम्बिनी' पढ़कर तुम अपने देश के इतिहास को, साहित्य को, संस्कृति तथा कला को भलीभांति समझ सकोगे।

'कादम्बिनी' में कुछ ऐसे स्तंभ हैं, जो आज भी तुम्हारे लिए बेहद उपयोगी हैं।

यदि जीवन में कुछ बनना चाहते हो, तो अभी से 'कादम्बिनी' पढ़ने की भी आदत डालो।

सम्पादक : कादम्बिनी

पत्र मिला

□ सुंदर चित्रों के साथ छपी अच्छी कहानियां पढ़कर बहुत आनंद आता है। हर दिन पत्रिका के प्रति आकर्षण बढ़ता जाता है।

—मुन्ना, हसनपुर

□ पत्रिका मेरी पुरानी दोस्त है। इस अंक की सबसे अच्छी कहानियां 'लोक परलोक', 'तालाब में पगड़ी', 'फूल ने कहा' रहीं। राष्ट्रीय प्रतीक व गोवा की झांकी के लिए बधाई।

—जनकराज शर्मा, अनूपगढ़

□ नंदन के हर अंक को मैंने सहेजकर रखा है और घर में ही एक मिनी लाइब्रेरी बना रखी है।

—नरेंद्रकुमार नीखरा, शिवपुरी

□ ओलम्पिक पर खेल कथाएं पढ़कर मजा आ गया। 'रिमझिम पड़े फुहार गोवा में' झांकी देखकर मन प्रसन्न हो उठा। कहांनी 'बेटा बहादुर' दिल को छू गई। इसी प्रकार की कहानियां हर अंक में दिया करें।

—अभिषेक आनंद, फैजाबाद

□ नंदन ही एक ऐसी पत्रिका है जो अमीर-गरीब सभी बच्चों को पसंद है। अगस्त अंक की सभी कहानियां अच्छी थीं। 'तेनालीराम' ने कितनी चतुराई से खेत असली मालिक को दिलाएं। 'चीटू-नीटू' पढ़कर मन विभोर हो उठा।

—जावेद अहमद, रोहतास

□ मैं 'नंदन' का नियमित पाठक हूं। हमारे आचार्य देखकर मन खुशी से खिल उठा। 'अतिथि बना लो' और 'तुमने मेरे लिए' कहानियां अनमोल थीं। इसकी प्रतियोगिताएं तारों के समान जिन्हें कोई तोड़ना चाहे।

—मोहम्मदशाहिद, राउरकेला

□ इस अंक की शान हमारे भारत के राष्ट्रीय प्रतीक थे। 'चीटू-नीटू' ने तो पूरा समय चूहा पकड़ने में ही लगा दिया। 'चित्र पहेली' एवं 'कहानी लिखो' में विजेताओं का पूरा पता दिया करें।

—नवेंद्र यादव, दुर्ग

□ 'आए भगवान' 'सपनों का देश' दिल को छू गईं। भविष्य में भी आप ऐसी ही कहानियां छापें। मैंने अपने सभी सहपाठियों से 'नंदन' के लिए कह दिया है।

—संतोषकुमार साहू, खड़गपुर

□ अगस्त '९२ का अंक पढ़ा, तो मन खुशी से झूम उठा। जब भी हम 'नंदन' लेते हैं, तो सबसे लड़ाई करके मैं ही सबसे पहले पढ़ती हूं।

—रेखा चतुर्वेदी, कोटा

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : अर्पणकुमार, दुमका; दीपेशकुमार, बैरगनियां; योगांजलि, लोनी, गाजियाबाद।

नंदन ज्ञान-पहेली : २८४

परिणाम

१भा	टी		२भा	त		३तो
	४क	भी				प
५पा			६मा		७ता	
त्र			वा		रा	
	८खो	टा		९शे		१०भा
११ऊ						ना
टी		१२क	थ	क	लि	

नं.ज्ञा.प.२८४

इस बार कमाल कर दिखाया पाठकों ने। ढेरों सर्वशुद्ध हल आ गए। पुरस्कार देने के लिए लाटरी का सहारा लेना पड़ा। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी गई–

सर्वशुद्ध : पचीस : प्रत्येक को चालीस रुपए

१. संदीप गोयल, दिल्ली; २. पंकज कुमार, पूर्णिया; ३. चंद्रप्रकाश आहूजा, रुड़की; ४. ऋषि प्रजापति, रतलाम; ५. सोनाली गोयल, अलीगढ़; ६. वीरेन्द्र सिंह, दिल्ली; ७. संजीव वर्मा, फर्रुखाबाद; ८. श्रुति सिन्हा, देवघर; ९. नैना भटनागर, फैजाबाद; १०. एकता जसूजा, बिलासपुर; ११. अर्चना मल्ल, गोरखपुर; १२. नमिता शेखावत, जयपुर; १३. संदीप वार्ष्णेय, बदायूं; १४. अभिषेक मिश्र, बिलासपुर; १५. तुषार गर्ग, मेरठ; १६. आदित्य बंसल, महम (रोहतक); १७. पवनकुमार शर्मा, सासनी (अलीगढ़); १८. नीरजकुमार, गया; १९. हेमांग कोठारी, कानपुर; २०. आनंद अग्रवाल, काठमांडू (ने.); २१. अरुण गोयल, बरेली; २२. आलोककुमार, सुपौल (बि.); २३. रोहित वाजपेयी, लखनऊ; २४. राजेश शर्मा, नारनौल; २५. पवन कालपांडे, जबलपुर।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं दीवार पर टंगी तस्वीर का फ्रेम काला है।
२. टोकरी में पड़ी बोतल पर लेबल नहीं है।
३. पैर का निशान दिखाती महिला की कमीज का गला चौकोर है।
४. मेज पर रखे गोल गिलास में शरबत भरा है।
५. दाएं कोने में बैठे व्यक्ति की कलम ऊंची कटी है।
६. तौलिया पकड़े खड़े वेटर के गले की टाई का रंग सफेद हो गया है।
७. उसके कोट की बाईं बांह ज्यादा लम्बी है।
८. उसके पीछे वाले कमरे में पर्दे की काली चौखट का आकार बदल गया है।
९. कमरे में लटके झाड़-फानूस में एक कड़ी अधिक है।
१०. सामने दीवार पर लगे लैम्प शेड अलग-अलग डिजाइन के हो गए हैं।

शीर्षक बताइए : परिणाम

ढेर सारे शीर्षक मिले। अगस्त' ९२ में छपे रंगीन चित्र के लिए ये शीर्षक चुने गए।

यह मेरा भाई मैं इसकी बहना, भाई के हाथ का राखी है गहना।
—लीना पाटनी, बी-३२, जी-२, दिलशाद गार्डन, दिल्ली।
भाई हंसे बहना मुसकाए, हंसता मुखड़ा सबको भाए।
—स्वीटी पाठक, द्वारा सत्येंद्रनाथ पाठक, विक्टोरिया कोलियरी, पो. लालबाजार (कुल्टी), जि. वर्धमान (प. बं.)।
मेरा प्यारा नटखट भाई, करता मुझसे हरदम लड़ाई।
—ट्विंकल, द्वारा यू. मुखर्जी, ३६-७८-१, डिफेंस कालोनी, सैनिकपुरी, सिकंद्राबाद।
भाई-बहन का प्रेम अटूट, डाल सके ना कोई फूट।
—सुनील कुमार जलुथरिया, ११९१, संगम भवन, त्रिवेणी मार्ग, रामनगर, जयपुर।
इनके शीर्षक भी सराहे गए :
—अनुजा अरुण, पटना; अतुल मिश्रा, इटारसी; तेजबंधु पाठक, भीलवाड़ा (राज.); संदीप सिंह, पठानकोट।

Scanned with CamScanner

पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ———————————— आयु ————

पूरा पता ————————————————

————————————————

रुचि ————————————————

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. सागर शर्मा, १२ वर्ष, ९३१२, रावजी बाजार, जूनी, इंदौर; २. रीना मुंधड़ा, १२, २९ ए, रतन सरकार गार्डन स्ट्रीट, कलकत्ता; ३. प्रज्ञा त्रिपाठी, १०, दुकान नं. २/२३, कृष्णनगर, जी.टी. रोड, कानपुर; ४. वीरेंद्रकुमार, १६, डा. मुद्रिका सिंह, ग्रा+पो. राजपुर, रोहतास (बि.); ५. रामकिंकर पांडे, १२, ११७, डी.-मिर्जापुर, इलाहाबाद; ६. बबलू शर्मा, १५, बिरसा शर्मा, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर, ७. इंतखाब अहमद, १३, मो. मोबीन, ग्रा. नवीनगर, पो. बेल्हारी, पटना; ८. रीतेश मिश्रा, १६, २३, नगर निगम, समता कालोनी, रायपुर; ९. अमितमोहन भटनागर, १५, २२ शिवद्वारा, अमरोहा, मुरादाबाद; १०. शिशिर मालवीय, १२, ४९०, ब्यौहार बाग, जबलपुर; ११. चंद्रमोहन जुयाल, १५, एफ ५६१, दक्षिणपुरी, नई दिल्ली; १२. राकेशकुमार, ११, लालजी शर्मा, पो. कतरासगढ़, (बि.); १३. प्रदीपकुमार, १६, ९/३ भार्गव स्ट्रीट, अलीगढ़; १४. रमन आहूजा, १६, आहूजा मेडिकल स्टोर, गांधी मार्ग, सासाराम; १५. राहुल रघुवंशी, १५, जी/४ कृषि कालोनी, ग्वालियर, १६. सुनीलकुमार बत्रा, १४, हरवंशलाल छगनलाल बत्रा, किराना मर्चेंट, बड़ौदा मेव, अलवर; १७. केसरीनंदन हिसारिया, शिवप्रसाद रोशनलाल, पुरानी एक्सचेंज रोड, सीतामढ़ी; १८. कृष्ण गोपाल, १५, ४५०, पटेलनगर, संजयनगर, नई मंडी, मुजफ्फरनगर; १९. अरशद खां, १२, कपूर डीजल सर्विस, स्टेशन रोड, पुरनपुर, पीलीभीत; २०. अजीतकुमार चौधरी, १०, सरयू प्रसाद, प्रतापगंज, सुपौल (बि.); २१. विकासचंद्र श्रीवास्तव, १६, ७६६ अ, वशीर गंज, बहराइच; २२. मो. मेंहदी हसन, ९, इबरार हसन, गंज नं. २, बेतिया, प. चम्पारण; २३. सरोज कुमावत, १५, ए-१७, सैन कालोनी, बनी पार्क, जयपुर; २४. मनोजकुमार शर्मा, १६, रामदेव शर्मा मिस्त्री टोला, मधुबनी, पूर्णिया (बि.); २५. नवनीतकुमार वर्मा, १६, ५० इंदिरा कालोनी, मुजफ्फरनगर ।

खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. नेहा गुप्ता, १४ वर्ष, १४२० नेपियर टाउन, मदन महल, जबलपुर; २. शशिप्रकाश, १५, १/सी-१२२२, बोकारो स्टील, धनबाद; ३. नदीम शम्सी, १२, सईद जनरल स्टोर, लक्खी गेट, सहारनपुर; ४. प्रदीप जोशी, १४, ए.के. दुबे, नानेवड़ी घाट (म.प्र.); ५. आनंद सुलतानिया, १३, राणी सती वस्त्रालय, एम.एच. स्ट्रीट, आसनसोल; ६. रमन गर्ग, १४, ४३बी/१७१५, चंडीगढ़; ७. कासिम अख्तर खां, १०, ११२, पुरानी मुंसफी, औरंगाबाद; ८. विष्णुदयाल शर्मा, १५, दाऊदयाल शर्मा, पृथवारी, सासनी गेट, अलीगढ़; ९. अनूप शर्मा, १३, वी. कुमार, कोशी कालोनी, रूपौली, पूर्णिया; १०. दीपक गुप्ता, १६, सुभाषचंद्र गुप्ता, बालकराम स्ट्रीट, नजीबाबाद; ११. महेशकुमार, १६, बी-३२७-२८, अवंतिका, रोहिणी-१, नई दिल्ली; १२. राजीवकुमार, १५, दुर्गा इंटर प्राइजेज, टावर चौक, दरभंगा; १३. राजेश गोयल, १५, ओम शिव जनरल स्टोर, नांगल गेट मंडी, अटेली (हरि.); १४. विनोदकुमार गुप्ता, १६, विक्रमशिला नगर, एल.सी.टी. घाट, कहलगांव, भागलपुर; १५. शैलेंद्र सोनी, १३, २६, स्वर्णकार कालोनी, उमा हर सदन, विदिशा; १६. मनीषा श्रीवास्तव, १४, ६४/२११, गड़रिया मोहल्ला, कानपुर; १७. अरविंदराज, १५, जानकी देवी, डब्ल्यू डी. नं. १, मेला रोड, सुपौल; १८. नीतू प्रिया, १६, आर.सी. गुप्ता, बेनीगंज, हाथरस, अलीगढ़; १९. प्रकाशकुमार माहुले, १५, एच/४ तवा कालोनी, सविनी मालवा, होशंगाबाद; २०. लवली शर्मा, १६, सेठी साइकिल स्टोर, पुरानी अनाज मंडी, साढौरा, यमुनानगर (हरि.); २१. अमृता, १०, २१ ए-बी. स्टेडियम रोड, जमालपुर, मुंगेर; १२. अनुज, १२, ५३७ सिविल लाइन, लाल डिग्गी, सुल्तानपुर (उ.प्र.); २३. अभिषेक शर्मा, १०, डी-२८, मंदिर साइड क्वार्टर्स, बिरलापुर, २४ परगना, पं. बंगाल।

डाक टिकट संग्रह, भ्रमण तथा पहेली में रुचि :

१. अमित गोयल, १४, प्रेमचंद्र गोयल, ८४४, कृष्णगंज, पिलखुवा, गाजियाबाद; २. सुनीलकुमार, गौड़, १६, १/१०४८६, डी. मोहन पार्क, शिव मंदिर नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२; ३. विवेक साहनी, १२, ९७८, डा. लक्ष्मी नारायण मार्ग, कुंवरपुर, बरेली; ४. गगन गुप्ता, १२, ६२, रायगंज, सीपरी बाजार, झांसी; ५. विपुल मेहरा, १४, ५७०-ए तलवंडी, कोटा (राज.); ५. प्रेमकुमार, १२, हरिवंश राय, ग्रा.+पो. कल्याणपुर बस्ती, समस्तीपुर; ६. अरुणकुमार, १५, ३१८/२, आदमपुर, दोआवा, जालंधर; ७. संजयकुमार, १६, डा. रतनलाल अग्रवाल, पो. रामगढ़ कैंट, हजारीबाग; ८. अमित वर्मा, १४, सै. २३, म. नं. ३५७६/२, चंडीगढ़; ९. अमित खेतान, १३, खेतान सदन, कतरासगढ़, धनबाद ।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित ।

कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

Scanned with CamScanner

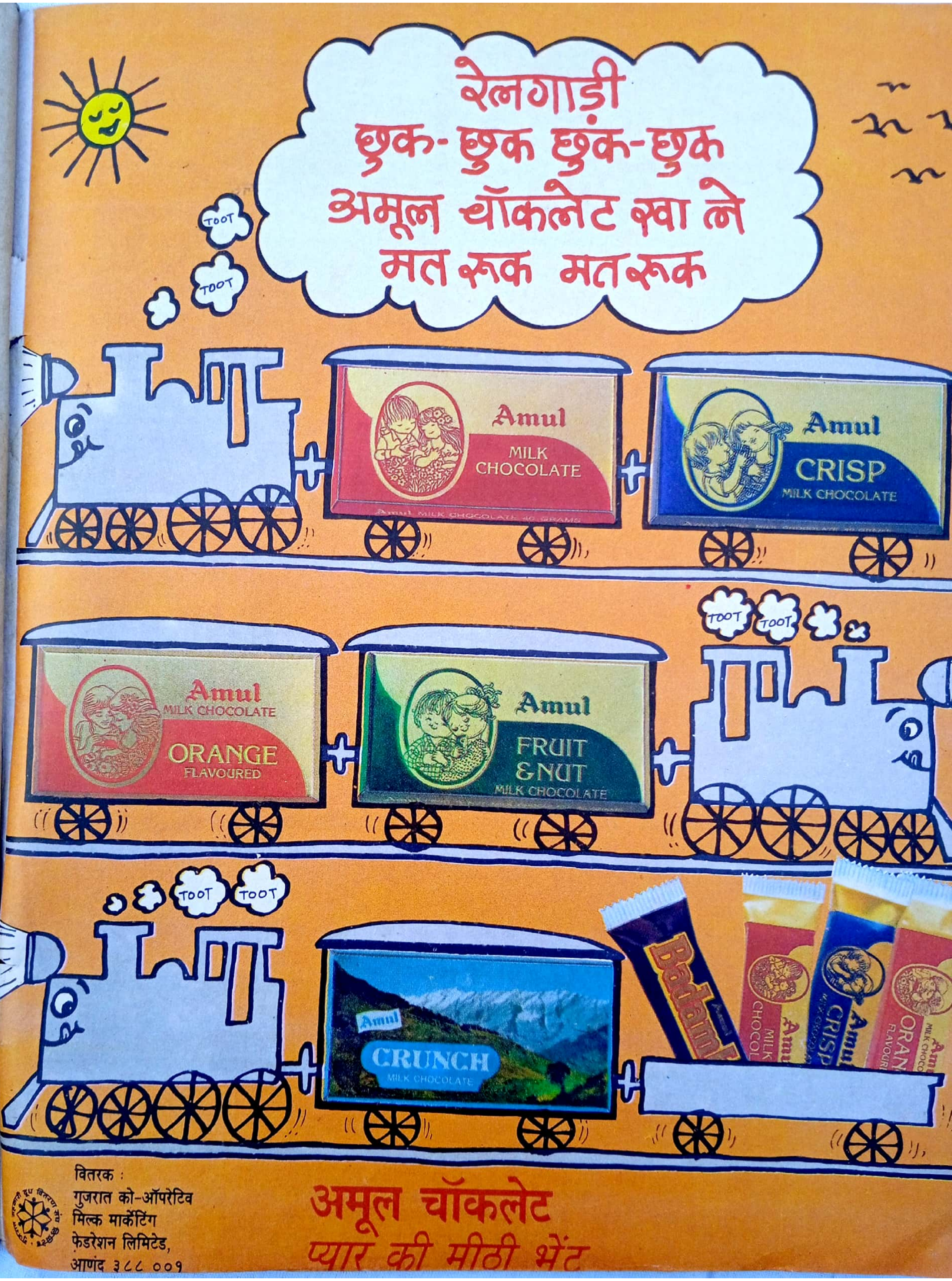

Scanned with CamScanner

नंदन
रजि. न. डी एल-२७००५/९२ आर. एन. आई नं. १०५२५/६४